एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ।।ओ३म्।। डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २५ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १३ ● अंक : ५ ● २५ मार्च २०२४, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ४०

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

अद्भुत, विलक्षण, गौरवशाली, अविस्मरणीय कुछ क्षण

जिस मातृ शक्ति को वेद मन्त्र श्रवण करने से वंचित कर दिया गया था, देव दयानन्द की कृपा से महिलाओं को वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ करने-करवाने का अधिकार मिला। 'ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन' टंकारा की यज्ञशाला में यज्ञ में आहूतियाँ प्रदान करते भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल।

महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी के यात्रा दल को टंकारा प्रस्थान करने से पूर्व आश्रम पर मुख्य यजमान के रूप में देवयज्ञ में आहूतियाँ प्रदान करते भाजपा के बड़वानी जिलाध्यक्ष कमलनयनजी इंगले, वरिष्ठ समाजसेवी नारायणराव जी दासौंधी व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बड़वानी जिला प्रचारक आशीष जी लश्कन एवं गणमान्य महानुभाव।

वैदिक संसार मासिक पत्रिका का महर्षि दयानन्द सरस्वती के २००वें जन्म दिवस पर प्रकाशित 'विशेषांक' का विमोचन ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन टंकारा के मुख्य मंच से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र जी आर्य एवं मंचस्थ गणमान्य महानुभावों के करकमलों द्वारा किया गया।

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को उनके द्वारा की गई विशिष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए जांगिड ब्राह्मण समाज गाँधीधाम, गुजरात द्वारा विश्वकर्मा जयन्ती एवं समाज के ४९वें वार्षिकोत्सव अवसर पर जांगिड गौरव पुरस्कार से सम्मानित करते वरिष्ठ समाज जन।

वैदिक संसार विशेषांक की प्रति भेंट की गई

परोपकारिणी सभा अजमेर के यशस्वी प्रधान सत्यानन्द जी आर्य को उनके दिल्ली निवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई

स्वामी ब्रह्मानन्द जी भदौला गाजियाबाद को व आर्य समाज मोदी नगर के पूर्व मन्त्री समधी श्यामलाल जी शर्मा को विशेषांक प्रति भेंट की गई

क्रान्तिकारी ओजस्वी वक्ता, इतिहासविद् डॉ. राकेश कुमार आर्य सम्पादक उगता भारत को उनके नोएडा निवास पर विशेषांक प्रति भेंट

दर्शनाचार्या विमलेश जी बंसल को उनके सन्त नगर दिल्ली स्थित निवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई

हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. विरोत्तम जी को उनके मेरठ निवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई

आर्य समाज रेवाड़ी, हरियाणा के प्रधान देशराज जी आर्य को उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई

भाई घेवर जी आर्य, पाली को विशेषांक प्रति भेंट की गई साथ में हैं गुरुदत्त जी, मोहन जी, खीमचन्द जी व अन्य

ब्याईजी ब्रह्मदत्त जी शर्मा, जयपुर विशेषांक प्रति विक्रय सेवा प्रदान करते हुए

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्राथमिक वर्ग में बड़वानी जिला प्रचारक आशीष जी लश्कन को विशेषांक प्रति भेंट की गई

मानसिंह जी धीमान, गाजियाबाद को उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट की गई

वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के स्वामी मोहनलाल जी को विशेषांक प्रति भेंट की गई

सुपौत्र प्रणव अपनी बुआ दादी श्रीमती प्रमिला शर्मा को विशेषांक प्रति भेंट करते हुए

आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. एस.के. शर्मा उज्जैन विशेषांक प्रति देखकर अभिभूत हुए

महर्षि दयानन्द के जुझारू सिपाही डॉ. ललित नागर उज्जैन विशेषांक प्रति पाकर हर्षित हुए

योगाचार्य अशोक दिल्लीवाल इन्दौर अपनी धर्मपत्नी आभा जी के साथ विशेषांक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणिमात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १३, अंक : ५

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मार्च, २०२४

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  ओमप्रकाश आर्य
  आर्य समाज रावतभाटा (राज.)
  चलभाष : ९४६२३१३७९७
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड, बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक् से देय होगा।)

विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी)	११,०००/–

खाता धारक का नाम : **वैदिक संसार**
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA0000525**
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भूमण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : आर्यों का महाकुम्भ– ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन	ओमप्रकाश आर्य	०५
आर्यो! ध्यान करो तुम	पं. नन्दलाल निर्भय	०६
महान् विभूति : वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और प्राण प्रतिष्ठा	पं. नन्दलाल निर्भय	०७
: अमर बलिदानी–उल्लासकर दत्त	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
भर्तृहरि के अनुसार किसका जन्म सफल माना जावे?	शिवनारायण उपाध्याय	११
वैदिक उपनिषद्	न्यायमूर्ति इन्द्रसिंह	१२
संस्कारों के अभाव में भारतीय संस्कृति का उपहास	डॉ. गंगाशरण आर्य	१५
समग्र श्रेष्ठता का द्योतक– 'पण्डित'	गजेन्द्रसिंह आर्य	१७
प्रसन्नता हो मुख पर	आर्य पी.एस. यादव	१८
महिला परिशिष्ट : आओ! महिला दिवस मनाएँ	श्रीमती पूजा शर्मा	२३
तू जिसे ढूँढे, वह तेरे घर में है	देवकुमार प्रसाद आर्य	२४
वैदिक पथ	रमेशचन्द्र भाट	२५
ऋषि दयानन्द जीवन चरित	देशराज आर्य	२५
मेरा आर्य नेताओं से एक विनम्र निवेदन	खुशहालचन्द्र आर्य	२६
विलक्षण व्यक्तित्व के धनी स्वामी दयानन्द सरस्वती	आचार्य रामगोपाल सैनी	२६
स्वास्थ्य परिशिष्ट : दालें हैं पोषक तत्वों का कोषागार	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२७
मॉरीशस के 'बो बासें आर्य समाज' का इतिहास	रणजीत पांचाले	२९
प्राकृतिक खेती : राष्ट्रीय कार्यशाला सम्पन्न	डॉ. योगेन्द्र कौशिक	३१
गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव... मनाया गया	प्रेमप्रकाश शास्त्री	३२
महर्षि दयानन्द जी के अनमोल विचार	सत्यकेतु आर्य	३३
रावतभाटा से इन्दौर–बड़वानी मेरी वैदिक यात्रा	ओमप्रकाश आर्य	३३
बाल परिशिष्ट : तुम भारत हो कहलाओ	पुष्पा शर्मा	३४
वैदिक संसार द्वारा संचालित... अविस्मरणीय ऐतिहासिक टंकारा यात्रा	सुखदेव शर्मा	३५
(ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन में वैदिक संसार विशेषांक का किया गया विमोचन)		३५
भगवान् श्री विश्वकर्मा जयन्ती महोत्सव एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न	हरिराम शर्मा	३७
आर्य समाज रावतभाटा द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित	ओमप्रकाश आर्य	३८
वैदिक विद्वान् श्री नेतराम शास्त्री की... पुण्यतिथि पर आयोजन सम्पन्न	गोपाल आर्य	३८

अमृतमयी वेदवाणी

साम–अथर्व वेद शतक पुस्तक से

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

(एम.ए. दर्शनाचार्य)

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

त्वांशुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप
ब्रुवे सहस्कृत।
स नो रास्व सुवीर्यम्।। (४७)

–सामवेद उत्तरार्चिक.४.२.१३.३

शब्दार्थ : शुष्मिन् = हे बलवान् प्रभो! **पुरुहूत** = बहुतों से पुकारे गए **सहस्कृत** = बल देने वाले **वाजयन्तं त्वाम्** = बल देते हुए आपकी **अपब्रुवे** = मैं स्तुति करता हूँ **स नः** = वह आप हमारे लिए **सुवीर्यम् रास्व** = उत्तम बल का दान करो।

विनय : हे अनन्त बलवान् सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! आप बहुतों के द्वारा पुकारे जाने वाले पुरूहूत परमात्मा हैं तथा सब प्रकार के बल को प्रदान करने वाले हैं। हे प्रभु! आपसे दिव्य शक्ति, दिव्य बल की प्राप्ति के लिए मैं आपका भक्त आपकी स्तुति करता हूँ, आपसे प्रार्थना करता हूँ। हे परम पराक्रमी, अतुलित बलशाली परमात्मा! आप मुझे ऐसा दिव्य बल प्रदान करिये कि मैं अपने आन्तरिक व बाह्य दोनों प्रकार के शत्रुओं का नाश कर सकूँ तथा स्वयं बलवान्, वीर्यवान्, ओजस्वी, तेजस्वी, पराक्रमी, वीर, साहसी बनते हुए अन्य मनुष्यों को भी आप परमात्मा के ऐसे महान् गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित कर सकूँ।

हे परम पवित्र परमात्मा! आपसे ही बल शक्ति को प्राप्त करके मैं अपने काम, क्रोध, राग, द्वेष आदि विकारों को नष्ट कर सकता हूँ। अत: मैं आपका उपासक आपके सान्निध्य को प्राप्त करना चाहता हूँ। हे प्रभुदेव! मुझे आपके दिव्य सान्निध्य को प्रदान करिये व आपके दिव्य आनन्द का पान कराइये एवं मेरे समस्त दु:खों का अवसान कराइये। हे प्रभु! आपके शरण में आये बिना कोई भी कभी भी पूर्ण सुखी–सन्तुष्ट, प्रसन्न नहीं हो सकता है। अत: मैं आपके शरण में आया हुआ हूँ, मुझ पर कृपा करिये, दया करिये।

पद्यार्थ

हे महान्, बलवान्, शक्तिप्रद,
निज शक्ति से हमको भर दो।
करें स्तुति भक्ति तेरी,
ज्ञान शक्ति दे हमको वर लो।
आये हैं हम शरण आपकी,
आत्मिक बल से पुष्ट कीजिये।
विमल वार हो काम, क्रोध पर,
आनन्द दे प्रभु हमको वरिये।।

दर्शनाचार्या विमलेश बंसल
(विमल वैदेही), दिल्ली
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त अप्रैल २०२४ के कुछ महत्वपूर्ण पर्व-दिवस

१. डॉ. केशव बलिराम हेड़गेवार जयन्ती, वित्तीय वर्ष प्रारम्भ, ओडिशा राज्य स्थापना दिवस। २. अन्तर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक दिवस, विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस। ३. छत्रपति शिवाजी महाराज पुण्यतिथि, **स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी पुण्यतिथि।** ४. झलकारी बाई बलिदान दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय खदान जागरूकता दिवस। ५. बाबू जगजीवनराम जयन्ती (समता दिवस), राष्ट्रीय समुद्री दिवस। ६. **महाशय राजपाल बलिदान दिवस,** विश्व टेबल टेनिस दिवस, दण्डी सत्याग्रह दिवस, विकास और शान्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय खेल दिवस। ७. विश्व स्वास्थ्य दिवस। ८. **पं. रामचन्द्र देहलवी जयन्ती,** मंगल पाण्डे व बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय पुण्यतिथि, विश्व बंजारा दिवस। ९. चैत्र प्रतिपदा (विक्रम सम्वत् २०८१ नववर्ष प्रारम्भ), सी.आर.पी.एफ. वीरता दिवस १०. डॉ. हेनीमेन जयन्ती, विश्व होम्योपैथी दिवस, मोरारजी देसाई पुण्यतिथि, भाई–बहन दिवस (अमेरिका व कनाडा)। ११. महात्मा ज्योतिबा फूले जयन्ती, सुरक्षित मातृत्व राष्ट्रीय दिवस, पालतू पशु राष्ट्रीय दिवस। १२. अन्तरिक्ष मानव उड़ान अन्तर्राष्ट्रीय दिवस, पारकिंसन्स विश्व दिवस। १३. गुहराज निषाद जयन्ती, सियाचिन दिवस, जलियाँवाला बाग नृशंस नरसंहार दिवस। १४. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती, महर्षि रमण पुण्यतिथि, भुजिया दिवस, अग्निशमन दिवस। १५. विश्व कला दिवस। १६. हिमाचल प्रदेश स्थापना दिवस, विश्व आवाज दिवस। १७. श्रीरामचरित मानस जयन्ती, रामनवमी, विश्व हीमोफीलिया दिवस। १८. रामचन्द्र पांडुरंग (तात्या टोपे) बलिदान दिवस, विश्व विरासत दिवस। १९. भारत द्वारा उपग्रह क्षेत्र में प्रवेश दिवस, विश्व लीवर दिवस। २१. सिविल सेवा राष्ट्रीय दिवस। २२. विश्व पृथ्वी दिवस। २३. विश्व पुस्तक कॉपीराइट दिवस। २४. राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस। २५. विश्व मलेरिया दिवस, पेंगुईन विश्व दिवस। २६. बौद्धिक सम्पदा विश्व दिवस। २७. पशु चिकित्सा वैश्विक दिवस (अन्तिम शनिवार), आई.सी.टी. दिवस (प्रौद्योगिकी में महिलाओं को प्रोत्साहित करने का दिवस)। २८. कार्यस्थल पर सुरक्षा व स्वास्थ्य के लिए विश्व दिवस। २९. अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस। ३०. आयुष्मान दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द–प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानवजाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय आर्यों का महाकुम्भ : आर्य महासम्मेलन

ओमप्रकाश आर्य
आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

आर्य महासम्मेलन बड़े प्रेरणा के स्रोत होते हैं। ये सम्मेलन आर्यों के महाकुम्भ हैं। संवत् १९२३ तद्नुसार सन् १८६६ में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में **'पाखण्ड खण्डिनी पताका'** फहरायी थी। उन्होंने पौराणिकों के उस गढ़ में मूर्ति पूजा, श्राद्ध, अवतारवाद, पुराणों, उपपुराणों, पर्वस्नान की महिमा आदि का खण्डन किया। इसी कारण कितने ही पण्डित उन्हें नास्तिक कहने लगे। सर्वत्र धर्म के नाम पर पाखण्ड फैला था। पोपलीला के सघन वन में वैदिक धर्म लुप्त था। महर्षि ने वहाँ सत्य का डंका बजाया। आज भी पौराणिकों के कुम्भ में यही सब देखने को मिलता है। असत्य का खण्डन करने के कारण पौराणिक पण्डितों ने उन्हें नास्तिक की संज्ञा दी।

आइए, हम आर्यों के कुम्भ पर विचार करते हैं। आर्यों के कुम्भ में हमें उच्च कोटि के विद्वानों के दर्शन होते हैं। उनके वैदिक प्रवचन सुनने को मिलते हैं। वैदिक आर्य संन्यासियों के दर्शन होते हैं, जिनका ज्ञानामृत हमारे जीवन को बदल देता है, उपदेशकों, भजनोपदेशकों के दिशाबोधक उपदेश सुनने को मिलते हैं जो अन्त:करण को धो देते हैं। एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं। आर्य नेताओं के क्रान्तिकारी विचारों को सुनते हैं जिससे हम **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की दिशा की ओर पग बढ़ाते हैं। इन सबके अतिरिक्त एक आर्य परिवार का दृश्य हमारे सामने होता है। हम आर्य संघ के सूत्र से ग्रथित अनुभव करते हैं। अच्छी-अच्छी प्रतिभाएँ, आर्यवीर, आर्य वीरांगना, सामूहिक यज्ञ की मनोरम भावना, नई शक्ति, नई ऊर्जा, नया उत्साह, नया चिन्तन आदि को हृदयंगम करते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम अपने जीवन को सही और सत्यमार्ग पर सार्थक कर रहे हैं। वास्तव में आर्य महासम्मेलन आर्यों के महाकुम्भ हैं, जहाँ ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, ठगी आदि का नामोनिशान नहीं है। यहाँ पहुँचकर न जाने कितने लोगों का हृदय परिवर्तित हो जाता है। जीवन की दिशा बदल जाती है। सबसे बड़ी बात यह है कि हमारी आर्य संगठन शक्ति का बोध होता है। यह भी ज्ञात होता है कि हम आसुरी शक्तियों का मुकाबला कर सकते हैं। जहाँ श्रेष्ठों का संगठन होता है वहाँ असुरों का अत्याचार सफल नहीं हो पाता। हमें आर्यत्व की एक झलक मिल जाती है।

आर्य महासम्मेलन आर्यों के तीर्थ हैं। ये तीर्थ मानव के तारक हैं, डुबोने वाले नहीं। यहाँ किसी प्रकार का ढोंग, पाखण्ड नहीं होता अपितु ईश्वर की आज्ञा का पालन, वेदज्ञान के प्रचार की महती भूमिका होती है। संगठनात्मक सद्प्रेरणा है। उज्ज्वल भविष्य की योजना है। अभी टंकारा में महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती के अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन **'ज्ञान ज्योति पर्व'** के रूप में सम्पन्न हुआ जिसमें भारी संख्या में देश-विदेश के आर्यों ने भाग लिया। यहाँ पहुँचकर ऐसा लगा जैसे कि हम किसी अपने बड़े परिवार में सम्मिलित हुए हैं। विशाल यज्ञशाला में दिनभर यज्ञ चलता रहा जिसमें आर्यों ने आहुति प्रदान कर अपने को धन्य अनुभव किया। पुस्तकों की ज्ञानगंगा का अवतरण सा दिखा। आर्यों ने ज्ञानप्रसाद के रूप में वैदिक पुस्तकें अपने घर ले जाने के लिए क्रय की। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, युवा सबकी सहभागिता का अद्भुत मिलन था। यह ज्ञान का कुम्भ नहीं तो और क्या है? हर आर्य ने अपने आत्मा के लिए कुछ न कुछ प्राप्त किया। ऋषि जन्मस्थली का दर्शन किया। विद्वानों की पावन वाणी का श्रवण कर मन को प्रफुल्लित किया।

अभी ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। यह पर्व पर आर्यों को नवीन संकल्पना से जोड़ता है क्योंकि आज सारा जगत् अवैदिक विचारधारा में डूबता दिखाई दे रहा है। सर्वत्र पुराण पंथ का बोलबाला है। इस वैज्ञानिक युग में भी इतना पाखण्ड है जिसे देखकर मनुष्य की बुद्धि पर प्रश्नचिह्न खड़ा होता है। अज्ञानता को कितना बढ़ावा मिल रहा है। मनुष्य जड़ वस्तु में अपने हाथों से प्राण डाल रहा है। स्वयं सृष्टि रचयिता को बनाकर उसे भगवान् के रूप में देख रहा है। यह क्या है? अवैदिक विचारधारा ही तो है। महर्षि दयानन्द ने अपने शैशव काल में सिर्फ चूहे को प्रतिमा पर चढ़ते हुए ही तो देखा। उसने जिज्ञासा प्रकट की कि यह कैसा शिव है? घटना तो छोटी है पर बोधक है। उसके लिए जो सत्यासत्य का विवेचक है। बस मनुष्य यही विवेचना नहीं करता कि वह जो कर रहा है वह ज्ञानयुक्त है अथवा नहीं। ईश्वर के अनुकूल है या नहीं? सृष्टि नियामक का उसमें गुण है या नहीं?

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में महर्षिजी लिखते हैं- **''जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से किया करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।''** इन पंक्तियों से स्पष्ट हो रहा है कि आर्यसमाज जैसी संस्था अन्य कोई नहीं है क्योंकि यह ईश्वरीय आज्ञा का पालन करता है और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के विचारों से ओतप्रोत है। यह **'मनुर्भव'** की भावना का प्रचार करता है। यह मानव को मानव बनाने का हर उद्यम

करता है। परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद के आलोक में अखिल विश्व को देखना चाहता है। इतने बड़े उद्देश्य को लेकर चलना ही आर्य महासम्मेलनों के आयोजन का हेतु है। जब पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाने का नारा है तब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन आवश्यकीय हो जाता है। यजुर्वेद कहता है-

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै
त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति।
कर्मणे वां वेषाय वाम्।।यजु. १/६

अर्थात् ''कौन तुझको अच्छी-अच्छी क्रियाओं के सेवन करने के लिए आज्ञा देता है, सो जगदीश्वर तुमको विद्या आदि शुभ गुणों को प्रकट करने के लिए वा विद्यार्थी होने को आज्ञा देता है। वह किस-किस प्रयोजन के लिए मुझ और तुझको युक्त करता है। पूर्वोक्त सत्यव्रत के आचरण रूप यज्ञ के लिए धर्म के प्रचार करने में उद्योगी को आज्ञा देता है, वही ईश्वर उक्त श्रेष्ठ कर्म करने के लिए कर्म करने और कराने वालों को नियुक्त करता है। शुभगुण और विद्याओं में व्याप्ति के लिए विद्या पढ़ने और पढ़ाने वाले तुम लोगों को उपदेश करता है।''

शुभगुणों को धारण करना और करवाना, विद्या का पढ़ना और पढ़वाना, सत्य का आचरण करना और करवाना- इसी का तो प्रयत्न करना है। बड़े-बड़े आर्य सम्मेलन इसीलिए आयोजित किए जाते हैं। आर्यों के इस कुम्भ में हर आर्य एक उत्तरदायित्व वहन करने का अन्त: में व्रत धारण करता है। **पौराणिकों के कुम्भ में जल में स्नान किया, माथा टेका, प्रसाद लिया, बात खत्म। आर्यों का कुम्भ ऐसा नहीं होता है। यहाँ तो वेद ज्ञान की धारा प्रवाहित होती है। आत्मा का भोजन मिलता है। जीवन सुधरता है। नई प्रेरणा प्राप्त होती है। जीवन की सत्यता का बोध होता है। अतएव आर्य महासम्मेलनों का अपना विशेष महत्व है। जब भी ऐसे आयोजन हों, उनमें अवश्य जाना चाहिए। ये सम्मेलन आर्यों के वास्तविक तीर्थ हैं। वे तारण का कार्य करते हैं।** ■

आर्यों! ध्यान करो तुम

संकट में अब फँसा हुआ है, भारत देश महान्, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।
किसी समय था इस भारत का, चक्रवर्ती राज सुनो।
यज्ञ-हवन घर-घर होते थे, था तब सुखी समाज सुनो।।
योगी-ज्ञानी घूम-घूमकर देते थे व्याख्यान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।१।।
अश्वपति, हरिश्चन्द्र, शिवि से, राजा थे गुणवान् यहाँ।
राम, भरत, लक्ष्मण जैसे थे, योद्धा वीर महान् यहाँ।।
हनुमत जैसे ब्रह्मचारी थे, विद्या-बल की खान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।२।।
श्री कृष्ण जैसे योगी थे, अर्जुन से थे वीर सुनो।
चन्द्रगुप्त, विक्रम जैसे थे, देशभक्त रणधीर सुनो।।
सारी दुनिया थर्राती थी, भारी थे बलवान्,आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।३।।
पाँच हजार वर्ष पहले, अज्ञान बढ़ा था भारत में।
उच्च शिखर पर कुकर्मियों का टोल चढ़ा था भारत में।।
आपस में लड़-लड़कर लाखों, वीर मरे नादान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।४।।
फूट-अविद्या के कारण था भारत देश गुलाम हुआ।
यवन और ईसाई आए, भारी कत्ले आम हुआ।।
जुल्म किए दुष्टों ने भारी, कैसे करूँ बखान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।५।।
ईश्वर कृपा से स्वामी, दयानन्दजी आए, भारत में।
योगी ने, कृपा कर, नर-नारी समझाए, भारत में।।
मरी हुई जनता में, ऋषिवर ने, डाली थी जान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।६।।
आर्य वीरों के बलिदानों से आई थी आजादी।
नेता मतलबखोर देश की, करते हैं अब बर्बादी।।
पुण्य-पाप का भले-बुरे का, जिन्हें नहीं है ध्यान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।७।।
यहाँ विपक्षी नेता अब सब, वर्गवाद को बढ़ा रहे।
सत्ता वाले, ढोंगी लोगों को सिर पर चढ़ा रहे।।
कुर्सी के भूखे हैं ये सब, नहीं देश का ध्यान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।८।।
अगर रहा यह हाल आर्यो!, यह भारत मिट जाएगा।
याद रखो, फिर राज विधर्मी, इस भारत में आएगा।।
कर्मक्षेत्र में बढ़ो आर्यो!, अपना सीना तान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।९।।
लेखराम-श्रद्धानन्द बनकर, जनता को समझाओ तुम।
पुण्य-पाप का, धर्म-कर्म का सार, ज्ञान कराओ तुम।।
'नन्दलाल' निर्भय भारत पर, हो जाओ बलिदान, आर्यों! ध्यान करो तुम।
ऊँची कर दो, दुनिया भर में, भारत की तुम शान, आर्यों! ध्यान करो तुम।।१०।।

पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

रामनवमी विशेष

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और प्राण प्रतिष्ठा

पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

श्रीराम देव पुरुष व
ईश्वरभक्त निराले थे।
मानवता के महापुंज थे,
ईशभक्त मत वाले थे।।
मात-पिता ऋषियों के सेवक,
वे वैदिक पथगामी थे।
मित्रों- भ्राताओं के प्यारे,
प्रजावत्सल नामी थे।।
त्यागी-वीर सदाचारी थे,
महाबली तपधारी थे।
चरित्रवान ईमानदार थे,
श्रीराम न्यायकारी थे।।
माता-पिता की आज्ञा पाली,
बीहड़ वन को धाए थे।
कन्द मूल फल खाकर वन में,
चौदह वर्ष बिताए थे।।
श्रीराम सा महापुरुष इस,
जग में कोई हुआ नहीं।
वेद शिखर को श्रीराम सम,
कहीं किसी ने छुआ नहीं।।

प्रिय सज्जनो! इस समय अयोध्या में श्रीराम मन्दिर बनने तथा श्रीराम की मूर्ति बनाकर प्राण प्रतिष्ठा करने की चर्चा सकल विश्व में जोर-शोर से हो रही है। देश-विदेश के नर-नारी लाखों की संख्या में अयोध्या पहुँच रहे हैं तथा श्रीराम की मूर्ति के दर्शन करके चढ़ावा चढ़ा रहे हैं। इस तरह करोड़ों रुपए की आय मन्दिर ट्रस्ट को हो रही है। वहाँ बहुतों का तो नम्बर भी नहीं आ रहा है। इस तरह वे भारी परेशानी का सामना कर रहे हैं। इसका मूल कारण श्रीराम को ईश्वर का अवतार मान लेना है। वस्तुत: इस धारणा का कारण अविद्या, अन्धविश्वास है। अन्धविश्वास वेद विरोधी धूर्त पाखण्डियों द्वारा फैला कर जनता को भ्रमित किया जा रहा है। सीधी-सादी जनता दर-दर धक्के खाकर भारी कष्ट उठा रही है।

सज्जनो! आप महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण को ध्यान से पढ़ो। आपको सच्चाई मालूम हो जाएगी। उस समय भारत ही नहीं सारे विश्व में मन्दिर कहीं नहीं थे। भारत (आर्यावर्त) में भी ऋषियों के आश्रम थे, गुरुकुल थे, जहाँ ऋषि-मुनि-विद्वान् ईश्वर का ध्यान-तपस्या करते थे। रामायण में साफ लिखा है- महर्षि विश्वामित्र का आश्रम था। ऋषि सरभंग, महर्षि अगस्त्य, ऋषि भारद्वाज के आश्रमों में श्रीराम-लक्ष्मण ठहरे थे तथा ऋषि-मुनियों की सेवा करके उनसे ज्ञान प्राप्त किया था। आँख खोलकर, पक्षपात छोड़कर पढ़ो। आप सबको ज्ञात हो जाएगा कि महर्षि अगस्त्य ने तो श्रीराम-लक्ष्मण को ज्ञान प्रदान करने के साथ अस्त्र-शस्त्र भी दिए थे तथा दोनों भाइयों को उनको चलाने की विधि भी समझाई थी। आज से पाँच हजार वर्ष पहले महाभारत काल में भी सकल विश्व में कहीं मन्दिर नहीं थे। उस समय भी ऋषियों के सर्वत्र आश्रम थे। जहाँ विश्व की जनता धर्म लाभ उठाकर अपना जीवन निर्माण करती थी।

आप कहोगे कि फिर मूर्तिपूजा कैसे चली तथा कब चली तो समझिए। आज से लगभग तीन हजार वर्ष पहले एक राजकुमार वर्द्धमान् (महावीर स्वामी) नाम का था। उसने जैनमत चलाया तथा अपने तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनाकर पूजन शुरू करी। उसी काल में एक राजकुमार सिद्धार्थ नाम का जन्मा था जो महात्मा बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। उसने बौद्ध मत चलाया तथा बौद्धों ने भी जड़पूजा जैनियों को नीचा दिखाने के लिए शुरू कर दी। महाराजा अशोक व कनिष्क दोनों राजा बौद्धमत को मानने लगे और बौद्ध मत का प्रचार जोर-शोर से शुरू करा दिया। लंका, जावा, सुमात्रा, चीन तक बौद्ध मत फैल गया। यह देखकर शंकराचार्य तथा कुमारिल भट्ट ने बौद्ध मत का खात्मा करने का प्रण किया और देव पुरुषों की मूर्तियाँ बनवाकर उन्हें रेशमी कीमती कपड़े पहनाने शुरू कर दिए तथा सोने, चाँदी के आभूषण भी पहनाने शुरू कर दिए। इस प्रकार जड़पूजा की घातक बीमारी आर्यावर्त विश्व में फैल गई जो इस देश के गुलाम बनने का कारण बनी।

आप आश्चर्य करोगे कि वेदों, शास्त्रों, दर्शनों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों, रामायण, गीता, महाभारत में कहीं भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। ऋग्वेद का मन्त्र है- **अज एकपात् न तस्य प्रतिमा अस्ति** अर्थात् ईश्वर अशरीरी है, निराकार है, न तस्य प्रतिमा अस्ति अर्थात् ईश्वर की कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है। प्यारे साथियो! याद रखो मूर्तियों को ईश्वर बनाता है। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े-मकौड़े, कीटाणु, वृक्ष ये सब ईश्वर की बनाई मूर्तियाँ हैं। मनुष्य कला-कृतियाँ बनाता है, मूर्तियाँ नहीं। मन्दिरों में मनुष्यों द्वारा बनाकर रखी हुई कलाकृतियाँ जड़ हैं, इनमें जीव समझना महामूर्खता है। ये हिलती-डुलती, खाती-पीती नहीं है जो खाती-पीती, बोलती- चालती, चलती-फिरती हैं अर्थात् चेष्टा करती हैं वे मूर्तियाँ हैं उनकी ही पूजा करनी चाहिए। सिन्ध का देवी मन्दिर, सोमनाथ का मन्दिर, काशी विश्वनाथ मन्दिर, श्री कृष्ण जन्म भूमि मन्दिर आदि मन्दिरों को विधर्मी–विदेशी हमलावरों ने तोड़-तोड़कर लाखों मस्जिदों का निर्माण कराया था तथा ये जड़ मूर्तियाँ उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी थीं। जिस समय रामभक्तों ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का ढाँचा ढहाया था। उस समय मुस्लिम क्षेत्र मेवात (हरियाणा) में ३६ मन्दिर जला दिए गए थे। पाखण्डियों के द्वारा मन्दिरों में रखवाई पत्थर-पीतल, ताम्बा, चाँदी, सोने की कलाकृतियाँ उनका (मुसलमानों) कुछ भी बाल बांका नहीं कर सकी थीं। उस वक्त कोई पाखण्डी कार्यकर्ता तथा नेता न कोई पण्डा-पुजारी इनके

पास भी नहीं आया था। तब मेरे जैसे आर्यवीरों ने ही मेवात में मलेच्छों का मुकाबला किया था तथा आर्य शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, स्वामी ओमानन्द सरस्वती आदि को साथ लेकर तत्कालीन मुख्यमन्त्री हरियाणा चौधरी भजनलालजी से मिलकर ध्वस्त मन्दिरों को दोबारा बनवाया था। भोली-भाली जनता को बहला-फुसलाकर, पोपलीला चलाकर पाखण्डी रात-दिन लूट रहे हैं। यह देखकर बड़ा दुःख होता है।

सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली के निर्णय अनुसार अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण हो रहा है। गत मास २२ जनवरी २०२४ को वहाँ एक पत्थर की कलाकृति कुशल कारीगरों द्वारा बनवाकर प्राण प्रतिष्ठा करने का पण्डे, पुजारियों तथा लोगों ने सरकार से मिलकर उस काले रंग की कलाकृति को सुन्दर कीमती वस्त्र स्वर्ण, हीरे-मोतियों से जड़ित आभूषण पहनाकर प्राण प्रतिष्ठा करने का भारी पाखण्ड एवं भारी षड्यंत्र रचकर भोली जनता की भावनाओं का दोहन किया गया। श्रीराम को ईश्वर का अवतार बताया जा रहा है। वेद-शास्त्र और विज्ञान स्पष्ट बताते हैं कि सोना, चाँदी, पीतल, पत्थर ये सब जड़ पदार्थ हैं तथा इनमें कोई भी व्यक्ति प्राण प्रतिष्ठा नहीं कर सकता। जहाँ तक ईश्वर अवतार होने की बात है वह भी वेद-शास्त्र के विरुद्ध है। ईश्वर अजन्मा, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वान्तर्यामी, सृष्टिकर्ता, नित्य, पवित्र है। वास्तव में जीव जन्म लेता है और परमात्मा जीव को उसके कर्मों का यथायोग्य उचित फल देता है क्योंकि ईश्वर न्यायकारी, दयालु है। श्री नरेन्द्र मोदी भी इस बात को मानते, जानते हुए भी राजनीति की विवशता में आकर पाखण्ड को बढ़ावा दे रहे हैं। इस समय तो कुछ अपवाद छोड़कर सबका एक ही लक्ष्य है। **'कुर्सी पाओ मौज उड़ाओ'** बात राम की करते हैं और काम रावण, बाली, कुम्भकर्ण जैसे करते हैं। सज्जनो! तनिक ध्यान दो और अच्छी तरह विचार करो कि श्रीराम कैसे थे?

जिस समय श्रीराम से माता कैकेयी ने कहा कि पुत्र मैंने अपने दो वचन महाराज से माँगे हैं सुनो- 'अयोध्या का राजा भरत बनेगा और राम चौदह वर्ष के लिए वन जाएगा?' महाराज को संशय है कि मेरा पुत्र राम मेरी बात मानेगा या नहीं। उस समय श्रीराम ने माता कैकेयी को उत्तर दिया जो एक उदाहरण है। अब सब ध्यान से सुनो-समझो:

हे मात सुनो! इस दुनिया में
बस पुत्र वही बड़भागी है।
अपने माता-पिता, गुरु के
वचनों का अनुरागी है।।
''मैं महाराज की आज्ञा से तो,
कूद आग में जाऊँगा।।
डूब जलधि में जाऊँगा,
अरु विष खाकर प्राण गंवाऊँगा।।''

यह कहकर माता कैकेयी और महाराज दशरथ के चरण छूकर वहाँ से चले गए। माता कौशल्या को सारा हाल बताया। वहाँ लक्ष्मण भी मौजूद था। माता कौशल्या तथा लक्ष्मण ने श्रीराम को वन जाने से रोकने की पूरी कोशिश की किन्तु राम ने माता कौशल्या तथा अपने अनुज भ्राता को समझाते हुए कहा-

''हे माताजी! तुम सती साध्वी,
आर्यावर्त की नारी हो।
भरत-राम की माता हो,
राजा दशरथ की प्यारी हो।।
हे लक्ष्मण सुनो! जानता हूँ,
जितना है मुझसे प्यार तुम्हें।
लेकिन ओछी बातें कहने का,
ना है अधिकार तुम्हें।।
महाराज की बात मानना,
अब कर्तव्य हमारा है।
नहीं राज्य की मुझे जरूरत,
धर्म राम को प्यारा है।।''

ऐसे महापुरुष थे श्रीराम। अगर श्रीराम के आदर्शों को यह संसार समझे तो सब सुखी हो जाएँ।

जिस समय रावण का भाई विभीषण, रावण के कर्मों एवं व्यवहार से दुःखी होकर श्रीराम के पास आया तो श्रीराम ने उसका लंकेश कहकर स्वागत किया। यह देखकर के सुग्रीव ने कहा- ''महाराज आज आपका यह व्यवहार देखकर मैं हैरान हूँ? श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा- मित्र क्या परेशानी है, शीघ्र बताओ? श्रीराम के पूछने पर सुग्रीव बोला- हे नाथ यदि लंकापति रावण सीताजी को लेकर आपके पास आ गया और क्षमा याचना करने लगा तो फिर आप क्या करोगे?

यह सुनकर श्रीराम हँसते हुए बोले-

यदि रावण वैर त्याग करके
अब पास हमारे आएगा।
गलती की माफी माँगेगा,
सीताजी को संग लाएगा।।
उसको भी अभयदान दूँगा,
मैं अपना वचन निभाऊँगा।
इसको लंकेश बनाया है,
उसको अवधेश बना दूँगा।।
मैं ऋषि-मुनियों की सेवा में,
जीवन सकल लगाऊँगा।
रघुनन्दन हूँ, मैं रघुकुल का,
सुग्रीव न दाग लगाऊँगा।।
चाहे कितने संकट आएँ,
मैं धर्म कभी ना छोड़ूँगा।
लालच में फँस करके नाता,
मैं नहीं पाप से जोड़ूँगा।।

श्रीराम का उत्तर सुनकर सुग्रीव ने श्रीराम के चरणों में सिर नवा दिया और क्षमा याचना करने लगा। आज कोई नेता ऐसा दिखाई देता है? अब तो सब हड़प्पू कुर्सी के भूखे घूम रहे हैं।

भारत में जिस समय अंग्रेजों का शासन था तब भारत के नेता सब कांग्रेसी नारे लगाते थे- कहते थे अंग्रेजों को भगाएँगे, गऊओं को बचाएँगे और भारत में रामराज्य लाएँगे।' किंतु रावण से भी बुरा हाल बना दिया था। कांग्रेसी नेता जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गाँधी आदि ईश्वर को ही भूल गए थे। सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री को छोड़कर सब नास्तिक थे। बीच में जनसंघ पार्टी से अटल बिहारी पाँच साल भारत के प्रधानमंत्री रहे, जो मद्य, मांसाहारी थे।

अब दस वर्षों से भारत में भाजपा की सरकार है जो हर समय जयश्रीराम के जयघोष लगाती है तथा काम राम चरित्र से उलटे करती है। इस समय उग्रवाद, आतंकवाद का बोलबाला है। दिनदहाड़े कत्लेआम हो रहा है।

(शेष पेज २८ पर)

जन्म
१६ अप्रैल १८६५

अमर बलिदानी : उल्लासकर दत्त

निधन
१७ मई १९६५

उल्लासकर दत्त

बम गोले ने कहा- शत्रु से भीख मत माँगो।
जैसा दाँव लगे- मारो, काटो, गोली मारो।।
घूम-धड़ाका करो विकट, शत्रु के मस्तक फोड़ो।
जैसे भी बने पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ो।।

कालेपानी की सजा क्रांतिकारियों को विक्षिप्त भी बना सकती है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बंगाल के एक देशभक्त उल्लासकर दत्त के जीवन में सिद्ध होता है। क्रान्तिकारी दत्त ने अपनी आपबीती में लिखा है कि उन्हें कोल्हू में बैल की भाँति जोता जाता था, दिन में कोल्हू चलाकर ८० पौण्ड तेल निकालना पड़ता था। ईंटें ढोने का काम दिया जाता था। इतने परिश्रम के बाद इतना कम भोजन दिया जाता था कि शरीर को स्वस्थ रखना कठिन था। ऐसे काम से दत्त ने साफ मना कर दिया। अत्याचारी जेलर बारी ने उल्लासकर को दण्डित करने हेतु दत्त को दीवार के सहारे खड़ा होने के लिए कहा और दीवार पर लटक रही हथकड़ी में उसके हाथों को अटकाकर उस पर ताला लगा दिया। ऐसी अमानवीय यातना के कारण दत्त को १०७ डिग्री बुखार हो गया। डॉक्टर के हस्तक्षेप से उसे दीवार से हटाया गया, किन्तु दत्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गए। तत्पश्चात् असहनीय पीड़ाओं के कारण मानसिक सन्तुलन खो जाने के कारण विक्षिप्त हो गए। अन्ततः उन्हें मद्रास के पागलखाने में रखा गया, किन्तु स्थिति में सुधार न होकर छोड़ दिया गया। ऐसे एक सशक्त क्रान्तिकारी के जीवन का दुःखद अन्त हो गया।

अलीपुर बम केस के क्रान्तिकारी उल्लासकर दत्त ने अपनी जानकारी में कहा- ''मेरा नाम उल्लासकर दत्त है, मेरे पिता का नाम द्विजदास दत्त है। मैं जाति का वैद्य हूँ, हमारे यहाँ गाएं पाली जाती है। मेरा निवास स्थान ब्राह्मण थाने के अन्तर्गत ग्राम कालीकच्छ है। मेरा वर्तमान निवास हावड़ा जिला ग्राम शिवपुर है। प्रश्न– आप क्रान्तिकारी दल में किस उद्देश्य से सम्मिलित हुए? उत्तर- मैंने युगान्तर पर पढ़ा था कि एक गुप्त समिति का आयोजन चल रहा है, मैं उस आयोजन में सम्मिलित हो गया। प्रश्न- पहले आप क्या करते थे? उत्तर- पहले मैं विस्फोटक पदार्थों के निर्माण का प्रयोग किया करता था। चन्दननगर में जो बम फेंका, मैं वहाँ उपस्थित था। खड्गपुर के बम-विस्फोट में मैं नहीं था, वहाँ बारीन्द्र, विभूति और प्रफुल्ल चाकी थे। मैंने 'माइन' बनाकर दिया था। 'माइन' ढले हुए लोहे के आधार का डाइनामाइट से भरा हुआ था। जिसे प्यूजपिक्रिस एसिड और क्लोरेट ऑफ पोटास से बनाया गया था। प्रश्न- यह जानते हुए भी कि आप बयान देकर खुद फँसते जा रहे हो, आप यह स्वीकारोक्ति किस उद्देश्य से कर रहे हैं? उत्तर- मेरा उद्देश्य यही है कि फँसना है तो स्वयं मैं फँसू, अन्य दूसरे फँसने से बच जाएँ। उपर्युक्त बयान उल्लासकर दत्त ने मि. बीचक्राप्ट की अदालत में दिया। उसने क्रान्ति का पथ क्यों चुना? इसके पीछे एक घटना इस प्रकार है- ''सन् १९०४ में कलकत्ता में रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक भाषण आयोजित था। भाषण का विषय था- **'स्वदेशी समाज'** भाषण सुनने के लिए अपार जनसमूह एकत्र था। भीड़ को नियन्त्रण में लाने के लिए पुलिस ने बल-प्रयोग किया। सिपाही निरपराध लोगों पर अन्धाधुन्ध लाठियाँ बरसाने लगे। कुछ महिलाओं और बच्चों को भी चोटें आईं। नौजवान दत्त यह सहन नहीं कर सका। वह

डोंगरलाल पुरुषार्थी

प्रधान आर्य समाज, कसरावद,
जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०–५९०९९

प्रतिरोध कर बैठा- 'शर्म नहीं आती तुम्हें, जो इन निर्दोष लोगों पर जंगलियों की तरह टूट पड़े हो। महिलाओं, बच्चों पर लाठियाँ बरसाते हुए तो तुम्हें शर्म से डूब मरना चाहिए।' दत्त की बात पर एक सिपाही ने ललकारते हुए कहा- 'अगर महिलाओं, बच्चों का तुम्हें इतना ख्याल है तो मर्द के बच्चे! तू सामने क्यों नहीं आ जाता? सचमुच ही दत्त सीना तानकर सिपाही के सामने जा कूदा। सिपाही लाठी का एक प्रहार दत्त पर कर बैठा। दत्त ने उसकी लाठी पकड़ ली। यह दृश्य देख अन्य सिपाही दौड़ पड़े और सभी दत्त पर टूट पड़े। पिटाई कर थाने पर ले गए और उसके विरुद्ध प्रकरण कायम कर दिया गया।

डॉक्टर सुरेन्द्र मोहनदास उन दिनों कलकत्ता के एक समाजसेवी डॉक्टर थे। उन्होंने न केवल उल्लासकर को जमानत पर छुड़ाया वरन उसे अपने घर रखकर उसका उपचार भी किया। इस घटना के कुछ दिन पश्चात् ही **'बारिसाल प्रादेशिक सम्मेलन'** हुआ। वहाँ भी उल्लासकर ने पुलिस की इस प्रकार की ज्यादियाँ देखी। उसका विद्रोह ब्रिटिश सरकार के प्रति जाग्रत हुआ, जिसकी नौकरशाही के ये सब पुर्जे थे। कुछ दिन तक उल्लासकर बम्बई के 'विक्टोरिया टेक्नीकल संस्था' में अध्ययन कर चुका था। रासायनिक पदार्थों का उसे ज्ञान था, उस ज्ञान के आधार पर वह कलकत्ता में अपने घर के एक कमरे में ही कुछ प्रयोग करने लगा, वह बम बनाने

का काम कर रहा था। उसके अध्यापक पिता यही सोचते रहे कि उनका पुत्र अपने छोड़े हुए अभ्यास को आगे बढ़ा रहा है।

उन्हीं दिनों कलकत्ता में रहकर बारीन्द्रकुमार घोष अपने **'युगान्तर'** पत्र के माध्यम से विप्लव का प्रचार कर रहे थे। उल्लासकर ने बारीन्द्रकुमार घोष से परिचय स्थापित कर लिया। वह उनके क्रान्तिकारी दल का सदस्य बन गया। अब मुरारी पुकुर के बगीचे वाले मकान में बम बनाने का एक कारखाना स्थापित कर दिया। उल्लासकर अपने बम बनाने के प्रयोग में सफल हो गया। दल ने यह आवश्यक समझा कि उल्लासकर द्वारा जो बम बनाए गए हैं, उनका परीक्षण कर लिया जाए। बम के परीक्षण हेतु वे लोग देवधर के रोहिणी पर्वत पर गए। परीक्षण के लिए जाने वालों में बारीन्द्रकुमार घोष, विभूति सरकार और उल्लासकर थे। उनके साथ रंगपुर विप्लव केन्द्र के एक सदस्य प्रफुल्ल चक्रवर्ती भी थे। बम विस्फोट का उत्तरदायित्व प्रफुल्ल चक्रवर्ती ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने बम को एक रस्सी से बाँधकर और उसे घुमाकर पहाड़ी के नीचे दूर फेंका और फेंकते ही सब लोग एक चट्टान की आड़ में छिप गए। नीचे गिरते ही भारी धमाके के साथ बम का विस्फोट हुआ और एक चट्टान का टुकड़ा उड़कर ऊपर की ओर आया, जहाँ वे सब छिपे हुए थे। वह चट्टान खण्ड प्रफुल्ल चक्रवर्ती और उल्लासकर दत्त के ऊपर आकर गिरा। प्रफुल्ल चक्रवर्ती उसके आघात से इतने अधिक घायल हो गए कि घटना स्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई। उल्लासकर दत्त भी घायल हुए, पर उनकी दशा गम्भीर नहीं थी। साँझ का अन्धेरा घिर आया था। प्रफुल्ल चक्रवर्ती का शव लाना सम्भव नहीं था। उसे वहीं छोड़ा गया। घायल उल्लासकर को कन्धों पर उठाकर उसके साथी लोग उसे घर ले आए। थोड़े दिनों के उपचार के बाद वह स्वस्थ हो गया।

अपने बनाए हुए बम के सफल किन्तु महँगे परीक्षण के उपरान्त उल्लासकर का उत्साह और अधिक बढ़ गया। इसी बीच बम बनाने का नियमित शिक्षण प्राप्त कर, दल के एक सदस्य हेमचन्ददास फ्रान्स से लौट आए। अब उनके साथ मिलकर उल्लासकर बम निर्माण में जुट गए। ब्रिटिश सरकार के कुछ अफसरों पर उनके बमों का प्रयोग भी किया गया जिनका उल्लेख दत्त ने अपने बयान में किया। बम की सार्थकता सिद्ध हो चुकी थी। क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि बंगाल के छोटे लाट साहब सर एण्ड्रू फेजर को बम का निशाना बनाकर उसे अपने अत्याचारों का पुरस्कार दिया जाए। इस अभियान में बारीन्द्रकुमार घोष, उल्लासकर दत्त और नरेन्द्र गोस्वामी (जिसे बाद में सरकारी गवाह बनने पर गद्दारी का पुरस्कार गोलियों से भूनकर दिया गया) सम्मिलित हुए। यह प्रयास सन् १९०७ के अक्टूबर माह में किया गया था। चन्दन नगर पहुँचने पर यह निश्चय किया गया कि जिस ट्रेन से लाट साहब की सवारी निकलेगी, उसके रेलपथ पर उल्लासकर जाकर बम रखे। छोटे लाट साहब एण्ड्रू केजर राँची जा रहे थे। निश्चित स्थान और निश्चित समय पर उल्लासकर रेलवे लाइन पर बम रखना ही चाहते थे कि कुछ व्यक्तियों की चहल–पहल दिखाई दी। उल्लासकर का अब यह प्रयत्न था कि वे कुछ और आगे बढ़कर दूसरे स्थान पर बम रखे। पर इसी बीच ट्रेन उस मार्ग से गुजर गई और साहब बच गए।

इस घटना के कुछ दिन पश्चात् दूसरा प्रयत्न भी किया गया और रेलवे लाइन के नीचे उल्लासकर ने बम रख भी दिया, पर लाट साहब ने उस दिन जाने का कार्यक्रम ही निरस्त कर दिया। क्रान्तिकारी लोग इस बात पर तुले हुए थे कि छोटे लाट साहब को समाप्त करके ही दम लेंगे और छोटे लाट साहब थे कि भाग्य उन्हें बचा रहा था। ६ दिसम्बर १९०७ को उनकी हत्या का तीसरा प्रयत्न भी किया गया। खड्गपुर के एक महाराष्ट्रीयन रेलवे कर्मचारी द्वारा क्रान्तिकारियों को पता चला कि छोटे साहब खड्गपुर जा रहे हैं। यह रेलवे कर्मचारी महाराष्ट्र के एक क्रान्तिकारी का सम्बन्धी था। छोटे साहब को उड़ाने के लिए क्रान्तिकारी लोग भी खड्गपुर जा पहुँचे। इस दल में बारीन्द्रकुमार घोष, विभूति सरकार और प्रफुल्ल चाकी थे। उल्लासकर इस अभियान में सम्मिलित नहीं थे। पर विस्फोट के लिए उनके द्वारा निर्मित 'माइन' ही काम में लाया गया था।

क्रान्तिकारी दल खड्गपुर से एक अन्य ट्रेन से नारायणगढ़ के लिए रवाना हुए। रात के नौ बजे तक वहीं छिपकर वे लोग उचित अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। उनके पास बारूद वाला 'माइन' था। सुनसान वातावरण की प्रतीक्षा में कुछ समय एक घनी झाड़ी की ओट में बैठकर निकाला गया। साथ में लाई गई मिठाइयाँ भी मिल– बाँटकर क्रान्तिकारियों ने खाई। रात के करीब ११ बजे रेलवे लाइन के नीचे माइन लगाया गया। ट्रेन आने के कुछ समय पहले माइन और फ्यूज का सम्बन्ध स्थापित किया और लगभग डेढ़ मील दूर चले गए। कुछ समय बाद उन्हें भयानक धमाका सुनाई दिया। विस्फोट के कारण ट्रेन के डिब्बे क्षतिग्रस्त हो गए पर छोटे लाट साहब इस बार भी बाल–बाल बच गए, तीसरी बार भी भाग्य ने उनका साथ दिया।

क्रान्तिकारियों ने चौथी बार पिस्तौल के माध्यम से ७ नवम्बर १९०८ को जितेन्द्रनाथ राय नाम के कॉलेज के एक छात्र ने एक आमसभा में छोटे लाट साहब पर हमला किया। बार–बार घोड़ा दबाने पर भी गोली नहीं निकली, पिस्तौल जाम हो गया था। जितेन्द्रनाथ को पकड़ लिया गया तथा न्यायालय द्वारा दस वर्ष की सजा हुई। क्रान्तिकारियों के प्रयत्न विफल हो रहे थे और अब बारी थी ब्रिटिश सरकार की। पुलिस के फैलाए जाल में मुरारी पुकुर स्थित बम के कारखाने पर छापा मारा गया और क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। न्यायालय के निर्णय में उल्लासकर दत्त को फाँसी की सजा हुई। अपील करने पर फाँसी की सजा आजीवन कारावास में परिवर्तित हो गई। अन्य क्रान्तिकारी साथियों के साथ अण्डमान की सैलुलर जेल में निर्वासित कर दिया गया। निरन्तर बारह वर्षों तक कालेपानी की यातनाओं के पश्चात् १९२० में विक्षिप्तावस्था में भारत आए, १७ मई १९६५ को आपका देहावसान हो गया। ■

भर्तृहरि के अनुसार किसका जन्म सफल माना जाए?

शिवनारायण उपाध्याय

७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

भर्तृहरि ने इस विषय का भी गम्भीर चिन्तन किया है कि किस पुरुष का जीवन सफल माना जाना चाहिए। वैराग्य शतक में उन्होंने इस विषय पर लिखा है–

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

यह संसार निरन्तर परिवर्तनशील है। जो भी जन्म लेता वह मृत्यु को भी प्राप्त होता है। वास्तव में इस संसार में उसी व्यक्ति का जन्म सफल मानना चाहिए जो अपने जन्म से वंश को गौरवान्वित करता है। इस अनित्य संसार में प्रत्येक क्षण कई व्यक्ति जन्म धारण करते हैं और कई व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इससे क्या? कीट–पतंग भी जन्मते और मरते हैं। वास्तव में जीवन तो उसी व्यक्ति का सफल है जिसके द्वारा वंश और जाति को गौरव प्राप्त होता है। जीवन में दो ही स्थितियाँ होती हैं या तो पूरा जीवन भोग–विलास में नष्ट कर दें अथवा समाज से दूर वन में रहकर संन्यास धारण कर अपना जीवन परोपकार में लगा दें।

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्यविशीयेत वनेऽथवा।।

जैसे पुष्प की दो गतियाँ हैं या तो वे सबके सिर पर चढ़ते हैं अथवा मुरझाकर पौधे से झड़कर बिखर जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं वैसे ही मनस्वी पुरुषों की भी दो गतियाँ हैं– या तो वे समाज नें रहकर सर्वोत्तम स्थान प्राप्त करते हैं अथवा समाज से दूर रहकर जंगल में अपना जीवन व्यतीत करते हैं अर्थात् स्वाभिमानी मनस्वी पुरुषों की भी दो तरह की स्थिति होती है।

पराक्रमी पुरुष का जीवन भी सफल माना जाता है।

सन्त्यन्येऽपि बृहस्पाति प्रभृतयः सम्भाविताः प पंचषास्तान् प्रत्येष विशेष विक्रम रुची राहुर्न वैरायते।
द्वावेवग्रसते दिवाकरनिशा प्राणेश्वरौ भास्वरौ।
भ्रातः पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषाकृतिः।।

बृहस्पति आदि पाँच–छः प्रतिष्ठित ग्रह हैं- परन्तु राहु विशेष पराक्रमी है जो आकार में सिर मात्र रह गया है वह अन्य ग्रहों से शत्रुता नहीं रखता है क्योंकि वह उन्हें अपने पराक्रम के सामने तुच्छ मानता है वह तो सूर्य और चन्द्रमा को भी अमावस्या और पूर्णिमा को क्रम से ग्रसता है। इसी प्रकार पराक्रमी व्यक्ति भी शक्तिशाली दुष्ट लोगों पर ही आक्रमण करता है।

महान् व्यक्ति सदैव परहित में प्रवृत्त रहते हैं।

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचन्द्रवालम्
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः।

सूर्य बिना याचना किए ही कमल समूह को विकसित करता है, चन्द्रमा कुमुदियों को खिला देते हैं तथा बादल भी बिना याचना किए ही पानी बरसाते हैं। इसी प्रकार सन्त पुरुष भी अपने आप दूसरों की भलाई में कटिबद्ध रहते हैं। परोपकार के लिए श्रेष्ठ पुरुष किसी याचना की प्रतीक्षा नहीं करते हैं वे तो स्वयं ही परहित में रत रहते हैं वास्तव में ऐसे पुरुष का जीवन सफल माना जाना चाहिए।

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कंकोलनिम्बकुटजा अपि चन्दना स्युः।।

उस सुवर्ण पर्वत तथा रजत पर्वत कैलाश से क्या लाभ है? जहाँ लगे हुए पेड़ वैसे के वैसे ही रह गए। हम तो उस मलयाचल पर्वत को ही धन्य मानते हैं। जिसका आश्रय लेने से कंकोल, दालचीनी, नीम तथा कुटज आदि के वृक्ष भी चन्दन जैसे ही हो जाते हैं। वास्तव में गुणवान व्यक्ति ही सर्वत्र प्रशंसनीय होता है उसकी संगति में आकर दुर्जन व्यक्ति भी सज्जन बन जाते हैं। ऐसे गुणवान व्यक्तियों का जीवन ही सफल माना जाना चाहिए। मनुष्य जीवन उसका सफल हो जो साहित्य, संगीत और कला में रुचि रखता हो अन्यथा उसका जीवन पशु के समान ही है।

साहित्य सङ्गीत कला विहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणान्नखादन्नपि जीवमानस्तद्–
भागधेयं परमं पशूनाम्।

जो व्यक्ति साहित्य, संगीत और कला से रहित है, अपरिचित है वह तो वास्तव में पूँछ और सींग रहित पशु ही है। यह पशुओं का भाग्य ही है कि वह मनुष्य घास नहीं खाता है। घास खाने वाले पशु भी उससे श्रेष्ठ है। इसके विपरीत लोगों का जीवन सफल है। इसी धारणा को विस्तार देते ही भर्तृहरि लिखते हैं–

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोंके भुवि भारभूता
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिन मनुष्यों में न तो विद्या है, न तप है, न ज्ञान है, न शील सदाचार है, न गुण है और न धर्म है। वे लोग मृत्युलोक में केवल पृथ्वी पर भार स्वरूप हैं। वे तो मनुष्य रूप में पशु ही हैं, पशुओं के समान ही विचरते हैं। इसके विपरीत जो मनुष्य विद्यावान है, तपस्वी है, दानशील है, ज्ञानी है, गुणवान और धर्मात्मा है वही वास्तव में मनुष्य है उनका ही जीवन सफल है।

वाञ्छा सज्जन सङ्गमे परगुणे प्रीतिर्गुरौ
नम्रता विद्यायां व्यसनं स्वयोषिति
रतिर्लोकापवादाद्भयम्।
भक्तिः शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्ग
मुक्तिः खले ऐते येषु वसन्ति निर्मल
गुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नमः।

सज्जन पुरुषों के समागम में अच्छा, दूसरों के गुणों से अनुराग, गुरुजनों के प्रति विनम्रता, विद्या प्राप्ति में रुचि अपनी पत्नी में अनुरक्ति, लोक निन्दा से डर, ईश्वर में भक्ति, अपने मन का दमन करने की शक्ति तथा दुर्जनों के संग का त्याग जिनमें है उन सब पुरुषों को प्रणाम है। उनके कार्य प्रशंसनीय है वे औरों का हित चाहते हैं। वास्तव में उन्हीं का जीवन सफल है। इति शम्। ■

वैदिक उपनिषद्

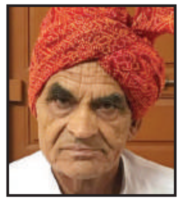

इन्द्रसिंह, *पूर्व न्यायाधीश*

२९, नई अनाज मण्डी, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६०५७८१३

उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ पास बैठना या निकट बैठना होता है। किसका किसके पास बैठना? शिष्य का गुरु के पास बैठना। क्यों? क्योंकि गुरु के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना जीवात्मा का कल्याण नहीं। उपनिषद् के अर्थ के सदृश ही उपासना तथा उपवास का अर्थ भी बनता है अर्थात् इन शब्दों का अर्थ भी यही बनता है। निकट या पास बैठना या पास में वास करना, निकट रहना। कोई कहे कि उपासना का सम्बन्ध तो ईश्वर से है तो भी 'बात वही आ जाती है। ईश्वर तो गुरुओं का गुरु है, आचार्यों का आचार्य है। किसी ने किसी से पूछा कि तुम्हारा गुरु कौन है? उसने उत्तर में अपने गुरु का नाम बता दिया। फिर पूछा आपके गुरु का गुरु कौन है? वह भी बता दिया। यदि पूछने वाला पूछता ही चला जाए, तो बात कहाँ तक जाएगी? मनुष्यों के पास तो ज्ञान था नहीं। फिर ज्ञान आया कहाँ से? जो सबसे प्रथम था, उससे आया। **ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे...** (वेद)। वह कौन था? वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् और सृष्टिकर्त्ता था। न उसके समान और न उससे बड़ा कोई था। अनादि काल से चला आ रहा ईश्वर ही था, है और रहेगा। महर्षि स्वामी दयानन्द कहते हैं कि जब उस सृष्टिकर्त्ता ने आँख आदि पदार्थों के लिए सूर्यादि पदार्थ दिए हैं, तो यह तो नहीं हो सकता कि उसने मन, बुद्धि और आत्मा के लिए कोई ज्ञान नहीं दिया होगा। फिर विचार करें कि वह कौन सा ज्ञान दिया? संक्षेप में– संसार के पुस्तकालय का पहला पुस्तक–वेद अर्थात् वेद के रूप में ज्ञान। अन्यथा मनुष्य सृष्टि के पदार्थों का उपयोग कैसे कर पाता और जीवात्मा का कल्याण कैसे होता?

हम विचार करें, शब्दों के अर्थ कैसे विकृत हो गए। उपवास का अर्थ हो गया अनशन, भूखे मरना। उपवास का अर्थ होता है– पास में वास करना– इतने निकट हो जाना गुरु के कि कुछ भी सुध–बुध न रहे। हाँ, कभी–कभी यह होगा कि गुरु की निकटता में ऐसा पेट भर जाएगा कि शायद भूख की याद भी न आए। गुरु के आनन्द में डूबकर अगर भोजन की याद न आए, तो उपवास और जबरदस्ती भोजन न किया जाए तो अनशन। अनशन हिंसा है, उपवास प्रेम है। इनमें भूमि–आकाश का भेद है। इसी कारण उपवास के अर्थ की विकृति उत्पन्न हुई।

एक आचार्य ने बताया कि वह जब भी कभी एक धर्मनिष्ठ परिवार में अतिथि होता था, तो उसके कारण न जाने कितने अन्य अतिथि दिनभर उनके घर आते। तब गृहिणी बड़े प्रेम से उन सबको खिलाती और स्वयं कुछ खाती–पीती दिखाई नहीं देती। तो उससे जब इस बारे में पूछा गया, तो वह कहने लगी जब आप और अन्य अतिथि यहाँ होते हैं तो मुझे भूख ही नहीं लगती। मैं खुद चकित हूँ कि भूख कहाँ खो जाती है। मैं इतनी भरी–भरी सी हो जाती हूँ कि भीतर जगह ही नहीं रहती। प्रेम भोजन से भी बड़ा भोजन है और अवश्य पूर्ति करता है, बहुत भर देता है। सम्भवतः भोजन का स्मरण भी न आए। इस कारण एक गलत अर्थ हो गया उपवास का अनशन।

उपनिषद् – पास बैठना, बस इतना ही अर्थ है, उपनिषद् का। गुरु के पास मौन होकर बैठना। जिसने जाना है, उसके पास शून्य होकर बैठना और उस बैठने में ही हृदय से हृदय आन्दोलित हो जाते हैं। उस बैठने में ही सत्संग फल जाता है। जो नहीं कहा जा सकता, वह कहा जाता है। जो नहीं सुना जा सकता, वह सुना जाता है। हृदय की वीणा बज उठती है। जिसने जाना है, उसकी वीणा बज रही है। जिसने नहीं जाना है, वह अगर पास सरक आए और पात्र हो तो उसके तारों में भी टंकार हो जाती है। संगीतज्ञों का यह अनुभव है, अगर एक ही कमरे में– सिर्फ दो वीणाएँ रखी जाएँ, द्वार बन्द हों और एक वीणा पर वीणावादक तार छेड़ दे, संगीत उठा दे, तो दूसरी वीणा जो कोने में रखी है, जिसको उसने छुआ भी नहीं, उस वीणा के तार भी झंकृत होने लगते हैं। एक वीणा बजती है, तो हवाओं में आन्दोलन हो जाता है। वह स्पन्दन जिस वीणा को छुआ भी नहीं है, उसके भीतर भी सोए संगीत में हलचल मचा देता है। उसके भीतर भी जैसे नींद से जाग जाते हैं, जैसे सुबह हो गई। दूर क्यों जाते हो– महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन के अन्तिम दिन अजमेर के भिनाय कोठी में, उनके निकट उपस्थित वह व्यक्ति जो विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण अपने घर से दृढ़ नास्तिक के रूप में आता है और फिर उस कक्ष की खिड़की से, जब उसकी स्वामीजी की आँखों से आँख मिलती है, तत्पश्चात् वहाँ उपस्थित आर्यजगत् का अथाह जनसमूह साक्षी बन जानता है कि वही व्यक्ति किस प्रकार दृढ़ आस्तिक बनकर, अपने शरीर पर

पहने हुए वस्त्र के दोनों ओर आर्यसमाज के पाँच–पाँच (दस) नियम अंकित करवाए हुए दीवाना होकर अपने घर लौटता है और धर्मपत्नी पूछती है कि आपने यह क्या हाल बनाया है? स्वामीजी ने उस जिज्ञासु महानुभाव पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को उस घड़ी में अपनी वाणी से कोई उपदेश नहीं दिया था। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है। वाह रे ऋषि! जाते–जाते भी तूने सबको चमत्कृत कर दिया।

उपर्युक्त की पुष्टि में प्रकरणवित्त होने के कारण निवेदन है कि आज से लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व एक वैज्ञानिक ने पहली बार इस सिद्धान्त को खोजा। वह इसे कोई नाम नहीं दे सका। फिर अभी कोई ६५–७० साल पहले कार्ल गुस्ताव जुंग नाम के बहुत बड़े मनोवैज्ञोनिक ने इसे नाम दिया– **'सिंक्रॉनि सिटी'**। जिस वैज्ञानिक ने पहली बार यह खोज की थी, वह एक पुराने किले में एक राजा के घर अतिथि था और जिस कमरे में वह था, दो घड़ियाँ उस कमरे में एक ही दीवार पर लटकी हुई थी। पुराने ढंग की घड़ियाँ। मगर वह आश्चर्यचकित हुआ यह बात जानकर कि उनका पेंडुलम एक साथ घूमता है मिनिट और सेकेंड भी भिन्न नहीं। सेकेंड–सेकेंड वे एक साथ चलती। इन दो घड़ियों के बीच उसे कुछ ऐसा तालमेल दिखाई पड़ा– वैज्ञानिक था, सोच में पड़ गया कि इस तरह की दो घड़ियाँ उसने कभी देखी नहीं, जिनमें कि सेकेंड का भी फर्क न हो। तो उसने एक काम किया कि यह संयोग हो तो सकता है, उसने एक घड़ी बन्द कर दी रात को। दूसरे दिन सुबह शुरू की और दोनों के बीच कोई तीन–चार मिनट का अन्तर रखा। चौबीस घण्टे पूरे होते–होते दोनों घड़ियाँ फिर साथ–साथ डोल रही थी। बराबर सेकेण्ड–सेकेण्ड करीब आ गए थे, पेण्डुलम फिर साथ–साथ लयबद्ध हो गए थे। तब तो वह चमत्कृत हो गया। रहस्य क्या है? आया था दिन दो दिन के लिए, लेकिन सप्ताहों रुका, जब तक रहस्य न खोज लिया। रहस्य यह था कि वे जिस दीवार पर लटकी थी, उस पर कान लगाकर सुनता रहा कि क्या हो रहा है, तब उसे समझ में आया कि एक घड़ी की टिक–टिक, जो बड़ी घड़ी थी, उसकी टिक–टिक दीवार के द्वारा दूसरी घड़ी में पेण्डुलम को भी संचालित कर रही है, उसमें एक लयबद्धता पैदा कर रही है और बड़ी घड़ी इतनी बलशाली है कि छोटी घड़ी करे भी तो क्या करे, वह छोटी घड़ी सहज ही उसके साथ लयबद्ध हो जाती है। उसने इसको सिर्फ लयबद्धता कहा था, लेकिन जुंग ने इसे पूरा वैज्ञानिक आधार दिया और इसे **'सिंक्रॉनि सिटी'** कहा और सिर्फ घड़ियों के लिए नहीं, बल्कि जीवन के समस्त आयामों में इस लयबद्धता के सिद्धान्त को स्वीकार किया।

रहस्यवादी तो इस सिद्धान्त से हजारों वर्षों से परिचित हैं। सत्संग का यही रहस्य है, **'सिंक्रॉनि सिटी'**। सद्गुरु को यूँ समझो कि बड़ी घड़ी, या बड़ा सितार। और शिष्य यदि राजी हो, श्रद्धा से भरा हो और बड़े सितार के पास सिर्फ बैठा रहे– कुछ न करे, तो भी उसके तार झंकृत हो जाएँगे। उपनिषद् का अर्थ है **'लयबद्धता'**। इस लयबद्धता का आधार क्या है या कहें कि इसका स्रोत क्या है? परस्पर जुड़ाव का साधन क्या है? इसे कोई वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक नहीं बता पाया है। इसे तो कोई योगसाधक ही बता सकता है। तो ऐसे योगी से पता चलेगा कि इसका आधार तो वही निराकार सूक्ष्मतम चेतन ऊर्जा है, जो कि सृष्टि के कण–कण में सर्वव्यापक है। वह चेतन ऊर्जा (ईश्वर) अपने सामर्थ्य से प्रत्येक पदार्थ में सुनियोजित व सुव्यवस्थित तारतम्य बनाकर नियन्त्रित किए हुए है।

इसी प्रकार उपासना का अर्थ है– पास बैठना। इसका भी गलत अर्थ हो गया। अब तुम मूर्ति की आराधना कर रहे हो, थाली सजाई हुई है, आरती बनाई हुई है, दीए जलाए हुए हैं, धूप जलाई हुई है और इसको तुम उपासना कह रहे हो। यह तो मात्र अन्धविश्वास, आडम्बर, दिखावा और पाखण्ड के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। फिर उपासना क्या है? उपासना तो सद्गुरु के पास बैठना होता है अथवा प्रत्याहार करते हुए गुरुओं के गुरु परमेश्वर के ध्यान में बैठना होता है अर्थात् विधिपूर्वक योगाभ्यास करना होता है। यही आरती है, आराधना है। गुरु के पास बैठना ही, तुम्हारे भीतर के दीए का प्रज्वलित होना है। उसके पास बैठते ही, तुम्हारे भीतर धूप जल उठती है, सुगन्ध उठने लगती है। ऐसे ही उपवास का अर्थ भी समझ लिया जाए।

उपनिषदों के भिन्न–भिन्न नामों से प्राचीन ऋषियों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। प्रथम तो ऋषियों ने ईश्वरीय ज्ञान वेद से ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात् उपलब्ध हुए ज्ञान पर क्रियात्मक प्रयोग करके अपने–अपने अनुभव लिपिबद्ध किए। जैसे कि वर्तमान में विद्यालयों में थ्योरी पढ़ाकर प्रेक्टिकल कराया जाता है। ऋषियों के अनुभव हमारे कल्याण के लिए उपनिषदों, दर्शनों, ब्राह्मणग्रन्थों, स्मृतियों आदि के रूप में उपलब्ध हैं। वेदों के वृक्षों पर आर्षग्रन्थ रूपी फूल लगे हैं। चारों वेद संहिताएँ स्वत: प्रमाण मानी जाती हैं और अन्य आर्षग्रन्थ जो वेदानुकूल हैं, वे परत: प्रमाण हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द ने दश उपनिषदों– ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक को प्रामाणिक माना है। (सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास)। कहने को तो डेढ़ सौ के करीब उपनिषद् ग्रन्थ मिलते हैं।

उक्त प्रामाणिक उपनिषदों में जो एक मुण्डकोपनिषद् है, उसके एक निम्न श्लोक पर विचार–मनन करते हैं–

वेदान्त–विज्ञान सुनिश्चितार्था:
संन्यास–योगाद् यतय: शुद्ध सत्वा:।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृता:
परिमुच्यन्ति सर्वे।।

सरलार्थ– जो वेदान्त और विज्ञान से जीवन के लक्ष्य को निश्चित रूप में जान गए हैं, जो संसार में संन्यास और योग से यति हो गए हैं, जो शुद्ध अन्त:करण हैं, वे परम अन्तकाल में परम अमृत होकर ब्रह्मलोक में

चले जाते हैं और बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं।

अब इस सूत्र का गहराई से अर्थ समझने का प्रयास करेंगे। वेदान्त का अर्थ है– जहाँ शब्द नहीं, जहाँ सिद्धान्त नहीं। जहाँ सब शास्त्र पीछे छोड़ दिए गए। जहाँ वेद का अन्त हो गया। मन के पार तो शस्त्र नहीं हो सकता। वेदान्त है मन के पार उड़ान; अन्मनदशा। वेदान्त है– ध्यान–समाधि।

दूसरा शब्द है– विज्ञान। विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। ज्ञान वह है जो दूसरों से मिलता है और विशेष ज्ञान वह है जो अपने भीतर से आविर्भूत होता है। उसका कोई साइंस से लेना–देना नहीं है। वेदान्त और विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हुए। वेदान्त है– शास्त्र के पार जाना– वह है मार्ग और विज्ञान है– उपलब्धि– विशेष ज्ञान की प्रतीति, अनुभूति, साक्षात्कार, विश्वास नहीं अपना अनुभव और तभी जीवन का सुनिश्चित अर्थ पता चलता है जिसने वेदान्त के साधन से विज्ञान को उपलब्ध किया है, उसे जीवन का अर्थ और अभिप्राय पता चलता है। उसके बिना जीवन का अर्थ पता नहीं चलता।

'संन्यासयोगाद् यतयः शुद्ध सत्वाः'

लोग समझते हैं– संसार को छोड़ दे जो, वह संन्यासी। तो जनक भी संन्यासी नहीं हैं– जिनके पास बड़े–बड़े संन्यासी मार्गदर्शन के लिए आते हैं। अगर संसार में रहकर जान सकते हैं तो संन्यास फिर अपरिहार्य न रहा। परन्तु संन्यास निश्चित ही अपरिहार्य है, अनिवार्य है। संन्यास के बिना कोई भी नहीं जान सकता। तो हमें संन्यास के सही अर्थ को जानना पड़ेगा। संन्यास का अर्थ संसार को छोड़ देना नहीं है। संन्यास का अर्थ है– असार, व्यर्थ को हम पकड़े हुए हैं, उसका छूट जाना–छोड़ना नहीं, छूट जाना। जैसे भर्तृहरि से तो साम्राज्य छूटा, लेकिन देखने वालों ने समझा छोड़ा। ऐसी ही घटना महावीर व बुद्ध के साथ घटी कच्चे फल को तोड़ना पड़ता है, पका फल अपने आपसे गिर जाता है। और पक कर कोई फल गिरता है, तो न तो वृक्ष को कोई घाव लगता है, न कोई पीड़ा होती है, सिर्फ वृक्ष निर्भार होता है और पके फल को भी कोई पीड़ा नहीं होती। वेद में पके खरबूजे का उदाहरण दिया है। इस प्रकार फल का गिरना बिल्कुल नैसर्गिक है, स्वाभाविक है, आवश्यक है। तो संन्यास लिया नहीं जाता, बल्कि व्यक्ति स्वत: संन्यस्त हो जाता है, विरक्त हो जाता है। स्वामी दयानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द से तो संन्यास परम्परा के शिष्टाचार की औपचारिकता मात्र कराई थी, ताकि कार्याधिक्य में बाधक भोजनादि का बखेड़ा दूर होवे। वे विरक्त होकर तो घर से ही निकले थे। उनके पिताजी व घरवाले पककर बेल से स्वत: अलग हुए फल को पुन: उसी बेल पर लगा देने का निरर्थक प्रयास कर रहे थे, जो हो नहीं सकता था। इसीलिए न हो सका और इसका दूसरा पहलू है– योग। **संन्यास का अर्थ हुआ असार का छूट जाना। योग का अर्थ हुआ– सार से जुड़ जाना। योग का अर्थ होता है– जुड़ना, यह दो पहलू हुए।** योग परम घटना है, जीवन की, जहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है। आजकल दूरदर्शन आदि पर विभिन्न प्रकार की प्रदर्शित की जा रही शारीरिक क्रियाओं (आसनों) का नाम योग रखा हुआ है। बल्कि बिगाड़ कर योगा कहने लगे हैं, जैसे कि कृष्ण का कृष्णा और राम का रामा बना दिया गया है। यह पाश्चात्य उच्चारण की नकल मात्र है। हमें संसार को शुद्ध उच्चारण सिखाना चाहिए, उल्टा हम दीनता–हीनता प्रकट करते हुए अशुद्ध बोलने लगे हैं। यदि हाथ–पैर हिलाने या विभिन्न आसनों को करने का नाम योग मान लिया गया तो सामान्यजन में बड़ी भारी भ्रान्ति घर कर जाएगी और वास्तविक योग को लोग भूल ही जाएँगे। फिर तो हमारे हाली–पाली सब योगी हैं।

संन्यास नकारात्मक है। कचरे को छोड़ दिया, खाली कर लिया अपने को कचरे से– विचारों से, वासनाओं से, इच्छाओं से– और जैसे ही तुम खाली हुए कि परमात्मा से जुड़े। जैसे ही तुम खाली हुए कि तुम मिटे और परमात्मा ही बचा। तभी तो शास्त्र बोलता है– **अहम् ब्रह्मास्मि।** उस परम मिलन का नाम योग है। संन्यास पहलू का एक हिस्सा और योग पहलू का दूसरा हिस्सा। संन्यास नकारात्मक, योग विधायक। जैसे वेदान्त नकारात्मक– शब्द को छोड़ो और विज्ञान विधायक– ताकि तुम उस विशेष अनुभूति, विशेष ज्ञान को उपलब्ध हो जाओ, जो जीवन को धन्य कर देती है। ऐसे व्यक्ति शुद्ध होता है, शुद्ध सत्व को उपलब्ध होता है।

'ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले'

मृत्यु के बाद ऐसा व्यक्ति ब्रह्मलोक में प्रवेश करता है।

'परामृता परिमुच्यन्ति सर्वे'

और ब्रह्मलोक में पहुँचकर मरने के बाद वह सर्वरूपेण मुक्त हो जाता है। यह व्याख्या एकदम ही भ्रान्त है। ब्रह्मलोक कोई भौगोलिक स्थान नहीं है कहीं आकाश में। ब्रह्मलोक है तुम्हारे भीतर उस अनुभूति का नाम। वेदान्त से विज्ञान, संन्यास से योग और इन सबको एक शब्द में कहा जा सकता है– ब्रह्मसाक्षात्कार, ब्रह्मानुभूति, ब्रह्मलोक में प्रवेश। तुम्हारा अन्तर्मन अभी भी ब्रह्मलोक में ही स्थापित है और मृत्यु के बाद यह घटना नहीं घटती, जीवन में ही घटती है। जब स्वामी जी को भयंकर विष दे दिया गया था और वे अजमेर में भिनाय कोठी में उपचाराधीन थे, तब उनसे पूछा गया कि स्वामीजी क्या स्थिति है? तो उत्तर दिया कि ब्रह्म में स्थित हूँ। फिर पूछा कि हम तो शरीर के बारे में पूछ रहे हैं, तो बोले शरीर का क्या है, यह तो बनने–बिगड़ने वाली वस्तु है। लेकिन जीवन में भी मरने की एक कला है। जहाँ अहंकार मिट गया, वहाँ मृत्यु घट गई। अहंकार की मृत्यु पर घटती है, यह बात। शरीर की मृत्यु से इसका कोई लेना–देना नहीं है। क्योंकि शरीर मर भी जाए और अहंकार बना रहे, तो तुम फिर दूसरा शरीर ग्रहण करोगे। जब अहंकार मिट गया तो तुम शरीर से मुक्त हो गए। इसलिए हमने जनक को विदेह कहा है। देह में रहते हुए, संसार में रहते हुए विमुक्त कहा है। इस प्रकार की स्थिति में देह के अन्त के पश्चात् आत्मा बन्धनों से मुक्त होकर अपने जीवन के चरम और परम लक्ष्य मोक्ष को उपलब्ध हो जाता है। ■

संस्कारों के अभाव में भारतीय संस्कृति का उपहास

डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

युग परिवर्तन संसार का नियम है। जैसे–जैसे हमारा प्यारा भारतवर्ष देश जीवनोपयोगी साधन उपसाधनों के निर्माण में विकसित होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। वैसे–वैसे हमारे आचार–विचारों में भी विपरीत दिशा में परिवर्तन आ रहा है। पहले हमारे देश में लोग सादा जीवन उच्च विचार वाले होते थे और अब जीवन तो सादा रहा नहीं, विचार भी दिन–प्रतिदिन गिरते जा रहे हैं। **हमारी प्राचीनतम आचार–संहिता से प्रभावित होकर अन्य देश प्रेरणा लेते थे और भारत भ्रमण पर आते थे। भारतीय ज्ञान–दर्शन प्राप्त करने के लिए आतुर रहते थे। अत्यन्त विडम्बना है कि आज हमारे बच्चे उस पुरातन संस्कृति को उपहास बना रहे हैं। जिस पर चलकर हमारे पूर्वजों ने सम्पूर्ण विश्व में अपना गौरव स्थापित किया था। आज उन आचार–विचारों का अनुसरण करने वालों को हम अपने ही देश में 'बैकवर्ड' कहकर पुकारते हैं। इससे बड़ी निर्लज्जता की बात हमारे लिए और क्या होगी? यही तो अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव है। हमारी आँखों के सामने ही आज हमारा समाज फूहड़ बन रहा है। हम लोग इसका विरोध भी नहीं कर पा रहे। समाज में फूहड़ता फैलाई जा रही है और हम मौन हैं। याद रखिएगा जब कभी भी स्वेच्छाचारिता में आकर कुचेष्टा करने वालों का विरोध न करके मौन साध लिया गया। बड़े–बड़े दिग्गज महात्माओं द्वारा उस समय महाविनाश हुआ है।** ऐसे ही मौन साधा था आचार्य द्रोण ने, पुत्रमोह में पड़कर महाराज धृतराष्ट्र ने और पितामह भीष्म ने यदि उस समय इन महात्माओं ने मौन नहीं साधा होता तो महाभारत नहीं होता और आज हमारे देश का मानचित्र ही कुछ और होता। महाभारत के पश्चात् भी हमारे देश आर्यावर्त्त में इतने महान् आचार्य हुए जिन्होंने भारत की पुण्य धरा की आततायियों से रक्षा की। चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने क्या भारत बनाया था? इतना शक्तिशाली और महान् कि सिकन्दर का सेनापति चन्द्रगुप्त को अपनी बेटी तक देकर गया था ताकि भारत से रिश्ता अच्छा बना रहे। चन्द्रगुप्त और चाणक्य तो चले गए और देखते ही देखते हमारा वो भारत लुप्त हो गया। आज का भारत भी कोई भारत है, बिना सिन्ध के, बिना सिन्धु नदी के भारत क्या है? कटा–पिटा भारत है ये और ये सबकुछ ही हमारी ही आँखों के सामने हुआ है। आज हम बात करते हैं कि ११वीं सदी में पृथ्वीराज चौहान मोहम्मद गौरी से लड़ रहे थे तो बाकी हिन्दू राजा क्या कर रहे थे? आज हम अपने ही उन पूर्वजों को कोसते हैं, उनके भेदभाव की आलोचना करते हैं, साफ शब्दों में कहें तो हम अपने ही पूर्वजों को गालियाँ देते हैं। महाराणा प्रताप अकेले अकबर से लड़ रहे थे तो बाकी हिन्दू कहाँ थे? शिवाजी महाराज अकेले औरंगजेब से लड़ रहे थे तो बाकी हिन्दू कहाँ थे? कुछ हिन्दू लड़ते रहे और अधिकतर नपुंसक की भाँति देखते रहे और भारत का नाश, भारत के टुकड़े–टुकड़े भारतीयों के आँखों के सामने ही हुए। अभी ७० वर्ष पहले ही तो हमारे आँखों के सामने हमारे भारत के ३ टुकड़े हुए। आज भी भारत का लगातार नाश हो रहा है, जिहादी और सैक्युलर ताकतें तो भारत को तोड़ रही है। **हमारा फिल्मी जगत् भी पीछे नहीं है,** ये समाज को और युवा पीढ़ी को खोखला कर रहा है। आज हमारे युवा पीढ़ी के आदर्श कौन हैं? सैनिक है क्या? नही, सारे के सारे फिल्मबाज और फिल्मी भाण्ड हैं। असली सैनिकों को तो कोई विरला ही पूछता है पर फिल्मी भाण्डों को इज्जत अपार मिलती है। ये फिल्मी भाण्ड गालियों तक के गीत बना रहे हैं। **अश्लीलता को बेचकर पैसा कमा रहे हैं। ये हमारी युवा पीढ़ी को खोखला कर रहे हैं।** १० मई २०१७ को जस्टिन बीबर कनाड़ा में भारत में अपना हुनर दिखाने आया था तो यहाँ के कुछ ज्यादा अंग्रेजी पढ़े–लिखे अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम इण्डियन लोग इसको देखने–सुनने के लिए ४००० से ७७००० रुपए तक टिकट पर खर्च कर गए। ये ९० मिनट में अरबों रुपया लेकर पढ़े–लिखे लोगों को बेवकूफ बनाकर चला गया। ये वही लोग हैं जो किसी गरीब, जरूरतमन्द को १० रुपए देने से पहले १० प्रश्न पूछते हैं और फिर जरूरी नहीं कि पैसे देंगे भी... इस संस्कारहीन उज्जड़ बेतुके से लाख गुणा अच्छा तो हमारे यहाँ बस, ट्रेन आदि में डफली बजाने वाला गाता है अब समझ में आया। भारत इतना गौरवशाली इतिहास रखने के उपरान्त भी पराधीन कैसे रहा...? ऐसे संस्कारहीन पढ़े–लिखे अनपढ़ों की बहुतायत की वजह से। विदेशी हमारे सत्य सनातन संस्कारों के दिवाने हुए जा रहे हैं और यहाँ के महामूर्ख अपनी संस्कृति को नष्ट करने पर तुले हुए हैं और ये सब कुछ हमारी आँखों के सामने ही तो हो रहा है। इसलिए ऐ ऋषियों की सन्तानो! समय रहते चेत जाओ नहीं तो बहुत बुरा समय आएगा, तब कुछ हाथ न लगेगा।

इसमें सबसे बड़ा दोषी शासक वर्ग भी है। यदि यही चलता रहा तो आने वाले कल में हमारे समाज में बलात्कारियों और अश्लीलता का धन्धा करने वाले लोगों की संख्या बहुत होगी और हम उस समय खुद

को ही कोसेंगे कि हमने इनका विरोध क्यों नहीं किया, हमारा देश और हमारा समाज हमारी ही आँखों के सामने मर रहा है और हम चुनाव के अवसर पर भी मौन है, इतिहास हमें ही दोषी बताएगा। जैसे हम पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण को जो भरी सभा में मौन थे उनको दोष भरी दृष्टि से देखते हैं और सोचते हैं कि काश! उस समय उन धनुर्धर एवं धर्मधुरन्धरों ने चुप्पी न साधी होती तो आज भारत की ये दुर्दशा न होती। विदेशी आक्रान्ताओं की हमारे देश की ओर दृष्टि उठाने की हिम्मत ही नहीं होती, इसलिए आप स्वयं ही विचार कर लीजिए कि आज अगर हमने विरोध नहीं किया तो भविष्य में क्या स्थिति होगी?

आधुनिक परिवेश में एडवांस होने के नाम पर जब अश्लीलता का धन्धा करने वाली अभिनेत्रियाँ लड़कियों की आदर्श बन जाए और माँ–बहन की गालियों का गाना बनाने वाला भाण्ड लड़कियों का हीरो बन जाए तो ऐसी लड़कियों की कोख से देशभक्त, सन्त, योद्धा एवं वीर नहीं बल्कि बलात्कारी ही उत्पन्न होंगे। आज की वर्तमान स्थिति पर नजर डालते हैं तो सोचता हूँ कि राष्ट्र की कर्णधार युवा पीढ़ी किस ओर जा रही है, बिना हैलमेट, बिना लायसेंस कानून की धज्जियाँ उड़ाते हुए एक ओर जहाँ १३–१४ वर्ष के भावी युवा एक बाइक पर तीन–तीन बैठकर, मोबाइल की लीड लगाकर, गधाकट (जो कटिंग पहले कभी गधों की पहचान के लिए उनके शरीर पर बनाई जाती थी) की डिजाइन में बाल कटिंग करवाकर मर्यादाओं को रौंदते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर १०–१२ वर्ष की भावी युवतियाँ भी पाश्चात्य सभ्यता का जीवन जीने की इस दौड़ में पीछे नहीं है, टी–शर्ट व जींस की पैंट या निक्कर वो भी जाँघों का जरा सा हिस्सा ढँकी हुई पहने, हाथ में मोबाइल लेकर डांस–बार या क्लब आदि में लड़कों के संग नाच–कूद करती हुई पता नहीं किस मार्ग पर चल पड़ी है। और जब मैं बाइक पर किसी युवा लड़के के पीछे, अश्लील मुद्रा में चिपककर, उसकी कमर की खप्पी भरकर बैठी उसकी गर्लफ्रैंड को देखता हूँ तो मेरा रक्त उबल पड़ता है और सोचता हूँ क्या यही है भारतीय संस्कृति का प्रारूप? ये तो भारतीय जीवन शैली बिल्कुल नहीं है फिर भारतीय जीवन शैली जी रहे लोग क्यों चुप्पी साधे हुए हैं। हमारे यहाँ की जीवन शैली अर्थात् आचार–संहिता में ऐसी कौनसी न्यूनता इस नई पीढ़ी को दिखती है? क्यों आधुनिकता के नाम पर ये पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति की ओर खिंचते चले जा रहे हैं? विलासिता से पूर्ण इस जीवन शैली को जीने के लिए आज हमारी युवा पीढ़ी किस प्रकार भटक गई है? इसका दोषी कौन है? विकास की आड़ में कौन सा पतन भरा पतझड़ युवाओं में आ गया है? वर्तमान समय के इस परिवर्तन को देखकर मन में अनेक प्रश्न उठते हैं। हमें विचार करना ही होगा कि किस प्रकार अपनी आने वाली पीढ़ियों को इस विनाशकारी बाढ़ से बचाया जाए? क्योंकि बाढ़ आने की आशंका हो तो बाढ़ आने से पूर्व ही पुल बाँध देना चाहिए नहीं तो जलप्रलय होती है।

भारतवर्ष की पावन स्थली उसकी रमणीय प्रकृति, शिक्षाप्रद सभ्यता, नवरंगी छटा बिखेरती दिव्य संस्कृति, समाज को बाँधकर रखने वाली पवित्र परम्पराएँ जहाँ मर्यादा के स्वर मुखरित हों, नैतिकता की शिक्षा से समाज को प्रेम का संदेश देकर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती रही है। वहाँ आज इस परिवर्तन के कारण पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि **आधुनिक शिक्षा के नाम पर हो रहा छलावा ही हमारी संस्कृति को नष्ट कर रहा है।** देर रात जागरण, नशा करना, इंटरनेट का खुलकर प्रयोग, मोबाइल में फूहड़ व अश्लील फिल्में देखना, भोजन की मर्यादा का उल्लंघन,शयन–जागरण सब बदल गया। आज स्थिति इतनी भयावह होती जा रही है कि लगभग ४० प्रतिशत माता–पिता को पता ही नहीं है कि उनका लाड़ला, उनकी आशाओं, उनके भविष्य का केन्द्र घर से कब जाता है और कब वापस आता है और कहाँ जाता है, क्या करता है? आज के माता–पिता बच्चों के सामने इतने अशक्त हो गए हैं कि वो अपने कर्त्तव्यों का सख्ती से पालन करने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं और सन्तानों के वशीभूत होकर, भय के मारे उनकी स्वच्छन्दता को बढ़ावा दे रहे हैं। आए दिन बच्चों द्वारा आत्महत्या और घर छोड़कर भाग जाने वाली खबरों को देख–सुनकर मात्र एक–दो सन्तानों को रखने वाले माता–पिता इतने भयभीत हैं कि वे सोचते हैं कि अगर उन्होंने अपने बच्चों के साथ ज्यादा सख्ती बरती या उनकी किसी अनावश्यक बात को ना माना तो वे कुछ बुरा न कर बैठें। बस बच्चे माता–पिता की इसी शिथिलता का लाभ उठाकर उन्हें जीवन भर अपनी उंगली पर नचाते रहते हैं और माता–पिता बेचारे कोल्हू के बैल के समान उनकी खुशियों को पूरा करने के लिए दिन–रात दौड़ते रहते हैं।

कभी अपने बच्चों को चाहकर भी नैतिक मूल्यों का पालन करना नहीं सिखा पाते, कभी संस्कार और मर्यादा का पाठ नहीं पढ़ा पाते क्योंकि वह ये मान बैठे हैं कि वास्तव में अगर उन्होंने संस्कार, मर्यादा और जीवन में आगे बढ़ने के लिए अत्यावश्यक नैतिक मूल्यों का पालन करने की बाबत बच्चों पर जरा भी दबाव देंगे तो वे अवश्य ही कुछ गलत कदम उठा बैठेंगे और बहुत से माता–पिता तो ये कहकर बात टालने की कोशिश करते हैं कि बच्चों की प्रसन्नता के लिए बच्चों की बात माननी पड़ती है। उनकी सबसे बड़ी गलती यही होती है, लेकिन मेरा मानना है कि **केवल वही माता–पिता बच्चों की हठ कह लो या स्वच्छन्दता के आगे झुकते हैं जो कहीं ना कहीं स्वयं भी आधुनिकता के नाम पर डगमगाए हुए होते हैं।** नहीं तो क्या जिन बच्चों को प्रसन्न देखने के लिए वे उनकी हर बात मानते हैं या वे बच्चे अपने माता–पिता की छोटी–छोटी इच्छाओं पर ध्यान नहीं देंगे? जरूर देंगे लेकिन कब? ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

समग्र श्रेष्ठता का द्योतक 'पण्डित'

सृष्टिकाल से भारत शिक्षा, संस्कृति, संस्कार साधन का साधक रहा है और उक्त ज्ञान-विज्ञान को संसार को देकर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को चरितार्थ किया है। यह कार्य आदि ऋषि ब्रह्मा से लेकर गौतम, कपिल, कणाद, विश्वामित्र, भृगु, वेदव्यास, गार्गी, सुलभा, मदाल्सा, मैत्रेयी, अनुसूया, श्रुतावती, शिवा, द्रोपदी, उत्तरा, भोज पत्नी विद्यावती, महर्षि वेदव्यास, जैमिनी पर्यंत को पण्डित-पण्डिता शब्द से संबोधित किया है। महर्षि दयानन्द ने श्री रामचंद्र और श्री कृष्णचंद्र को भी आप्त पुरुष के साथ पण्डित शब्द से अलंकृत किया है। पण्डित शब्द **'पडिँ'** गतौ धातु से पण्डा शब्द सिद्ध होता है। पण्डा इति ज्ञानं बुद्धिर इति। न्याय दर्शनकार भी कहता है। **बुद्धिर उपलब्धिर् ज्ञानम् इत्यनर्थान्तरम्** अर्थात् बुद्धि, उपलब्धि और ज्ञान तीनों ही शब्द एक ही अर्थ वाले हैं। जिसमें शुद्ध सात्विक बुद्धि हो, वही पण्डित है।

प्राचीन काल से ही शिक्षा-दीक्षा देने वाले को पण्डित बोला जाता था। पचास वर्ष पहले तक भी विद्यालयों में विशेषकर प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाले को पण्डित जी बोला जाता था। चाहे वह किसी वर्ण अथवा आज की जाति व्यवस्था से हो। सर या मास्साब का प्रचलन नहीं था। किसी समय पण्डित की इतनी महिमा थी कि उनको सभ्य समाज समादर की दृष्टि से देखता और मुक्त कंठ से प्रशंसा करता था। वास्तव में पण्डित शब्द बुद्धिमान होने का द्योतक है। कश्मीर में किसी भी वर्ण एवं जाति का मनुष्य हो सभी अपने को पण्डित लिखते हैं। इस्लाम के खतरे से बचने के लिए एक संघ की स्थापना की। उसी संघ के कारण सब पण्डित बोलने लगे। आज भी यदि कोई व्यक्ति शुद्ध संस्कृत अथवा आर्य भाषा (हिंदी) बोलने लगता है तो उसे भी लोग कहने लगते हैं कि अरे! अब तो तू पण्डित हो गया है। अतः पण्डित ज्ञान और संस्कार का बोधक है। अर्थात् जिसमें विद्या का पाण्डित्य हो, और विद्या के

गजेन्द्रसिंह आर्य

पूर्व प्राचार्य, वैदिक प्रवक्ता
जलालपुर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११,

अनुकूल आचरण हो वही पण्डित है।

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्थानापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते।।

जिसको परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान हो, जो आलस्य और प्रमाद को छोड़कर सदा उद्योगी, सुख-दुःखादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करता हो जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ाकर अधर्म की ओर प्रवृत्त न करे, वही पण्डित कहलाता है।

प्रवत्त वाक चित्रकथ ऊहवआन प्रतिभानवान।
आशु ग्रन्थस्थ वक्ता च यः स पण्डित उच्यते।।

जिसकी वाणी सब विद्याओं में पारंगत, अत्यंत अद्भुत विद्याओं की कथाओं को करने, तर्क एवं वाक् शक्ति का विज्ञ, समस्त विद्याओं का शिरोमणि हो, ग्रन्थों का पाठक हो, और पढ़ाने वाला हो, वही पण्डित है। विदुर नीति महाभारत के अनुसार पण्डित शब्द की सुंदर व्याख्या की गई है यथा

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीः स्तम्भो मान्यमानिता।
यमर्थान् नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते।।

क्रोध, प्रसन्नता, अभिमान, लज्जा, धृष्टता और अपने को मान्य के योग्य समझना, ये दोष पुरुषार्थ से जिस व्यक्ति को नहीं हटाते, वही पण्डित कहलाता है अर्थात् मान ,अपमान, क्रोध, हर्ष, सुख-दुःख में जो समभाव रहता है, वही पण्डित है। वाल्मीकि रामायण में श्री राम के बारे में लिखा है कि राज्याभिषेक और वन गमन पर राम के चेहरे पर समभाव थे।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति,शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिर समृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते।।

जिस व्यक्ति के कार्य को शीत और उष्ण, भय अथवा विष या सवित्त, सम्पत्ति का होना अथवा दरिद्रता का होना भी नष्ट नहीं करते वही पण्डित कहलाता है।

तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते।।

जो मनुष्य सब भूतों के तत्व को जानता है, जो योग के द्वारा सब कर्मों की कुशलता को जानता है और जो कर्म सिद्धि के उपायों को जानता है, वह नर पण्डित कहलाता है। **जरा मृत्युं भयं व्याधिं यो जानाति स पण्डितः।** भोज प्रबन्ध अर्थात् जरा, मृत्यु, भय और व्याधि को जो जानता है वही पण्डित है।

विप्रोऽपि भवनं मूर्खः मूर्खश्चेद् बहिरस्तु मे।
कुम्भकारोऽपि विद्वान, सः तिष्ठतु पुरे मम।।

यदि विप्र होकर कोई मूर्ख है तो वह मेरे नगर (राज्य) से बाहर चला जावे, कुम्भकार होकर विद्वान् है तो मेरी नगरी (राज्य) में निवास करे। विचार करने योग्य है कि भोज प्रबन्ध अर्थात् राजा भोज के शासन में कितनी सुन्दर व्यवस्था, प्रबन्धन होगा।समाज को दिशा देने वाले का विद्या के अभाव में अवनयन (डिमोशन) और विद्या के धनी कुम्भकार आदि समस्त उद्यमियों का उन्नयन (प्रमोशन)

की कैसी स्वस्थ परम्परा थी, अनुशासन था। आज भी समाज एवं सरकार भोज प्रबन्धानुसार शासन सुराज्य करें तो वैदिक सनातन शिक्षा को बल मिलेगा।

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।

विद्या विनय से संपन्न जो मनुष्य ब्राह्मण, गौ, हाथी, कुत्ते और चांडाल में एक जैसा देखता है वही पण्डित कहा जाता है - गीता

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु, लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डित।।

जो मनुष्य दूसरे की स्त्रियों को माता के समान, दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान, सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान देखता है वही ज्ञानी है, वही पण्डित है।

विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्।
नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वी प्रसववेदनाम्।।

विद्वान् मनुष्य के परिश्रम को विद्वान् लोग ही जान सकते हैं, मूर्ख नहीं जैसे वन्ध्या स्त्री प्रसव की कठोर पीड़ा को नहीं जानती।

स्वगृहे पूज्यते मूर्खः स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

मूर्ख की पूजा अपने घर में होती है, धनवान् (मालिक) दम्भी की पूजा ग्राम में होती है, राजा की पूजा अपने राष्ट्र (देश) में होती है परंतु विद्वान् की पूजा सर्वत्र होती है।

सततं मूर्तिमन्तश्च, वेदाश्चत्वार एव च।
सन्ति यस्याश्च जिव्हाग्रे, सा च वेदवती स्मृता।।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण १४/६४)

चारों वेदों के २०३८९ मंत्र विदुषी वेदवती के जिव्हाग्र व कण्ठस्थ थे इसी से वेदवती के नाम से पुकारा जाता था । वह तो पण्डितों की प्रमुख पण्डिता थी। ऐसी एक नहीं, अनेक ब्रह्मवादिनी पण्डिता थीं जिन्होंने अपने कालखण्ड में विदेह राज महाराज जनक को सुलभा ने, महर्षि याज्ञवल्क्य को गार्गी ने, पं मण्डन मिश्र की पत्नी पं. उभय भारती ने आद्य शंकराचार्य को निरुत्तर कर दिया था। ये सब ब्रह्मवादिनी वेदवती विदुषियाँ थी। आज भी उन्हीं के सुपथ पर चलकर आधुनिक युग की ब्रह्मवादिनी ऋषिकाएँ महापण्डिता महिलाएँ वैदिक धर्म का प्रचार करती हुई मिल जाएगीं। महापण्डिता प्रज्ञादेवी को पौराणिक और आर्य जगत् में कौन नहीं जानता? पाखण्ड पोपनगरी काशी में कोई भी संत, महन्त, पण्डा, पुजारी पौराणिक संन्यासी कभी शास्त्रार्थ हितार्थ साहस नहीं कर सका। ऐसी ही विदुषी आज की गार्गी और सुलभा की तरह हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं। आज भी आचार्या सूर्या देवी, व्याकरण सूर्या नन्दिता शास्त्री, आचार्य धारणा जी, आचार्य प्रियंवदा, आचार्य सुकामा, आचार्य सुमेधा, आचार्य पवित्रा भी कन्या गुरुकुलों में पण्डिता बनाने में अनवरत साधनारत हैं। गुरुकुलीय शिक्षा ही मानव निर्माण की प्रयोगशालाएँ हैं। इसी के साथ स्वामी रामदेव भी पतंजलि योगपीठ के माध्यम से विशेष प्रशिक्षण देकर पण्डित और पण्डिताः बनाने में योगदान दे रहे हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रादुर्भाव के कारण ही सनातन संस्कृति को सम्बल मिला है, उन्हीं के कारण नारी उत्थान में शिक्षा संस्कार में जो अतुलनीय परिवर्तन हुआ है। उन्हीं का उद्घोष **'नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** के कारण समाज और संस्कारों में आज जागरूकता आई है। महिलाओं को पण्डिताः बनाने में विश्व पटल पर जो कार्य दयानन्द ने किया है कोई अन्य महापुरुष नहीं कर सका। वे नारी उत्थान के सबसे बड़े अधिवक्ता थे। आइये हम सब महर्षि दयानन्द के सुपथ पर चलकर अच्छे पण्डित-पण्डिताः, पुरोहित बनाने का संकल्प लें क्योंकि समाज को दिशा और दशा देने का कार्य पण्डित ही करता है। **संश्रुतेन् गमेमहि।** ■

प्रसन्नता हो मुख पर

आर्य पी.एस. यादव

प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

खुशियों के बीच में रोड़ा, कभी अटक जाता है थोड़ा।
उसको हटाना ही तो, पुरुषार्थ होता है।
पर तू नहीं करता है, तब ही तो रोता है।।
सुख के लिए कुछ द्वार, खुले मिलते है कई बार।
पहचान करके इनकी, इनमें नहीं जाता है।
तब ही तो बाद में, तू खुद पछताता है।
इसको ही कहते है, आया था सुनहरा मौका।
लाभ नहीं ले पाये तब, अकल दे गई थी धोखा।।
ऐसे ही जीवन की, ये गाड़ी चलती है।
कहीं गड्ढे मिलते हैं, तो कहीं ठोकर मिलती है।
कहीं प्यार मिलता है, तो कहीं घृणा मिलती है।
सबके लिए जिम्मेदार, तू खुद भी नहीं होता है।
फिर काहे को खुद को, कोस–कोस कर रोता है।।
छोटे–छोटे मौके भी, खुशियों के ना छोड़ो।
जिनसे मिलते हैं दुःख, ऐसे रिस्ते तोड़ो।
यही बात समझदारी की, सिद्धान्त यही कहता है।
इस पर अमल नहीं करता, इसीलिए सहता है।।
सबसे बड़ा है रोग कि क्या कहेंगे लोग।
इससे डर कर चुप है, तो ऐसे ही फिर भोग।
जीवन सुखी करना है, तो इन सबसे नहीं डरना है।
सन्मार्ग को चुन लो, सिद्धान्त की सुन लो।
जीवन का ताना-बाना, अच्छी तरह बुन लो।।
फिर तय करो मंजिल, दुनिया तकती रह जाए।
सोच रखो ऊँची, चाहे महल नहीं बन पाए।
चाहे दुनिया पर न छा पाओ,पर सुन्दर बसा हो घर।
जब जाएँ इस दुनिया से, तब प्रसन्नता हो मुख पर।।

ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन, टंकारा प्रस्थान से पूर्व दयानन्द आश्रम, बड़वानी के विद्यार्थियों ने किया जनजागरण

संसार के श्रेष्ठतम कर्म देवयज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान करते भा.ज.पा. जिलाध्यक्ष कमलनयन जी इंगले, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बड़वानी जिला प्रचारक आशीष जी लश्कन व वरिष्ठ समाजसेवी नारायणराव जी दासौंधी एवं उपस्थित गणमान्य महानुभाव तथा आश्रम के बालक-बालिकाएँ। (विस्तृत विवरण पृष्ठ ३५ पर)

मंचस्थ महानुभाव और महर्षि दयानन्द ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन व टंकारा यात्रा पर प्रकाश डालते आश्रम संचालक

श्री भगवान् जी सेप्टा एवं श्री कमलनयन जी इंगले प्रेरणादायी उद्बोधन प्रदान करते हुए

कमलनयन जी इंगले को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते डॉ. दीपक शर्मा

आशीष जी लश्कन को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते हीरालाल यादव

नारायणराव जी दासौंधी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते बद्रीप्रसाद सोनी, जालना

भगवान् जी सेप्टा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते महेश शर्मा, इन्दौर

केशवजी चौहान को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते आर्यवीर जगदीश व अनिल

डॉ. सुहाष जी यादव को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते जगदीश शर्मा

जगदीश जी मुकाती (जड़ी-बूटी) को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते पर्वत मौर्य

मनीष जी शर्मा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते पर्वत मौर्य

श्रीमती आशा डावर को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित करते श्रीमती श्यामा शर्मा

आगंतुक महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा

कमलनयन जी इंगले एवं नारायणराव जी दासौंधी अपने करकमलों से ओ३म् व तिरंगा ध्वज प्रदान कर यात्रा दल को प्रस्थान करते हुए

यात्रा दल के सदस्य नगर के प्रमुख मार्गों से भ्रमण कर उद्घोषों के माध्यम से जनजागृति करते हुए

आर्य समाज की सम्पन्न विविध गतिविधियाँ

आर्य जगत् के उच्च कोटि के मूर्धन्य वैदिक विद्वान् योगेश जी भारद्वाज की ऋषि बोधोत्सव इन्दौर में गरिमामयी उपस्थिति। (विस्तृत समाचार पृष्ठ २३ पर)

वैदिक संसार के यशस्वी सम्पादक ओमप्रकाश जी आर्य की बड़वानी यात्रा के समय आपके ब्रह्मत्व में आश्रम पर साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग में विद्यार्थियों को प्रेरणादायी उद्बोधन (विस्तृत समाचार पृष्ठ ३३ पर)

महर्षि दयानन्द आश्रम बड़वानी पर आचार्य प्रणवीर जी के ब्रह्मत्व में प्रथम मासिक अतिथि यज्ञ एवं सुपौत्र देवप्रज्ञ का अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न (विस्तृत समाचार पृष्ठ ३६ पर)

ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन टंकारा में दयानन्द आश्रम बड़वानी के विद्यार्थियों व परिजनों की उपस्थिति व वैदिक संसार विशेषांक का विमोचन एवं स्टेच्यु ऑफ यूनिटी यात्रा के अविस्मरणीय पल

(विस्तृत विवरण पृष्ठ ३५ पर)

ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन आयोजन स्थल के मुख्य द्वार पर यात्रा दल के सदस्य उद्घोष करते हुए

महासम्मेलन आयोजन स्थल के पुस्तक बाजार में वैदिक संसार के स्टाल पर देवयज्ञ करते सदस्यगण

सामूहिक सन्ध्योपासना पश्चात् लिया गया चित्र

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् परोपकारी सभा पत्रिका के सम्पादक डॉ. वेदपाल जी एवं डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री के वैदिक संसार स्टाल पर पधारने पर विशेषांक की प्रति भेंट की गई।

यज्ञ पश्चात् यात्रा दल के सदस्य आयोजन स्थल पर उद्घोष लगाकर जनजागृति करते हुए

हर्षित एवं उल्लासित सुपौत्र वैदिक शर्मा ओ३म् ध्वज हाथ में फहराते हुए यात्रा दल की अगुवाई करते हुए

मुनि सत्यजीत जी और मुनि ऋतमा जी स्टाल पर पधारे और शुभाशीष प्रदान किया

डॉ. विरोत्तम जी मेरठ, डॉ. अशोक जी आर्य उदयपुर व प्रकाश जी आर्य महू ने स्टाल पर पधारकर आशीर्वाद प्रदान किया

स्वामी श्रेयस्पति जी वानप्रस्थ साधक आश्रम को विशेषांक प्रति भेंट की गई

आचार्य सन्दीप जी रैकवार भोपाल विशेषांक प्रति प्रदर्शित करते हुए

स्वामी ऋतस्पति जी आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद को विशेषांक प्रति भेंट करते प्रतिनिधि ओमप्रकाश आर्य

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के चरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते समस्त भक्तजन

सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक पर यात्रा दल के समस्त सदस्य

सतपुड़ावादियों एवं नर्मदा नदी के विहंगम दृश्य का आनन्द लेते समस्त सदस्यगण

'महर्षि दयानन्द सरस्वती : हिन्दू एकात्मकता एवं शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक' विषय पर व्याख्यान तथा इन्दौर महानगर में ऋषि दयानन्द बोधोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ

महर्षि दयानन्द सरस्वती के २०० वें जन्म दिवस की वेला में माँ अहिल्या सामाजिक न्यास एवं आर्य समाज, इन्दौर के संयुक्त तत्वावधान में देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के तक्षशिला परिसर, खण्डवा रोड, इन्दौर के वातानुकूलित सभागार में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती : हिन्दू एकात्मकता एवं शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक' विषय पर प्रमुख वक्ता के रूप में पधारे पाणिनि आर्ष विद्याकुलम बढ़ेड़ी, मुज्जफरनगर, (उ.प्र.) के कुलपति आचार्य योगेशजी भारद्वाज 'विद्यार्थी' एवं मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश जी शास्त्री मालवा प्रान्त के प्रान्तीय संघ संचालक राष्ट्रीय स्वयं संघ एवं कृषि वैज्ञानिक व कृषि महाविद्यालय खरगोन के सेवानिवृत्त अधिष्ठाता, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाशजी आर्य, आयोजन के आयोजक माँ अहिल्या सामाजिक न्यास के अध्यक्ष डॉ. रमेशजी नीखरा पूर्व चिकित्साधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित व्याख्यान दिनांकः ९ मार्च को सायंकाल ६ बजे से रात्रि ८ बजे तक सम्पन्न हुआ। मंचस्थ अतिथियों का सम्मान गायत्री मन्त्र पट्टिका पहनाकर वैदिक संसार विशेषांक प्रति भेंट कर किया गया। इस अवसर पर वैदिक संसार द्वारा प्रकाशित विशेषांक के वैदिक सिद्धान्तों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन के समस्त पृष्ठों की फ्लेक्स बैनर प्रदर्शनी लगाई गई एवं वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया। मंच संचालन मेजर ऋषि तिवारी ने किया आयोजन के प्रमुख सूत्रधार एवं कर्ताधर्ता विजय प्रकाश जी गोयल, प्रधान : नगर आर्य समाज इन्दौर रहे। इन्दौर शहर एवं बाहर से पधारे प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों ने व्याख्यान का लाभ प्राप्त किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध रात्रि (शिवरात्रि) की वेला में इन्दौर महानगर की समस्त आर्य समाजों का संयुक्त रूप से प्रतिवर्षानुसार आर्य समाज दयानन्दगंज में दिनांक : १० मार्च २०२४ रविवार को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता एवं आर्य जगत् के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान्, क्रान्तिकारी ओजस्वी वक्ता योगेश जी भारद्वाज के मुख्य आतिथ्य में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

सर्वप्रथम आचार्य विश्वामित्र जी के ब्रह्मत्व में एवं कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया की ब्रह्मचारिणियों द्वारा मन्त्रपाठ में देवयज्ञ किया जाकर आचार्य प्रज्ञादेवी द्वारा यज्ञ महिमा पर प्रकाश डाला गया मुकेश कनोड़िया तथा नीरज शर्मा के द्वारा भजनों की प्रस्तुति प्रदान की गई।

प्रमुख वक्ता ने डिस्कवरी ऑफ़ इण्डिया के कुछ तथ्यों को केन्द्र में रखकर **वेद पौरुषेय है या अपौरुषेय** विषय पर प्रकाश डाला और सिद्ध किया कि वेदज्ञान और वैदिक सिद्धान्तों से विमुख होने के कारण मनुष्य का पतनगामी विनाश हुआ है। प्रकाश जी आर्य के द्वारा अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ऋषि दयानन्द के दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला तथा अपने द्वारा ऋषि महिमा को समर्पित वीडियो का श्रवण उपस्थितों को करवाया गया। प्रकाश जी द्वारा वैदिक संसार विशेषांक के विषय में उपस्थित सज्जनों को अवगत करवाते हुए बताया गया कि यह विशेषांक आर्य समाज के इतिहास में विलक्षण तथा अद्भुत है। यह विशेषांक आर्य समाज ही नहीं अपितु प्रत्येक आर्य समाजी के घर में होना चाहिए।

इस अवसर पर आर्य समाज इन्दौर की एक वेबसाइट का भी लोकार्पण योगेश जी भारद्वाज के करकमलों द्वारा किया गया। मंच संचालन रूपनारायण मालवीय संस्था मंत्री द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन हरीश शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मल्हारगंज द्वारा ५०% अल्प मूल्य पर सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध करवाया गया। शान्ति पाठ तथा स्नेहभोज के साथ आयोजन का समापन किया गया। **(चित्र देखें पृष्ठ २० पर)**

महिला परिशिष्ट

आओ! महिला दिवस मनाएँ

श्रीमती पूजा शर्मा

विजय नगर, अजमेर (राज.)
चलभाष : ७०१४५९५५०२

चारों तरफ यह शोर है, महिला दिवस का जोर है।
क्या चिल्लाने या मीडिया में दिखाने से ही होता है-महिला दिवस?
चलो, आज के दिन की सार्थकता पर संकल्प लिया जाए!
नारी से 'आदर' का व्यवहार हो, अपने घर से ही इसे शुरू किया जाए।।
बेटी-बहन, पत्नी-माता को दे सम्मान, आत्मबल बढ़ाया जाए।
गृहिणी, घरेलू कामकाजी या बाहरी रोजगार, उनके परिश्रम को सम्मान दिया जाए।
बेटा या बेटी भी जब अकड़ने लगे, उनको अपना दायित्व बोध कराएँ।
कोई भी नारी अभद्रता का शिकार हो, मूकदर्शक न बनें, विरोध जताएँ।।
सब देश में एक दूजे से आदर सम्मान से जुड़ जाएँ।
लक्ष्मी-रुक्मिणी-सरस्वती को हर घर की स्त्रियों में पाएँ।
जीवन स्वतः स्वर्ग बन जाए और जन-जन धन्य हो जाएँ।
फिर हर नर देवता, नारी देवी में बदल जाएँ,
आओ! ऐसा महिला दिवस मनाएँ।।

महर्षि दयानन्द जी के अनमोल विचार

सत्यकेतु आर्य (शास्त्रीजी)

२३/३, शास्त्री नगर, निकट काली मठिया मन्दिर, कानपुर (उ.प्र.)

चलभाष : ९८३९१११६८३, ९११९८१६०३२८

१. ''ये 'शरीर' 'नश्वर' है, हमें इस शरीर के माध्यम से मात्र एक अवसर मिला है, स्वयं को सिद्ध करने का कि **'मनुष्यता'** और **'आत्मविवेक'** क्या है।''

२. ''वेदों में वर्णित सार का पान करने वाले ही ये जान सकते हैं कि **'जीवन'** का मूल उद्देश्य क्या है।''

३. ''क्रोध का भोजन 'विवेक' है, अत: इससे बचकर रहना चाहिए क्योंकि **'विवेक'** नष्ट हो जाने पर, सब कुछ नष्ट हो जाता है।''

४. **'अहंकार'** एक मनुष्य के अन्दर वो स्थिति लाता है, जब वह **'आत्मबल'** और **'आत्मज्ञान'** को खो देता है।

५. **'मानव'** जीवन में **'तृष्णा'** और **'लालसा'** दु:ख के मूल कारण हैं।

६. **'क्षमा'** करना सबके बस की बात नहीं, क्योंकि ये मनुष्य को बहुत बड़ा बना देता है।

७. **'काम वासना'** मनुष्य के **'विवेक'** को भस्म कर उसे पतन के मार्ग कर ले जाती है।

८. ''लोभ वो अवगुण है, जो दिन प्रतिदिन तब तक बढ़ता ही जाता है, जब तक मनुष्य का विनाश न कर दे।''

९. ''मोह एक अत्यन्त विस्मित जाल है, जो बाहर से अति सुन्दर और अन्दर से कष्टकारी है, जो इसमें फँसा वो पूरी तरह उलझ कर रह गया।''

१०. ''ईर्ष्या से मनुष्य को हमेशा दूर रहना चाहिए, क्योंकि ये **'मनुष्य'** को अन्दर ही अन्दर जलाती रहती है और पथ से भटकाकर पथभ्रष्ट कर देती है।''

११. ''मद **'मनुष्य की वो स्थिति या दिशा'** है, जिसमें वह अपने **'मूल कर्तव्य'** से भटककर 'विनाश' की ओर चला जाता है।''

१२. ''संस्कार ही **'मानव'** के **'आचरण'** की नींव होता है, जितने गहरे **'संस्कार'** होते हैं, उतना ही **'अडिग'** मनुष्य अपने **'कर्तव्य'** पर, अपने **'धर्म'** पर, **'सत्य'** पर और **'न्याय'** पर होता है।''

१३. ''जिस **'मनुष्य'** का मन **'शान्त'** है, **'चित्त'** प्रसन्न है, हृदय **'हर्षित'** है, तो निश्चय ही ये अच्छे कर्मों का **'फल'** है।''

१४.''जिस **'मनुष्य'** में **'सन्तुष्टि'** के **'अंकुर'** फूट गए हों, वो **'संसार'** के **'सुखी'** मनुष्यों में गिना जाता है।''

१५. ''**यश** और **'कीर्ति'** ऐसी **'विभूतियाँ'** हैं, जो मनुष्य को 'संसार' के मायाजाल से निकलने में सबसे बड़ी **'अवरोधक'** होती हैं।''

१६. ''जब **'मनुष्य'** अपने **'क्रोध'** पर विजय पा ले, **'काम'** को काबू में कर ले, **'यश'** की इच्छा को त्याग दे, **'मायाजाल'** से विरक्त हो जाए तब उसमें जो **'दिव्य विभूतियाँ'** आती हैं। उसे ही **'कुण्डलिनी शक्ति'** कहते हैं।''

१७. ''आत्मा **'परमात्मा'** का अलग-अलग अस्तित्व है, आत्मा जिसे हम अपने **'कर्मों'** से **'गति'** प्रदान करते हैं। फिर **'आत्मा'** हमारी **'दशा'** तय करती है।''

१८. ''मानव को अपने प्रत्येक-पल को **'आत्मचिन्तन'** में लगाना चाहिए, क्योंकि हर क्षण हम **'परमेश्वर'** द्वारा दिया गया **'समय'** खो रहे हैं।''

१९. ''मनुष्य की **'विद्या उसका अस्त्र'**, **'धर्म उसका रथ'**, **'सत्य उसका सारथी'** और **'भक्ति रथ के घोड़े'** होते हैं।''

२०. ''इस **'नश्वर शरीर'** से **'प्रेम'** करने के बजाए हमें **'परमेश्वर'** से प्रेम करना चाहिए, **'सत्य और धर्म'**, से प्रेम करना चाहिए; क्योंकि ये 'नश्वर' नहीं हैं।'' ■

पुरोहित चाहिए

हवन प्रवचन एवं वैदिक संस्कार कराने हेतु गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त अनुभवी धर्माचार्य की आवश्यकता है। संपर्क करें :-

आर्य समाज, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

९८२७८७५०१०,९८९३५७७७६३, ९८९३१२१६९४

aryasudhir01@gmail.com

तू जिसे ढूँढे, वह तेरे घर में है

तू ढूँढे जिसे, वह तेरे घर में है।
है झूठा भटकता है, तू दर-बदर में।।

प्रभु संग प्रीति तू दिल से लगा ले।
तू घर बैठे ही उसको हृदय में पा ले।।

असल की भी होती है नकल।
नकल जिसकी होवे नहीं वह असल।।

बहुत प्रकार की मूर्ति को बनाया।
फिर भी न भारत को सन्तोष आया।

कब्रों का भी बन गया पुजारी।
मिट्टी में प्रतिष्ठा इसकी सारी।।

आ जावे जिसकी अकल में खलल।
नहीं रासती फिर उसका दखल।।

जिसने है ईश्वर को मन से भुलाया।
दु:खों ने फिर उसको आकर सताया।।

प्रभुपूजा में जो है करते यत्न।
करे वह प्रेम सबसे होकर मग्न।।

खबरदार हो इससे तू बे-खबर।
इसी से भटकता फिरे दर-बदर।।

देवकुमार प्रसाद आर्य

भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज

५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)

चलभाष : ८९६९५४२३३९

ऋषि दयानन्द जीवन चरित

देशराज आर्य

पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है।
पर पण्डित लेखराम ने सर्वोत्तम गाथा लिख, जग में नाम किया है।
लेखराम ने घूम-घूम कर तब दर-दर छान लिया था,
ऋषि दयानन्द के समकालीन परिचितों से जान लिया था,
वृहत् जीवनी लिखने का प्रण, पण्डितजी ने ठान लिया था,
पर विस्तृत योजना धरी रह गई, विधर्मी ने उनका प्राण लिया था,
निज प्राणों की आहुति देकर पण्डितजी ने, यश का काम किया है।१।।ऋषि दयानन्द...।
मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी ने भी प्रथम प्रयास किया था,
गोपालराव हरिशर्मा ने भी ऋषि जीवन लिखने का सुयश किया था,
दो भागों में जीवन चरित लिखकर **'दयानन्द दिग्विजय'** नाम दिया था,
तीसरी पुस्तक ऋषि बलिदान के बाद, छपवाने का काम किया था,
पूना प्रवचन में स्वयं ऋषि ने, निज जीवन संकेत दिया है।२।ऋषि दयानन्द...।
श्री देवेन्द्र मुखोपाध्याय ने भी ऋषि जीवन पर काम किया था,
बंगला भाषा में लघु पुस्तिका लिख **'ऋषि जीवन'** नाम दिया था,
पं. लक्ष्मण आर्योपदेशक ने भी 'खोजपूर्ण काम किया था,
समस्त सामग्री को क्रमबद्ध लिखकर अप्रतिम काम किया था,
आधार रूप में सभी लेखकों ने पण्डित लेखराम को मान दिया है।३।ऋषि दयानन्द...
स्वामी सत्यानन्दजी ने भी **'श्रीमद्दयानन्द जीवन'** तैयार किया,
कुछ अलग ढंग से पुस्तक लिखकर आर्यों का उद्धार किया,
आचार्य जगदीश विद्यार्थी ने **'स्वामी दयानन्द सरस्वती'** तैयार किया,
श्री लेखराम, देवेन्द्रनाथ व सत्यानन्द लिखित गाथा से ही सार लिया,
'आर्य धर्मेन्द्र जीवन' पुस्तक लिख, हरविलास शारदा ने भी नाम किया है।४।ऋषि दयानन्द...
श्री भवानीलालजी भारतीय ने **'नवजागरण के पुरोधा'** पुस्तक लिखी,
पर मूल रूप से इस पुस्तक में भी लेखराम की ही सामग्री दिखी,
लाला लाजपतराय, मेहता राधाकिशन व स्वामी श्रद्धानन्द ने गाथा लिखी,
विश्व प्रकाश, पं. चमूपति व युधिष्ठिर मीमांसक ने भी बात वही लिखी,
वीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी ने भी ऋषि जीवन पर काम किया है।५।ऋषि दयानन्द...
अभी-अभी श्री राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने, ऐतिहासिक काम किया है,
दो भागों में **'सम्पूर्ण जीवन चरित'** लिख एक अनुपम काम किया है,
सदियों से लुप्त दबी पड़ी सामग्री को, पत्र-पत्रिकाओं से खोज लिया है,
महत्वपूर्ण द्रष्टव्यों, साक्ष्यों का दुर्लभ चित्रों सहित प्रमाण दिया है।
की पच्चीस वर्ष तक कड़ी मेहनत, पं. लक्ष्मणजी के उर्दू ग्रन्थ को हिन्दी में तैयार किया है।६।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है।। ■

वैदिक पथ

(तर्ज : भला किसी का कर न सको तो...)

वैदिक पथ पर चलकर प्राणी,
अपना आत्म उद्धार करो।
अपने खुद के कर्म को पढ़कर,
उसमें और सुधार करो।
अनुव्रत्ती ऋषियों का बनकर,
जीवन का निर्माण करो।
प्राप्त ज्ञान को बाँटो सबको,
ऋषि ऋण का भुगतान करो। वैदिक पथ पर...
दिव्य गुणों से भरे देवता,
बिन माँगे निधि दान करे।
प्रसन्न होंगे देव सभी जब,
देवयज्ञ निष्काम करें। वैदिक पथ पर...
जन्म दिया जिन माता-पिता ने,
उनके तुम सब ताप हरो।
श्रद्धापूर्वक सेवा करके,
उनके मन को तृप्त करो। वैदिक पथ पर...
वैदिक ज्ञानी मनीषियों का,
यथायोग्य सत्कार करो।
वैदिक सत्संग उनके संग कर,
ज्ञान का और विकास करो। वैदिक पथ पर...
बलिवैश्वदेव यज्ञ में,
सेवा-दान निष्काम करो।
आसपास लाचार हो प्राणी,
उनका भी तुम ध्यान धरो। वैदिक पथ पर...
शुभकर्मों से मिला यह जीवन,
शुचिता का व्यवहार करो।
योग को जीवन अंग बनाकर,
मन पर अपने राज करो। वैदिक पथ पर...
कह रमेश सत्संग में आकर,
शुद्ध ज्ञान का पान करो।
माया के बन्धन से बचकर,
भवसागर को पार करो। वैदिक पथ पर...

रमेशचन्द्र भाट 'आर्य पथिक'

पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राज.)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी: स्वामी दयानन्द सरस्वती

आचार्य रामगोपाल सैनी

फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे विलक्षण, शास्त्रों के ज्ञाता, विद्वान् हुए हैं कि उनकी विद्वता बताने के लिए कोई उपयुक्त विशेषण ही उपलब्ध नहीं है। आमतौर पर उच्च कोटि के विद्वानों का कद बताने के लिए प्रखर विद्वान्, प्रकाण्ड विद्वान्, उद्‌भट विद्वान् आदि विशेषणों का प्रयोग किया जाता है किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती की विद्वत्ता का स्तर बताने के लिए ये सब विशेषण छोटे पड़ जाते हैं।

भारतभर में शास्त्रों के सबसे बड़े विद्वान् काशी के पण्डित माने जाते हैं, किन्तु काशी के विद्वानों को काशी में ही जाकर ललकार दिया स्वामी दयानन्द सरस्वती ने। काशीराज की उपस्थिति में स्वामीजी का काशी के चुनिन्दा शास्त्रज्ञ विद्वानों से शास्त्रार्थ हुआ। स्वामी दयानन्द का पक्ष था- वेदों में मूर्तिपूजा का वर्णन नहीं है। ईश्वर निराकार है, उसकी कोई प्रतिमा बनाना सम्भव नहीं है। ईश्वर कभी शरीर धारण कर अवतार नहीं लेता है। काशी के पौराणिक विद्वानों का मत था कि वेदों में मूर्ति का और मूर्तिपूजा का उल्लेख है। काशी के कई उच्चकोटि के विद्वानों को अकेले दयानन्द ने परास्त कर दिया। स्वामीजी का सर्वाधिक महान् कार्य तो यह है कि उन्होंने वेदों के सरल संस्कृत में एवं आर्य भाषा (हिन्दी) में भाष्य (अर्थ, व्याख्या) कर दिए। पाणिनीय व्याकरण ग्रन्थ **'अष्टाध्यायी'** पर भी उन्होंने टीका लिखी। स्वामीजी के बाद कुछ और भी विद्वानों ने वेदों के हिन्दी में अर्थ किए हैं किन्तु उन्हें स्वामीजी के भाष्य के समान प्रामाणिकता एवं उच्चता प्राप्त नहीं है।

स्वामीजी के ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ भी बेजोड़ हैं। षोडश संस्कारों को कराने की विधि वाला ग्रन्थ **'संस्कार विधि'** भी महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त भी व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, आर्याभिविनय आदि १६ ग्रन्थ लिखे हैं।

यद्यपि स्वामीजी के पास किसी महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय की कोई उपाधि नहीं थी तथापि उनके ग्रन्थों पर सैकड़ों शोधार्थियों ने पी.एच.डी., डी.लिट् आदि उपाधियाँ प्राप्त की है। विश्वविद्यालयों की बड़ी-बड़ी उपाधियाँ धारण किए हुए प्रोफेसर भी स्वामीजी की अगाध विद्वता के समक्ष नतमस्तक होते हैं। ऐसे वेदों और व्याकरण शास्त्र के सूर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के श्रीचरणों में शत-शत नमन्। ■

मेरा आर्य नेताओं से एक विनम्र निवेदन

खुशहालचन्द्र आर्य

द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

'खुशहाल' कहना चाहता है, आर्यजगत् के सभी नेताओं को एक यह बात।
जो आर्य समाज की बिगड़ी हालत देख रोता है दिन-रात।।
यदि आप चाहते हो करना आर्य समाज का कल्याण व भला।
तो फूट मिटाकर, एक हो जाओ, यही है मेरी नेक सलाह।।
जब तक नहीं होगा सच्चे आर्यों का, एक महान् सार्वदेशिक संगठन।
तब तक कितना ही कर लो, नहीं चलेगा आपका अलग-अलग गठबन्धन।।
आखिर इसका एक ही उपचार है, अच्छे आर्यों की एक सार्वदेशिक बन जाना।
मुझे पूर्ण विश्वास है, सफल होगा आपका सद्‌प्रयास, सब नेताओं का एक हो जाना।।
ईश्वर सभी नेताओं को सद्‌बुद्धि देवें, सीखें वह एक-दूसरे को गले लगाना।
तभी महर्षि का स्वप्न साकार होगा और विघ्न पुन: करने लगेगा हमारी सराहना।।
बहुत समय हो गया आपको, अपने स्वार्थवश परस्पर लड़ते-लड़ते।
प्रसन्नता है, ईश्वर की अपार कृपा से अब तो सभी आर्य नेता चेते।।
अब सभी आर्यों, एक हो जाने की कर लो प्रतिज्ञा, पूरी करेंगे बात आज की।
एक सार्वदेशिक बनाकर ही रहेंगे और पुरानी छवि पुन: बनाएँगे आर्य समाज की।।

स्वास्थ्य परिशिष्ट

दालें हैं पोषक तत्वों का कोषागार

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

दालों में प्रोटीन, फाइबर और आयरन का महत्वपूर्ण स्रोत है। स्वस्थ जीवन के लिए दालें आवश्यक है, वहीं पाचन तन्त्र दृढ़ व सशक्त होता हैं। दाल प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत माना जाता है। दालों से लौह की पूर्ति होती है शरीर में लौह की सही मात्रा का होना बहुत आवश्यक होता है इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता सुदृढ़ होती है, गर्भावस्था में भी दालें अत्यन्त लाभकारी होती है। सभी दालों में आसानी से पचने वाले पोषक तत्व होते हैं। कोलेस्ट्रॉल के स्तर और हृदय रोग की संभावनाओं को कम करती है। यह मधुमेह के लिए एक स्वस्थ प्रोटीन है, जो रक्त शर्करा के स्तर को नियन्त्रित करने में सहयोग करती है। दालों में पाये जाने वाले पोषक तत्व, लौह और फोलेट के कारण यह सुनिश्चित होता है कि जो क्षतिग्रस्त कोशिकाओं के सुधार और नवनिर्माण के लिए पर्याप्त रूप से सहयोग करते हैं। आयरन एनीमिया के विकास की संभावनाओं को भी कम कर सकती है। दालों के दैनिक सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता से लेकर पाचन शक्ति तक सब कुछ ठीक रहता है और किसी भी रोग के विकास की सम्भावना को कम किया जा सकता है। दालें पोषक तत्व और फाइबर से भरपूर होती हैं। लो फैट होने के कारण यह अतिरिक्त कैलोरी लेने को रोकती हैं। प्रतिदिन दाल के सेवन से सही मात्रा में बिना कैलोरी जमा किए ऊर्जा और पोषण मिल सकता है, यह पेट को दीर्घकाल तक भरा हुआ रखती हैं। जो अशक्त क्रेविंग से बचने में सहयोग करता है। दालों का सेवन भूख को नियन्त्रित करने में सहयोग करता है और अधिक खाने से रोकता है। दालें हृदय के लिए विशेष स्वास्थ्यप्रद मानी जाती हैं। यह खराब कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप को कम करने में सहयोग करती हैं।

(१) मूंग दाल व हरे चने की दाल– मूंग दाल व हरे चने की दाल स्वादिष्ट कढ़ी से लेकर मिठाइयों तक भोजन में सम्मिलित की जा सकती है। पूर्ण रूप मूंग का सेवन प्रोटीन बाउंड स्प्राउट के रूप में किया जाता है। यह मैंग्नीज, मैग्नीशियम, फास्फोरस, कॉपर, पोटेशियम, जिंक, फोलेट विटामिन, प्रोटीन एवं डाइटरी फाइबर का एक उत्कृष्ट स्रोत है। मूंग दाल में विटामिन-सी, विटामिन-बी ५ और विटामिन-बी ६ पाया जाता है। यह आँखों के स्वास्थ्य के लिए उत्कृष्ट विकल्प सिद्ध हो सकता है। इसमें उपस्थित विटामिन-सी रेटिना को स्वस्थ रखने में सहयोग करता है। मूंग दाल में पाया जाने वाला कॉपर बालों की जड़ों को दृढ़ता प्रदान करता है।

(२) मूंग, उड़द या काले चने– मूंग, उड़द या काले चने को सामान्यतया पूर्णरूप में उपयोग किया जाता है। इस दाल से व्यंजन जैसे इडली, डोसा और स्वादिष्ट बड़े नाश्ते के लिए बना सकते हैं। इनमें पोषक तत्व, पोटेशियम, कैल्शियम, लौह और विटामिन ए और सी भरपूर होता है। इसमें फाइबर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसलिए उड़द की दाल पाचन शक्ति में वृद्धि करती है। अस्थियों को स्वस्थ और बलवती बनाती है। ऊर्जा को बढ़ाती है और रक्त शर्करा के स्तर को नियन्त्रित करती है। त्वचा और बालों को स्वस्थ बनाये रखती है।

(३) अरहर की दाल– अरहर की दाल भारतीय रसोई में एक आम उपयोग की जाने वाली सामग्री है। किसी भी दक्षिण भारतीय भोजन जैसे सांभर में अवश्य ही, इस दाल का उपयोग किया जाता है। यह प्रोटीन, पोटेशियम, आयरन, फोलिक एसिड, मैग्नीशियम और बी विटामिन जैसे पोषक तत्वों से परिपूर्ण होती है। फोलिक एसिड का एक उत्कृष्ट स्रोत है,यह गर्भवती महिलाओं के लिए न्यूरल ट्यूब बर्थ समस्या को रोकने के लिए अत्यधिक लाभकारक है। फाइबर का एक बड़ा स्त्रोत है,यह हृदय रोग, आघात और मधुमेह की सम्भावनाओं को कम करती है।

(४) मसूर दाल– मसूर की दाल भारतीय भोजन में सामान्यतया उपयोग की जाने वाली दाल है। स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद दाल है, जो किसी भी सब्जी के साथ डालने पर अच्छी लगती है। यह प्रोटीन, फाइबर, मैग्नीशियम, कैल्शियम, बी विटामिन और फोलेट से भरी हुई है जो समग्र स्वास्थ्य को उत्तमता देती है।आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर मसूर दाल त्वचा के स्वास्थ्य को लाभ देती है और मुँहासों को रोकती है। फाइबर का अच्छा स्त्रोत होने के कारण यह रक्त शर्करा स्पाइक को नियन्त्रित करती है। पोषक तत्व, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर मसूर दाल रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि में सहयोग करती है।

(५) चने की दाल– चने की दाल में जिंक, कैल्शियम, पोषक तत्व, फोलेट आदि गुण पाए जाते हैं जो शरीर को कई लाभ पहुँचाते हैं। चने की दाल का सेवन करने से शरीर की अशक्तता को दूर कर सकते हैं। इसके अलावा चने की दाल का सेवन कर बढ़े हुए भार को

सहजता से नियन्त्रित कर सकते हैं। चने की दाल में जिंक, कैल्शियम, प्रोटीन, फोलेट आदि भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं, जो शरीर को आवश्यक ऊर्जा देने में सहयोग करते हैं। शरीर में थकान दूर करने में चने की दाल का सेवन अत्यन्त लाभकारी होता है।

(६) राजमा की दाल- राजमा लचीलेपन को सुनिश्चित करता है. इससे गठिया के मरीजों को लाभ प्राप्त होता है। अस्थियों के लिए लाभकारी है, राजमा में पाया जाने वाला मैंग्नीज और कैल्शियम अस्थियों को दृढ़ बनाता हैं और ऑस्टियोपोरोसिस को रोकने में सहयोग करता हैं। राजमा में पाए जाने वाला फोलेट अस्थि और जोड़ों को स्वस्थ बनाए रखने में सहयोग करता है जो अस्थियों के रोगों और टूटने की सम्भावनाओं को कम करता है, कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए, मधुमेह के लिए, प्रोटीन के स्त्रोत के लिए, उच्च रक्तचाप में, भार कम करने में, कब्ज में, एंटी एजिंग में, हृदय की रक्षा में लाभकारी होता है। राजमा का अधिक सेवन पेट में वायु की अधिकता, दस्त, पेटदर्द और आँतों में दर्द का कारण बन सकता है। अधिक मात्रा में राजमा का सेवन शरीर में आयरन की मात्रा को बढ़ा देता है जिससे शरीर के अंग क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। कच्चे राजमा का सेवन पेटदर्द का कारण बन सकता है।

(७) लोबिया/लोभिया- लोबिया की दाल में सभी आवश्यक विटामिन और मिनरल्स होते हैं। यह एक पौष्टिक दाल है, जो एनर्जी दे सकती है और मांसपेशियों को दृढ़ता प्रदान कर सकती है। पाचन की समस्याओं को रोकने में भी यह दाल लाभकारी सिद्ध हो सकती है। इस दाल में मैंग्नीज भरपूर मात्रा में होता है, जो शरीर को तत्काल ऊर्जा प्रदान करता है। लोबिया का नियमित सेवन रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है और एनीमिया के लक्षणों को कम करने में सहयोग करता है। लोबिया में पाया जाने वाला उच्च प्रोटीन और फाइबर भूख को कम करता हैं और पेट को भरा रखता हैं, लोबिया कम कैलोरी वाला भोजन है।

(८) सोयाबीन दाल- सोयाबीन दाल में प्रोटीन, हेल्दी फैट, कार्ब्स, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन डी, विटामिन ई, आयरन, फास्फोरस, मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। यही नहीं इसमें कैंसररोधी गुण, लेसिथीन आदि भी पाए जाते हैं, ये क्षयरोग जैसे गम्भीर रोगों से रक्षा करती है। नियमित रूप से सन्तुलित मात्रा में सोयाबीन दाल का सेवन करने से शरीर को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। सोयाबीन को भिगोकर ग्रहण करने से शरीर को सबसे अधिक लाभ मिलता है। सोयाबीन हृदय को स्वस्थ रखने में सहयोग प्रदान करता है। इसके सेवन से हृदय में सूजन और रक्तसंचार को ठीक करने में सहयोग प्राप्त होता है। सोयाबीन में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट्स गुण हृदय को स्वस्थ बनाये रखने में सहयोग करते हैं। नियमित सोयाबीन खाने से हृदय सम्बन्धी बीमारी होने का खतरा कम होता है। सोयाबीन खाने से अस्थियों को दृढ़ बनाने में सहयोग प्राप्त होता है। सोयाबीन घुटनों में दर्द, मांसपेशियों और कमरदर्द को कम करती हैं। सोयाबीन में पाया जाने वाला कैल्शियम और मिनरल्स अस्थियों को दृढ़ता प्रदान करके उन्हें स्वस्थ रखने में सहयोग करता हैं। सोयाबीन का सेवन गर्भवती महिलाओं के लिए बहुत लाभकारी होता है। इसके ग्रहण करने से भ्रूण का विकास अच्छे प्रकार से होता है और गर्भवती महिला के शरीर की अशक्तता भी सहजता से दूर होती हैं। सोयाबीन शरीर के लिए बहुत लाभप्रद होता है। अगर कोई रोग या एलर्जी की समस्या हैं तो किसी सुयोग्य चिकित्सक के परामर्श से ही इसका सेवन करना चाहिए।

इस प्रकार दालें शरीर के पोषक तत्वों का कोषागार है जिससे शरीर को स्वास्थ्य लाभ के साथ विभिन्न रोगों से सुरक्षा प्राप्त होती है। दालों में प्रोटीन अत्यधिक होता है अतः जिनको यूरिक एसिड की समस्या है उन्हें दालों का सेवन नहीं करना चाहिए अतः दालें है पोषक तत्वों का कोषागार।

नोट :- 'दालें है पोषक तत्वों का कोषागार लेख' ज्ञानार्जन के लिए प्रस्तुत है। इसका प्रयोग करने से पूर्व किसी सुयोग्य चिकित्सक अथवा आहार विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य प्राप्त करना चाहिए। ■

(पृष्ठ ८ का शेष भाग)

माँ-बहिनों की इज्जत लुटती है। रात–दिन गऊ हत्या होती है। शराब के ठेके हर ग्राम-शहर में सरकार द्वारा खोले जा रहे हैं। सौ में से नब्बे (प्रतिशत) राजनेता शराबी तथा मांसाहारी है। ९५ प्रतिशत बड़े अधिकारी शराबी, मांसाहारी तथा बेईमान हैं। राजनेता जातिवाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, गोत्रवाद का प्रचार कर रहे हैं। विचार करो क्या इस तरह रामराज्य आ जाएगा?

रामराज्य में चोर, डाकू, गुंडे, चरित्रहीन, गऊ हत्यारे कहीं नजर नहीं आते थे। पिता से पहले पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी। कोई भूखा नहीं सोता था। रामराज्य में सब सुखी थे।

इस समय सब राजनेताओं की नजर कुर्सी पर है। किसी को भी देश का ध्यान नहीं है। कवि के शब्दों में-

राजनीति आज की धोखाधड़ी है।
हर किसी की आँख, कुर्सी से लड़ी है।।
मर जाओ भूखा कोई इनकी बला से,
इनको अपने कोठी-बंगलों की पड़ी है।।

प्यारे सज्जनो! यदि तुम्हें भारत को बचाना है, भारत में रामराज्य लाना है तो महर्षि दयानन्द महाराज के बताए वेद मार्ग पर चलना होगा, तभी यह देश बचेगा। अत: रामराज्य लाना है तो ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, सदाचारी, व्यक्तियों का साथ दो। अंत में मेरी भारत के युवकों-युवतियों से विशेष प्रार्थना है-

भारत माँ के पुत्र-पुत्रियों,
आगे कदम बढ़ाओ तुम।
इधर-उधर की बातें छोड़ो,
वेदमार्ग अपनाओ तुम।।
राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुधन,
बनकर अच्छे काम करो।
वंश मिटा दो दानव दल का
वीरो! जग में नाम करो।।
समझाना है, धर्म हमारा,
समझोगे सुख पाओगे।
'नन्दलाल' यदि ना समझोगे,
याद रखो, पछताओगे।। ■

मॉरीशस के ‘बो बासें आर्य समाज’ का इतिहास

रणजीत पांचाले
२४, कैलाशपुरमूल निकट डेलापीर, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७३५१६००४४४

प्रहलाद रामशरण मॉरीशसीय आर्य समाज के शलाका पुरुष हैं। वे अपने जीवन के नवें दशक में हैं और इस द्वीप देश के अति सम्मानित इतिहासकार व साहित्यकार हैं। आर्य समाज को उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। वे १९८२ से १९८४ तक आर्य सभा मॉरीशस के मन्त्री रहे हैं। देश के आर्य समाज के इतिहास और टापू में इस संगठन की विभूतियों पर उनकी एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। फ्रेंच भाषा में स्वामी दयानन्द की जीवनी भी उन्होंने लिखी है। हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच और भोजपुरी में पाँच दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक प्रहलाद रामशरण की हाल ही में द्वीप के बो बासें आर्य समाज के इतिहास पर अंग्रेजी में एक महत्वपूर्ण पुस्तक **‘हिस्ट्री ऑफ द बो बासें आर्य समाज’** स्टार पब्लिकेशन्स (नई दिल्ली) से प्रकाशित हुई है। दो वर्ष पूर्व ही इस आर्य समाज ने अपनी स्थापना की शताब्दी मनाई है।

मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई से मात्र १९ कि.मी. दूर एक सुन्दर नगर है बो बासें। टापू के आर्य समाज के लोकप्रिय नेता पं. काशीनाथ किश्टो की देखरेख में रामप्रसाद लाल, गंगाबिसून मंगर और छबीलाल खरकदारी ने यहाँ १९२१ में आर्य समाज की स्थापना की थी। पिछली सदी के दूसरे और तीसरे दशक में जब आर्य समाज टापू के गाँवों और शहरों में अपनी जड़ें गहरी कर रहा था, उस दौर में बो बासें नगर भी पीछे नहीं रहा। यहाँ के आर्य समाज ने सायंकालीन कक्षा (बैठका) के माध्यम से क्षेत्र में हिन्दी के प्रसार में अपना योगदान दिया और स्वामी दयानन्द के विचारों के द्वारा हिन्दू समाज को जागरूक बनाया।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् मेहता जैमिनी ने इस आर्य समाज में १९२५ में व्याख्यान दिये थे। उस समय यहाँ स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाई गई थी। आज भले ही बो बासें सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न नगर है लेकिन जब १९२१ में यहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई थी, तब इस नगर में साधनों का अभाव था। सड़क और संचार सुविधाएँ अच्छी नहीं थी। उस समय तक द्वीप के भारतवंशियों की आर्थिक स्थिति में भी आंशिक सुधार ही हो पाया था। इसीलिए इस नगर में आर्य समाज की स्थापना ‘फूस’ की बैठका में हुई थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी रामप्रसाद लाल ने शेरी लियेनार स्ट्रीट पर स्थित अपनी निजी भूमि इस बैठका के लिए दी थी। क्षेत्र के समर्पित आर्य जन इसी बैठका में १९५७ तक वेदों, उपनिषदों, गीता और रामायण पर निरन्तर प्रवचन करवाते रहे तथा नियमित रूप से यहाँ यज्ञ और प्रार्थनाएँ होती रहीं। वर्ष १९५७ में आर्य समाज की इस शाखा के लिए एक बड़ा प्लॉट खरीदा गया और १९६० में उस पर लोहे की घुमावदार चादर से युक्त भवन बनाया गया जिसमें १९७६ तक आर्य समाज की गतिविधियाँ चलती रहीं। मॉरीशस के प्रधानमन्त्री शिवसागर रामगुलाम ने २२ मई १९७७ को बो बासें आर्य समाज के नए भवन की आधारशिला रखी। तब तक बो बासें शहर का स्वरूप काफी निखर गया था। हिन्दुओं के कई सुन्दर मंदिर और संस्थाएँ नगर में स्थापित हो चुकी थीं। स्थानीय आर्यजनों ने भी बो बासें की शेरी लियेनार स्ट्रीट पर आर्य समाज का एक मजबूत कंक्रीट भवन निर्मित करवाया। **क्षेत्र में आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव के कारण कालान्तर में शेरी लियेनार स्ट्रीट का नाम भी बदलकर स्वामी दयानन्द स्ट्रीट हो गया।**

इस आर्य समाज में अब तक भारत की अनेक विभूतियाँ पधार चुकी हैं जिनमें साहित्यकार यशपाल जैन, प्रभाकर माचवे, भवानीलाल भारतीय, शिक्षाविद् प्रो. राम प्रकाश, हैदराबाद की राजकुमारी इन्दिरा देवी धनरागिरि, वैदिक विदुषी डॉ. उषा शर्मा, आर्य विद्वान् स्वामी दिव्यानन्द प्रथम व द्वितीय, स्वामी सत्यम् तथा स्वामी आशुतोष परिव्राजक के नाम उल्लेखनीय हैं। बो बासें आर्य समाज के धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों में मॉरीशस के राष्ट्रपति कैलाश प्रयाग, उपराष्ट्रपति सर रवीन्द्राह घूरबरण, अब्दुल रऊफ बंधन और परमासिवम पिल्लै व्यापूरी के अलावा देश के अनेक प्रमुख मन्त्रियों की गरिमामयी उपस्थिति रही है। वर्ष १९६३ में इस आर्य समाज में अखिल मॉरीशस साहित्य सम्मेलन हुआ था जिसमें पूरे द्वीप के साहित्यकारों ने भाग लिया था। देश के इतिहास एवं साहित्य से सम्बन्धित प्रहलाद रामशरण की अनेक पुस्तकों तथा हिन्दी, अंग्रेजी एवं फ्रेंच में प्रकाशित होने वाली त्रिभाषी साहित्यिक पत्रिका **‘इन्द्रधनुष’** के विशेषांकों के विमोचन समारोह बो बासें आर्य

समाज के सभागार में हुए हैं जिनमें इस द्वीपीय देश की अनेक राजनीतिक और साहित्यिक विभूतियाँ सम्मिलित हुई हैं। इस ऐतिहासिक आर्य समाज में कई बार अश्वमेध यज्ञ तथा यजुर्वेद परायण यज्ञ हुए हैं।

वर्ष २०२० में बो बासें आर्य समाज के परिसर के अग्रभाग में एक सुन्दर सिंहद्वार बनवाया गया जो यहाँ की स्वामी दयानन्द स्ट्रीट से गुजरने वालों का ध्यान बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस समाज के शताब्दी वर्ष (२०२१) में अनेक सार्थक कार्यक्रम हुए जिनमें वर्तमान समय में मॉरीशस के हिन्दू समाज की समस्याओं पर गम्भीर विचार–विमर्श हुआ तथा उनके समाधान सुझाए गए। विशेषकर, परिसंवादों में पारिवारिक एकता, बेटियों को प्रोत्साहन, वृद्धों को आनन्दपूर्ण जीवन, महिलाओं को उत्तम स्वास्थ्य तथा युवाओं को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता पर बल दिया गया। उपनिषदों की मासिक कथाओं सहित समस्त कार्यक्रमों में आर्यजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आसपास के अन्य आर्य समाजों के सदस्य भी यहाँ हुए व्याख्यानों से लाभान्वित हुए।

मॉरीशस के वर्तमान राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन ने १८ सितम्बर २०२२ को बो बासें आर्य समाज के शताब्दी महोत्सव के समापन समारोह में बोलते हुए कहा कि किसी संस्था के सफलतापूर्वक १०० वर्ष पूरे हो जाना एक महान् उपलब्धि है जिसका श्रेय संस्थापकों और उनके बाद की पीढ़ियों को दिया जाना चाहिये जिन्होंने अनेक उतार–चढ़ावों के बावजूद 'दीप' जलाए रखा। उन्होंने कहा कि भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए नई पीढ़ी को प्रोत्साहन तथा संस्था में उसे आवश्यक स्थान दिया जाना चाहिये। उन्होंने द्वीप में समृद्ध भारतीय संस्कृति के संरक्षण में महिला आर्य समाजों के विशिष्ट योगदान की भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

प्रहलाद रामशरण ने यह पुस्तक लिखकर मॉरीशस के ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के आर्य समाजों के सामने भी यह उदाहरण प्रस्तुत किया है किसी ऐतिहासिक महत्व के आर्य समाज का इतिहास किस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिये। पुस्तक में ऐसी कई विभूतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिन्होंने विभिन्न क्षमताओं में बो बासें आर्य समाज में अपना विशेष योगदान दिया था। इतना ही नहीं, मॉरीशस के इस नगर में आर्य समाज के अलावा पिछली एक सदी में हिन्दुओं की जितनी भी प्रमुख सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ स्थापित हुई हैं, उनका भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है। ये संस्थाएँ हैं– गीता मण्डल (१९३२), डिवाइन लाइफ सोसायटी (१९६३), महाविष्णु कोविल (१९६४), श्री रामेश्वरनाथ रामायण मन्दिर (१९६७), विनायक मन्दिर (१९६९), त्रिवेणी क्लब (१९७६), तुलसी श्याम मन्दिर (१९८१), बो बासें स्वस्तिक कमेटी (१९९१), काली पराशक्ति कोविल (१९९७)। ये सभी संस्थाएँ टापू के आर्य समाज के प्रति सद्भावना रखती हैं। प्रहलाद रामशरण साढ़े चार दशकों से लगातार बो बासें आर्य समाज के मन्त्री पद पर हैं। सम्भवत: इसीलिए इस समाज के सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज उनके पास सुरक्षित हैं जिनमें से कुछ को पुस्तक में दिया गया है। इन्हीं में श्रीमती धनवन्ती रामचरण के सम्मान में २००७ में आयोजित स्वागत समारोह के निमन्त्रण पत्र का भी चित्र है। उस समय वे आर्य सभा मॉरीशस की प्रधान बनी थीं। उन्हें देश की आर्य सभा की पहली महिला प्रधान बनाकर मॉरीशसीय आर्य समाज ने अपने इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जोड़ा था। सम्भवत: किसी भी अन्य देश में कोई भी महिला अभी तक राष्ट्रीय स्तर की आर्य सभा की प्रधान नहीं बन पाई है।

मुख्यत: अंग्रेजी एवं फ्रेंच भाषाओं में लिखी गई इस पुस्तक का कुछ भाग हिन्दी में भी है जिसमें मॉरीशसीय आर्य समाज के हिन्दी में प्रकाशित साप्ताहिक मुखपत्र **'आर्योदय'** में समय–समय पर प्रकाशित बो बासें आर्य समाज के कार्यक्रमों की रिपोर्टों के अलावा इस समाज के मन्त्री प्रहलाद रामशरण के अनेक भाषण प्रकाशित किये गये हैं। एक शताब्दी के दौरान इस आर्य समाज में रहे प्रमुख सदस्यों के चित्रों के अलावा विभिन्न आयोजनों के चित्र भी पुस्तक में दिये गये हैं। अपनी ऐसी विशेषताओं के कारण यह एक दस्तावेजी पुस्तक बन गई है। ■

वैदिक संसार के प्रकाशन के सम्बन्ध में

घोषणा फार्म–४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन का स्थान	१२/३, संविद नगर, इन्दौर (मप्र)
२. पत्र का नाम	वैदिक संसार
३. प्रकाशन अवधि	प्रतिमाह, दिनांक २५
४. मुद्रक का नाम	इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँअर मंडली, इन्दौर
क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
५. सम्पादक का नाम	ओमप्रकाश आर्य
क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
६. प्रकाशक का नाम	सुखदेव शर्मा
क्या भारतीय नागरिक हैं?	हाँ
७. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	सुखदेव शर्मा १२/३, संविद नगर, इन्दौर

सुखदेव शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : मार्च, २०२४ **सुखदेव शर्मा (प्रकाशक)**

प्राकृतिक खेती : उद्यमशीलता के अवसर पैदा करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना और टिकाऊ कृषि के लिए समावेशी विकास को बढ़ावा देना

उज्जैन जिले के ग्राम अजड़ावदा के प्रगतिशील कृषक डॉ. योगेंद्र कौशिक (महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त कृषक) ने इस प्राकृतिक कृषि राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के बाद बताया कि प्राकृतिक खेती ही भारत का भावी भविष्य है और मानव और मृदा (मिट्टी) को जहर मुक्त और संरक्षित करने का एकमात्र सशक्त माध्यम है। हम हमारी आने वाली पीढ़ी को अगर ऊर्जित जमीन देना चाहते हैं तो हमें प्राकृतिक खेती को ही अपनाना होगा। गुजरात प्राकृतिक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के सम्माननीय कुलपति श्रीमान् डॉ. सी.के. टिंबाडीया जी से निवेदन किया गया कि हमारे मध्यप्रदेश में भी इस प्रकार का अभियान आपके कुशल नेतृत्व में विश्वविद्यालय के माध्यम से किया जावे ताकि मध्यप्रदेश के किसानों का रुझान भी प्राकृतिक खेती की ओर बढ़े।

गुजरात प्राकृतिक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय हलोल और गुजरात इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च अहमदाबाद, के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में देश के ख्यात कृषि वैज्ञानिक, कुलपति और पूर्व आईएएस अधिकारी, 'मैनेज' हैदराबाद के निदेशक आदि वैज्ञानिकों के साथ अध्यक्ष एवं निदेशक गुजरात इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च अहमदाबाद द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने इसके विस्तार के लिए क्या बहुत अच्छा किया जा सकता है पर गहन चिंतन-मनन किया गया। महामहिम राज्यपाल जी द्वारा अपने कुरुक्षेत्र, हरियाणा स्थित फार्म पर विगत १५-२० वर्षों से की जा रही प्राकृतिक खेती के समावेशी परिणाम बताते हुए गुजरात एवं देश के अन्य राज्यों के किसानों से प्राकृतिक खेती अपनाने का आह्वान किया और उपस्थित वैज्ञानिक, अधिकारियों से अधिक से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने की कार्ययोजना बनाने पर बल दिया।

कुलपति श्रीमान् डॉ. सी.के. टिंबाडीया ने बताया कि वर्तमान में गुजरात राज्य में करीब ९ लाख किसान ८ लाख एकड़ जमीन पर प्राकृतिक खेती करने वाले कृषक गुणवत्तायुक्त और वांछित उत्पादन कर अच्छा लाभ प्राप्त कर रहे हैं। आपने विश्वास दिलाया कि हमारी प्राकृतिक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय हलोल देश और दुनिया की प्रथम प्राकृतिक कृषि विश्वविद्यालय इस पर निरंतर कार्य कर देश-दुनिया के किसानों और मृदा के संरक्षण के लिए हमेशा तत्पर है और रहेगा।

इस अवसर पर निदेशक श्रीमती डॉ. निशा पांडे, गुजरात इंस्टिट्यूट ऑफ़ डेवलपमेंट रिसर्च अहमदाबाद ने अपने उद्बोधन में कहा की प्राकृतिक खेती के विकास के लिए हमारा संस्थान हमेशा नए-नए शोध और नवाचार कर किसानों और विश्वविद्यालय को सहयोग के लिए सदैव सहभागी रहेगा।

इस गरिमामय कार्यशाला में श्री प्रफुल्ल भाई सेजलिया (मुख्य समन्वयक प्राकृतिक खेती गुजरात राज्य) द्वारा प्रदेश के हर जिले और तालुका में किसानों के साथ बैठक करके इस प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए पूर्णकालिक रूप में जो कार्य कर रहे हैं और जो परिणाम आ रहे हैं उसकी उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा सराहना की गई।

इस कार्यशाला में माननीय राज्यपाल श्रीमान् आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में आमंत्रित अतिथि विद्वानों एवं कृषिविदों में डॉ. कीरीट शेलाट, कार्यवाहक अध्यक्ष एनसीसीएसडी, डॉ. ए.के. राकेश, अपर मुख्य सचिव कृषि मंत्रालय गुजरात सरकार, डॉ. आटे रिकमैन इंडो जर्मनी प्रोजेक्ट नई दिल्ली, प्रोफेसर डॉ. ए.आर. पाठक, पूर्व कुलपति जूनागढ़ एवं नवसारी कृषि विश्वविद्यालय गुजरात, डॉ. पी. चंद्रशेखर महानिदेशक 'मैनेज' हैदराबाद, डॉ. डी. नायडू वरिष्ठ कृषि सलाहकार आंध्रप्रदेश सरकार, डॉ. वी.वी. सदमाते पूर्व सलाहकार (कृषि) प्लानिंग कमीशन भारत सरकार, प्रोफेसर डॉ. नारायण गौड़ा पूर्व कुलपति यूएएस बैंगलोर, प्रोफेसर एस.वी. रेड्डी, अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक पीआरडीएस हैदराबाद, प्रोफेसर एस. गौतम पूर्व वाइस चांसलर जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय, श्री अतुल जैन जनरल सेक्रेटरी, प्रोफेसर श्री किरिट पारीक प्रेसिडेंट जीआईडीआर व सदस्य योजना आयोग नई दिल्ली, प्रोफेसर सी.के. श्रीवास्तव वाइस चांसलर यू ए एस यूनिवर्सिटी, प्रोफेसर अनूपकुमार सिंह डायरेक्टर जनरल निरमा यूनिवर्सिटी अहमदाबाद, प्रोफेसर सुनील शुक्ला डायरेक्टर जनरल व एमडी, प्रोफेसर निशांत शर्मा आईआईटी मुंबई, डॉ. दीपक पंडित, प्रोफेसर आशीष पांडे आईआईटी बॉम्बे, प्रोफेसर डॉ. के. नारायण पूर्व कुलपति बेंगलुरु, डॉ. रमेश भाई सांवलिया एवं अन्य आमंत्रित किसानों आदि ने अपने विचार/ सुझाव रखें। बैठक में **'एग्रीमास्टरी'** मीडिया के निदेशक श्री शैलेंद्र सिंह (तारापुर-गुजरात) ने किसानों के प्राकृतिक उत्पादों को ब्रांडिंग, विपणन तथा निर्यात में सहयोग करने की बात कही। साथ ही

उन्होंने कहा कि मैं मेरे गाँव के १०० किसानों को प्राकृतिक खेती से जोडूँगा और अपने स्वयं के पैसों से जीवामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र, पाँच पत्नी/दस पत्नी अर्क आदि बनाने के लिए प्लास्टिक के ड्रम उपलब्ध कराऊँगा, और उनको माननीय राज्यपाल जी और आदरणीय कुलपतिजी के मार्गदर्शन में किसानों को वितरण एवं प्रशिक्षण का आयोजन भी करूँगा।

इस कार्यशाला में पद्मश्री डॉ. हरिओम जी कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा ऑनलाइन प्राकृतिक खेती के इस महायज्ञ में सहभागिता कर अपने विचार रूपी आहुति प्रदान की।

कार्यक्रम में गुजरात इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च अहमदाबाद की निदेशक श्रीमती निशा पांडे और प्राकृतिक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय हलोल के कुलपति डॉ. सी.के. टिंबाड़िया जी की पूरी टीम ने कार्य कर इस कार्यक्रम को सफलता व ऊँचाइयाँ प्रदान की।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला में नाबार्ड, निरमा यूनिवर्सिटी, इंडियन काउंसिल ऑफ़ सोशल साइंसेज रिसर्च, गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी आदि का भी सराहनीय योगदान रहा।

डॉ. योगेंद्र कौशिक, उज्जैन

गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द जी की २०० वीं जयन्ती के साथ मनाया गया

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ (उ.प्र) के आशीर्वाद से पश्चिम ओडिशा के बरगड़, जिला नूआँपालि, पोस्ट कनसिंहा में स्थित गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की २०० वीं जन्म जयन्ती (ज्ञानज्योति पर्व) एवं त्रयोविंशतितम वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न प्रान्तों से अनेक साधु-सन्त, विद्वान् सामाजिक कार्यकर्ता एवं अन्य गुरुकुलीय स्नातक, स्नातिकाएँ पधारी हुई थीं। गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ, स्वर्ज्योति कन्या गुरुकुल एवं विद्यायतन के छात्र-छात्राओं ने अत्यन्त मनोहर एवं प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्वागत गीतिका, सस्वर वेदपाठ, भजन, भाषण, गीत, नाटक आदि कार्यक्रम ने समस्त आर्यजनों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर गुरुकुल के कुलपिता श्री दयानन्द जी शर्मा के सौजन्य से २०१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। महोत्सव को महिमामण्डित करने के लिए स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, स्वामी व्रतानन्द जी, ओममुनि जी, श्री दयानन्द जी शर्मा, श्री स्वतन्त्र कुमार रस्तौगी जी, डॉ सोमदेव जी शतांशु, पं धनुर्धर महापात्र, श्री सोमदत्त शास्त्री, पं कवीन्द्र आर्य, डॉ यदुमणि नायक, आचार्य वामदेव जी, डॉ शिवशंकर शास्त्री, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, आचार्य भारती नन्दन जी, पुरन्दर शास्त्री जी, विद्यासागर शास्त्री जी, गुरुकुल प्रभात एवं नवप्रभात के स्नातकगण पधारे हुए थे। स्वामी योगेश्वरानन्द जी, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी, श्री ओममुनि जी, डॉ सोमदेव जी शतांशु, पण्डित धनुर्धर महापात्र आदि वक्ताओं ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति, संस्कार, संस्कृति, परिवार, समाज व राष्ट्र के निर्माण और वैश्विक शान्ति के लिए महर्षि दयानन्द जी के अवदान को स्मरण किया।

मन्त्रोच्चार के साथ कलशयात्रा, ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार, ओ३म् ध्वज का उत्तोलन, वेद-संस्कृति सम्मेलन, राष्ट्र निर्माण सम्मेलन, कृषि-गोरक्षा सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यन्त दिव्यता व भव्यता के साथ सम्पन्न हुए। समारोह के विशिष्ट आकर्षण में ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों का योग, प्राणायाम एवं शारीरिक बल प्रदर्शन, देशभक्ति नाटक (मोपला काण्ड), सस्वर वेदपाठ आदि विशेष उल्लेखनीय रहे। आश्रम की कीर्ति पताका को फहराने वाले अनेक ब्रह्मचारियों को सम्मानित किया गया। २३ वें वार्षिकोत्सव समारोह एवं ज्ञान ज्योति पर्व के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अनेक आर्यजनों ने संकल्प लिया। गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती ने अन्तर्जाल के माध्यम से आशीर्वचन प्रदान किया। गुरुकुल नवप्रभात आश्रम को विश्वस्तरीय वैदिक शिक्षा केन्द्र बनाने की प्रेरणा प्रदान की। २०१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ में अनेक यजमानों ने श्रद्धापूर्वक विश्वकल्याण के लिए आहुतियाँ प्रदान की। अन्त में आचार्य बृहस्पति जी एवं अध्यक्ष भगवानदेव जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कुल गीतिका व शान्तिपाठ के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

रावतभाटा से इन्दौर-बड़वानी मेरी वैदिक यात्रा

ओमप्रकाश आर्य

सम्पादक : वैदिक संसार
मन्त्री आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७१७

सभी आर्यों के लिए मेरी यह वैदिक यात्रा बहुत प्रेरणाप्रद है। **'वैदिक संसार'** के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा ने वैदिक संसार विशेषांक के सन्दर्भ में मुझे इन्दौर बुलाया। उनके निवेदन को स्वीकार करते हुए मैं दिनांक ५.१.२०२४ को सायंकाल रावतभाटा से इन्दौर के लिए बस से रवाना हुआ। बस प्रात:काल ५.३० बजे इन्दौर पहुँची। आदरणीय श्री सुखदेव शर्मा अपने वाहन से स्व आवास स्थल पर ले गए। साथ में आपका बेटा नितिन शर्मा भी थे। सर्वप्रथम नितिन ने एक संस्कारित पुत्र का परिचय देते हुए सादर वैदिक अभिवादन नमस्ते करते हुए चरण स्पर्श किया। लगभग आधे घंटे में राऊ गृह स्थान पर पहुँचे। घर पर पहुँचते ही आपकी दोनों पुत्रवधुएँ प्रियंका और हर्षिता ने बड़ी श्रद्धा के साथ नमस्ते अभिवादन से अतिथि सत्कार किया। बेटा गजेश शास्त्री, सुपौत्र प्रणव, सुपौत्री वैदिका ने चरण स्पर्श कर आर्य परिवार के सदस्य होने का मनमोहक परिचय दिया। सभी सदस्यों में अतिथि के प्रति अप्रतिम श्रद्धाभाव दिखाई पड़ा। यह संस्कार आदरणीय श्री सुखदेव शर्माजी का दिया हुआ साक्षात् परिलक्षित हुआ।

नित्यक्रिया की निवृत्ति के पश्चात् पूरे परिवार ने एक साथ बैठकर सन्ध्योपासना उपरान्त यज्ञ किया। इस यज्ञ क्रिया में सबने बड़ी श्रद्धा से आहुति प्रदान की। प्रियंका, हर्षिता, नितिन, गजेश सबको यज्ञपद्धति के सभी मंत्र कंठस्थ थे। बिना पुस्तक के सबने सस्वर मन्त्रों का उच्चारण किया। वैदिका जो दूसरी कक्षा की छात्रा है उसे भी कई यज्ञ-मन्त्र कंठस्थ थे। प्रणव जिसका दो माह पूर्व नामकरण और निष्क्रमण संस्कार वैदिक विद्वान् रामनिवास गुणग्राहक ने सम्पन्न कराया था। उसमें एक बहुत ही संस्कारवान बच्चे के लक्षण स्पष्ट दिखलाई पड़े। वह भी बड़ी श्रद्धा और अनुशासित ढंग से यज्ञ में बैठा रहा। वामदेव्यगान भी पूरे परिवार को स्मरण था। सस्वर यज्ञ प्रार्थना क्रिया के पश्चात् यज्ञप्रसाद वितरित किया इस वैदिक घर में चाय-चुड़ैल के लिए कोई स्थान नहीं था। घर में पहुँचकर ऐसा लगा कि हम अन्यत्र नहीं अपितु अपने ही घर-परिवार के साथ बैठे हुए हैं। प्रत्येक सदस्य में एक आत्मीयता का भाव परिलक्षित हो रहा था। घर का वातावरण यज्ञ से सुगन्धित था। यही तो वैदिक परिवार का जीता-जागता उदाहरण और लक्षण है। सन्ध्या, यज्ञ, नमस्ते, एक साथ भोजन, परस्पर प्रेम का वर्ताव यही तो स्वर्गिक गृहस्थ की पहचान है जो मुझे उस घर में देखने को मिला। एक पंक्ति में एक साथ बैठकर सन्ध्या करना पारिवारिक प्रेम का वात्सल्य छलका रहा था। उस समय एक अद्वितीय आनन्द का अनुभव हो रहा था। काश! सभी परिवार ऐसे हों तो अपना पावन वैदिक युग वापस आ जाए। विघटित होते, टूटते, एकल परिवारों के लिए यह परिवार एक उदाहरण है इससे वे शिक्षा ले सकते हैं।

भोजनोपरान्त हम पत्रिका विशेषांक के कार्य से कम्प्यूटर का कार्य करने वाले नितिन पंजाबी के ऑफिस में पहुँचे। नितिन पंजाबी एक कुलीन महाराष्ट्रीयन महानुभाव पंथीय परिवार से हैं। आपका स्वभाव बहुत शान्त, प्रेमिल, सौम्य, सज्जनतापूर्ण और मिलनसार है। मुझे तो आप बहुत ही नेकनिष्ठ और भले व्यक्ति लगे। श्री शर्माजी ने बताया कि श्री नितिन पंजाबी बहुत ही अच्छे पुरुष हैं। पूरा दिन कम्प्यूटर कार्य के पश्चात् हम और श्री सुखदेव शर्मा दोनों शाम को बड़वानी के लिए बस से प्रस्थान किए। बड़वानी इन्दौर से एक सौ पचास किलोमीटर दूर है। रात्रि ग्यारह बजे हम दोनों बड़वानी में महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम पहुँचे। यहाँ आपका एक बेटा प्रितेश शर्मा तथा साथ आपकी धर्मपत्नी अपने पुत्र-पौत्र- पुत्रवधू के साथ रहती हैं। नाम है- श्रीमती दुर्गा शर्मा। पुत्रवधू श्रीमती प्रज्ञा शर्मा। चार माह का पौत्र देवप्रज्ञ। वैदिका, प्रणव, देवप्रज्ञ ये सारे नाम वैदिक नाम हैं। लोगों को इन नामों से प्रेरणा लेनी चाहिए। आज नाम भी विदेशी रखने में लोग गर्व का अनुभव करते हैं। यह भारतीय संस्कृति के साथ बहुत बड़ा छल है। यहाँ पहुँचने पर जो संस्कारयुक्त पारिवारिक वातावरण राऊ में देखने को मिला था वही वातावरण यहाँ भी देखने को मिला। पहुँचते ही सबने वैदिक अभिवादन नमस्ते से स्वागत किया। चार माह का देवप्रज्ञ देवपुत्र ही लगा। दादीजी देवपुत्र का लालन कर रही थीं। यह सौभाग्य आज के परिवेश में बहुत कम देखने को मिलता है। एकल परिवारों में तो बच्चों को दादी-दादा का प्यार ही नहीं मिलता। फिर वे बच्चे मशीनी मानव के रूप में तैयार होते हैं।

रात्रि शयन के पश्चात् अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के साथ यज्ञ-सत्संग के आयोजन में भाग लिया। आश्रम में लगभग ३५-४० विद्यार्थी माध्यमिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक के दूरदराज के गाँवों के छात्र/छात्रा निवास करते हैं। सभी स्वावलम्बी हैं। अपने हाथ से खाना बनाना, कपड़े साफ करना, कमरे की सफाई, व्यवस्थित स्थान पर जूते-चप्पल, स्वच्छता का ध्यान, सबको अभिवादन करना, अनुशासित ढंग से रहना, परिश्रमपूर्वक पढ़ना, स्वाध्याय, प्रतियोगिता की तैयारी, गरिमापूर्ण वातावरण, एकदम शान्त माहौल- यह सब संस्कार त्याग, व्यवस्था आदरणीय श्री सुखदेवजी शर्मा के अथक परिश्रम, जीवटता, कर्मठता,

जीवनोद्देश्य, त्याग, समर्पण, ऋषि मिशन का संकल्पभाव, वैदिक ज्ञान प्रचार-प्रसार का प्रतिफल है जो इस आश्रम में देखने को मिल सकता है। एक उक्ति है- **'यह मत कहो कि जग में कर सकता क्या अकेला, लाखों में काम करता है सूरमा अकेला।'** श्री शर्माजी पर यह वाक्य पूर्णत: लागू होता है।

आश्रम में साप्ताहिक सत्संग बहुत प्रेरक होता है। उन बच्चों पर वैदिक संस्कार डाले जाते हैं। उनके साथ शर्माजी का पूरा परिवार यज्ञ में सम्मिलित होता है। परिवारजनों को यज्ञ के सारे मंत्र कंठस्थ हैं। कभी-कभी सम्बन्धी व अन्य लोग भी यज्ञ में भाग लेते हैं। श्री शर्माजी ने बच्चों को बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती के अवसर पर आश्रम में दोनों समय दैनिक यज्ञ प्रारम्भ कर दिया जाएगा और महीने में एक बार किसी बाहर के विद्वान् को बुलाकर प्रवचन की व्यवस्था की जाएगी। उनका यह संकल्प मुझे बहुत अच्छा लगा। उन विद्यार्थियों के मध्य सत्संग करके मेरी सारी थकान दूर हो गई। बच्चों को प्रतिदिन सन्ध्या करना सिखाया जाता है। श्री शर्माजी के परिवार में अतिथि यज्ञ होता है। सभी साथ में भोजन मन्त्र भी बोलते हैं। अतिथि सत्कार में कोई कमी नहीं रखते।

नर्मदा नदी के सान्निध्य में सतपुड़ा पहाड़ियों के मध्य स्थित बड़वानी आदिवासी बहुल क्षेत्र है। इन पहाड़ियों का दृश्य बड़ा मनोरम लगता है। श्री शर्माजी ने वाहन के द्वारा मुझे उन पहाड़ियों की कुछ मनोरम झाँकी दिखाई जहाँ एक स्थल पर पहाड़ को काटकर भगवान आदिनाथ की मूर्ति उकेरी गई है। जो बहुत ही विशाल और भव्य है। वहाँ दूर-दूर से सैलानी आकर दृश्यावलोकन करते हैं। इसी के साथ उन्होंने नर्मदा नदी का दर्शन कराया। यह प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण है। आसपास शस्य श्यामला खेतों में फसलें मन को मुग्ध करती हैं। आसपास की भूमि बहुत उपजाऊ है। यहाँ हर फसलें पैदा होती हैं।

आर्यों का आचरण, व्यवहार, चरित्र, बातचीत लोगों के मध्य विशिष्ट पहचान बनाते हैं। श्री सुखदेवजी शर्मा इसके एक उदाहरण हैं। अल्पसमय में आपने अपने कुछ रिश्तेदारों के घर ले जाकर परिचय कराया। वे आपको देखकर श्रद्धा से अभिभूत हो गए। उनमें हैं- भांजी निर्मला शर्मा। कैलाश शर्मा, चंचल, योगिता, सतीश, दीपक, बरखा, जितेन्द्र, बच्चे- दक्ष, सौम्या। सालाश्री जगदीश शर्मा ने एक प्रेमिल व्यवहार और श्रद्धाभाव प्रकट किया। सबसे मिलकर बहुत हर्ष का अनुभव हुआ। आपने अपने आर्यत्व की छाप सबके मध्य छोड़ी है। आज स्थिति यह है कि बच्चों को बताना पड़ता है कि ये आपके पद में क्या लगते हैं, परिचय कराना पड़ता है किन्तु आर्य श्री सुखदेव शर्मा ने सगे-सम्बन्धियों में एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

वापसी में दिनांक ७.०१.२०२४ को राऊ-इन्दौर पुन: आपके पुत्र गजेश, नितिन के आवास पर आए और घर के सभी लोग पंक्तिबद्ध होकर साथ-साथ सन्ध्या किए। हमारी बस रात्रि दस बजे थी। हम ९ बजे बस स्टॉप पर पहुँच गए। श्री शर्माजी का प्रेमिल स्वभाव बहुत ही श्लाघनीय है। वे मेरे पास तब तक बैठे रहे, जब तक कि बस वहाँ से प्रस्थान नहीं कर गई। अतिथि के प्रति इस श्रद्धाभाव को देखकर हृदय और मन गद्‌गद् हो गया। मैं काफी देर तक सोचता रहा कि इतनी सर्दी में आप अपने आवास पर कैसे पहुँचे होंगे? खाली समय में आप केवल वैदिक चर्चा करते रहे। **'वैदिक संसार'** पत्रिका को और कैसे उत्कृष्ट बनाया जाए- विचार-विमर्श करते रहे। विशेषांक के बारे में काफी चर्चा करने को मिली। आपका प्रेमोपहार, मिलनसारिता, श्रद्धाभाव, स्नेहिल व्यवहार चिरस्मरणीय रहेगा। वास्तव में आर्यजनों के साथ रहना स्वर्गिक आनन्द प्रदान करता है। आपमें अपने कार्य के प्रति एक समर्पण भाव है। ईश्वर के ऊपर अटूट विश्वास है। बहुत ही परिश्रमशील है। आप महीने में २२ दिन भ्रमण ही करते रहते हैं और फिर भी थकते नहीं हैं। बड़वानी और इन्दौर के बीच १५० किलोमीटर की दूरी है। इतनी दूरी तय करके हर महीने पत्रिका का प्रकाशन हँसी-खेल का काम नहीं है। रहते हैं बड़वानी में, पत्रिका छपती है इन्दौर में। वहीं से डाक द्वारा प्रेषण का कार्य। अकेला व्यक्ति। काम इतना बड़ा। यह सब श्री सुखदेवजी शर्मा की कर्मठता, जीवटता का प्रतीक है। मैं श्री शर्माजी को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद देता हूँ। आप इसी प्रकार शतश आयु तक कार्य करते रहें। परमपिता परमात्मा आपको शक्ति, सुस्वास्थ्य प्रदान करता रहे। ■

बाल परिशिष्ट

तुम भारत हो कहलाओ

पुष्पा शर्मा

मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

दृढ़ निश्चय धारण कर मन में,
तुम लक्ष्य पा जाओगे।
पर्वत भी रोकेगा पथ,
न पीछे कदम हटाओगे।
सोना तप कर कुन्दन बनता,
तुम को भी तपना होगा।
कष्टों पर भारी पड़ने को,
बस आगे बढ़ना होगा।
पानी ऊपर बेल को जैसे,
कोई नहीं डुबा पाया।
जड़ से उखाड़ दी कुरीतियाँ,
दयानन्द वह कहलाया।
लाल-पाल-बाल देश के,
तुम भी ऐसे वीर बनो।
जगत् शीश झुकाए तुमको,
तुम ऐसे रणधीर बनो।
तुम तो भारत के बेटे हो,
आगे-आगे बढ़ते जाओ।
लक्ष्य चूमे कदम तुम्हारे,
मुकुट विजय का तुम पाओ।
ध्रुव तारा ज्यों चमके नभ में,
तुम भी ऐसा यश पाओ।
माँ के दूध की लाज बचाना,
तुम भारत हो कहलाओ।

वैदिक संसार द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी के बालक-बालिकाओं एवं परिजनों की अविस्मरणीय ऐतिहासिक टंकारा यात्रा

ईश्वर कृपा से सम्पूर्ण मानव जाति को ईश्वर की वाणी वेदज्ञान का अमृतपान करवाने हेतु अवतरित महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के २०० वें जन्मदिवस पर उनके जन्मस्थान टंकारा, जिला राजकोट (गुजरात) में आयोजित **'ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन'** दिनांक : १० से १२ फरवरी २०२४ तक में भाग लेने हेतु महाराष्ट्र और गुजरात राज्य की सीमा पर स्थित मध्यप्रदेश के सुदूर सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों की तलहटी में एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की योग शिक्षा और तपःस्थली पावन सलिला नर्मदा के तटीय क्षेत्र में बसा बड़वानी जिला मुख्यालय रियासतकालीन नगर है और सम्पूर्ण जिला मैदानी और पर्वतीय क्षेत्र में विस्तृत रूप से दूर-दूर तक फैला हुआ है यह सम्पूर्ण जिला कृषक तथा वनवासी (आदिवासी) बाहुल्य जिला होकर सम्पूर्ण जिला रेलवे तथा आर्य समाज के मानचित्र पर नहीं होकर औद्योगिक और आर्थिक दृष्टि से अति पिछड़ा हुआ जिला है। जहाँ पर विधर्मियों द्वारा भोले-भाले शोषित-पीड़ित वर्ग का धर्मान्तरण निर्बाध गति से जारी है। इस बड़वानी जिले के जिला मुख्यालय पर मेरे द्वारा संचालित **'महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी'** के ३० विद्यार्थी, मेरे परिवार के १५ सदस्य व मेरी प्रेरणा से इस आयोजन में भाग लेने वाले १० अन्य स्नेहीजनों सहित कुल ५५ सदस्यों ने भाग लेकर अपने जीवनकाल का अविस्मरणीय इतिहास रचा। जिनमें सबसे कम आयु का मेरा पाँच मास का सुपौत्र देवप्रज्ञ और सबसे अधिक ७६ वर्ष वय की मेरठ निवासी सुश्री आदर्श आर्या है, जिन्हें उनकी टंकारा जाने की प्रबल भावना पूर्ति हेतु पहले ही मैं अपने साथ बड़वानी आश्रम पर ले आया था। बड़वानी से टंकारा पहुँचने वाले सदस्य तीन तूफान वाहनों से टंकारा और अन्य स्थानों से पहुँचने वाले सदस्य रेल मार्ग से राजकोट तक दिनांक १० को प्रातः पहुँचे।

आश्रम के समस्त बालक-बालिका गणवेश, गायत्री मन्त्र दुपट्टा, टोपी और परिचय पत्र पाकर प्रफुल्लित थे। बड़वानी से जाने वाले सदस्यों ने दिनांक ९ को दोपहर तीन बजे संसार का श्रेष्ठतम कर्म देवयज्ञ भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष कमलनयन जी इंगले तथा वरिष्ठ समाजसेवी नारायणराव जी दासौंधी के मुख्य यजमानत्व में तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री आशीष जी लश्कन जिला प्रचारक बड़वानी, केशवजी चौहान सेवा भारती में पूर्णकालिक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक जिला संघ चालक भगवान जी सेप्टा, डॉ.सुहाष जी यादव, जिला सामाजिक समरसता प्रमुख (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) मनीष जी जैमन, हीरालाल यादव जिला गोसेवा प्रमुख, श्रीमती आशा डावर प्रान्त सह महिला प्रमुख वनवासी कल्याण परिषद, श्री अजीत जी जैन वरिष्ठ समाज सेवी, श्री जगदीशजी मुकाती (जड़ी-बूटी) और भी अनेक गणमान्य महानुभावों की गरिमामय उपस्थिति में सम्पन्न किया गया। देवयज्ञ पश्चात् एक सभा का आयोजन नारायणराव जी दासौंधी की अध्यक्षता तथा भाजपा जिलाध्यक्ष इंगले जी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। सभा के प्रारम्भ में गायत्री मन्त्र पट्टिका पहनाकर व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित कालजयी अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की स्थूलाक्षर प्रति भेंटकर उपस्थित गणमान्य महानुभावों का सम्मान किया गया। उपस्थित महानुभावों ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द

ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन में वैदिक संसार विशेषांक का विमोचन किया गया

वैदिक संसार मासिक पत्रिका के समस्त पाठकों और मेरे अभिन्न स्नेहीजनों के लिए गर्व तथा हर्ष का विषय है कि परमपिता परमेश्वर की महती तथा असीम कृपा से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २०० वें जन्मदिवस पर भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के मुख्य आतिथ्य में दिनांक १० से १२ फरवरी २०२४ तक आयोजित **'ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन'** के द्वितीय दिवस ११ फरवरी को भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी के वर्चुअल प्रेरणादाई उद्बोधन के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय सुरेशचन्द्र जी आर्य, राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष ठाकुर विक्रमसिंह जी, वर्तमान काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, लगभग शतायु अवस्था के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, गुरुकुल होशंगाबाद के कुलाधिपति स्वामी ऋतस्पति जी, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय प्रकाश जी आर्य के करकमलों से आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों एवं गणमान्य पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति व सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने से पधारे आर्य महानुभावों की प्रत्यक्ष साक्षी में सम्पन्न हुआ।

इस ऐतिहासिक विलक्षण अवसर पर मेरे साथ टोपी लगाए हुए इस विशेषांक के वेद मन्तव्य चित्र कल्पनाकार वैदिक संसार पत्रिका के कर्मठ कर्मयोगी सम्पादक भाई ओमप्रकाश जी आर्य भी दिखाई दे रहे हैं।

इस विशेषांक के समस्त ज्ञात-अज्ञात सहयोगियों को हार्दिक-हार्दिक बधाई, धन्यवाद।

सरस्वती जी के द्वारा सनातन धर्म-संस्कृति की रक्षार्थ तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला एवं विद्यार्थियों को प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रदान करते हुए टंकारा यात्रा हेतु शुभकामनाएँ प्रदान की। सभा का समापन टंकारा जाने वाले सदस्यों के द्वारा प्रस्थान से पूर्व नगर भ्रमण (रैली) हेतु सभा अध्यक्ष व मुख्य अतिथि के द्वारा अपने करकमलों से ओ३म् व तिरंगा ध्वज प्रदान कर रैली को प्रस्थान किया गया। रैली में सम्मिलित सदस्य बड़वानी नगर के प्रमुख मार्गों से **'जो बोले सो अभय-सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय,' 'ओ३म् का झण्डा-ऊँचा रहे,' 'आर्य समाज-अमर रहे', 'कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्', 'देश को स्वतन्त्र कराने को-ऋषि दयानन्द आए थे, विधवा विवाह रचाने को-ऋषि दयानन्द आए थे', 'देव दयानन्द जी की- जय'** आदि उद्घोष लगाते हुए तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जीवन परिचययुक्त **'टंकारा चलो'** आमन्त्रण के प्रकाशित प्रचारपत्रक जनसामान्य को वितरित करते हुए चल रहे थे। रैली का समापन दयानन्द आश्रम पर पहुँचकर किया गया। पश्चात् वाहनों में सवार होकर सदस्यों ने टंकारा के लिए प्रस्थान किया।

'ज्ञान ज्योति पर्व महासम्मेलन' में वैदिक संसार द्वारा प्रकाशित विशेषांक का विमोचन भी किया जाना प्रस्तावित था। अतः विशेषांक प्रतियों के प्रदर्शन व विक्रयार्थ मेरे द्वारा रु. ४२०० अग्रिम जमाकर दो स्टॉल पंजीकृत करवा लिए गए थे। विशेषांक प्रतियों को इन्दौर से चलने वाली बसों से राजकोट पूर्व में भेज दिया गया था। राजकोट से विशेषांक की प्रतियों को टंकारा लाना था जिनका वजन लगभग २५ क्विंटल था। इन प्रतियों को टंकारा लाने व रेलमार्ग से आने वाले परिजनों को टंकारा लाने, आवास व स्टॉल आदि की व्यस्तता के कारण दिनांक १० को यज्ञ किया जाना सम्भव नहीं हो पाया। सायंकाल को संध्योपासना सभी सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप में पुस्तक बाजार में आवण्टित वैदिक संसार के स्टॉल पर की गई। टंकारा यात्रा की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु दो नवीन यज्ञ कुण्ड की व्यवस्था पूर्व से कर ली गई थी तथा यज्ञ का सम्पूर्ण सामान पात्र , सामग्री, घृत आदि यहाँ तक कि समिधाएँ भी अपने साथ बड़वानी आश्रम से साथ लाई गई थीं।

दिनांक : ११ व १२ को प्रातःकाल सभी सदस्यों ने संध्योपासना व देवयज्ञ किया व सायंकाल सामूहिक संध्योपासना करने के साथ आयोजन की मुख्य अतिथि भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी जी मुर्मू, गुजरात राज्य के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी, भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री नरेन्द्रभाई मोदी (वर्चुअल), पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के प्रमुख योग गुरु बाबा रामदेव जी एवं आर्य जगत् के अनेक मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचनों , भजनों के लाभ के साथ विविध गतिविधियों, प्रदर्शनियों का अवलोकन कर आयोजन की मधुर स्मृतियों को अपने मानस पटल पर अंकित कर अपने जीवनकाल का स्वर्णिम इतिहास रचा। यहाँ यह बता देना भी आवश्यक होगा कि आश्रम के सभी बालक-बालिका तथा अनेक स्नेहीजनों के लिए आर्य समाज के किसी आयोजन में भाग लेने का यह प्रथम अवसर था। ये सब मेरे सम्पर्क में आने से पूर्व महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से पूर्णरूपेण अनभिज्ञ थे।

दिनांक : १२ को विशेषांक की बची हुई प्रतियों का व्यवस्थापन व सभी सदस्यों को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का अवलोकन करवाकर रात्रि १०:०० बजे हमने टंकारा से नर्मदा नदी पर बने विशालकाय बाँध सरदार सरोवर परियोजना (नवागाम) के लिए प्रस्थान किया।

प्रातःकाल सरदार सरोवर से कुछ पहले गरुड़ेश्वर स्थित स्टॉप डैम के नीचे हम सभी ने नर्मदा नदी में स्नान किया तथा नदी के तट पर स्थित दत्त मन्दिर के परिसर में बैठकर संध्योपासना की। वहाँ से हम **'स्टैचू ऑफ यूनिटी'** का अवलोकन करने के लिए गए। स्टैचू ऑफ यूनिटी का विशाल परिसर, संग्रहालय तथा नर्मदा नदी के मध्य भारत के प्रथम गृहमन्त्री लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की विशालकाय लौह प्रतिमा का दृश्यावलोकन करना सभी सदस्यों विशेषकर बालक-बालिकाओं के लिए अद्भुत तथा रोमांचकारी रहा। वहाँ से लौटने के पश्चात् एकतानगर स्थित एस.आर.पी. के कैण्टीन में सबने भोजन ग्रहण किया और जिन्हें रेल मार्ग से यात्रा करना थी उन्होंने बड़ौदा के लिए और जिन्होंने बड़वानी जाना था उन्होंने बड़वानी के लिए प्रस्थान किया।

पाठकों को अवगत करवाना चाहूँगा कि आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य रामनिवास जी गुणग्राहक जी द्वारा सायंकालीन मन्त्रों की आहुतियाँ प्रातःकाल देने से मना करने पर दोनों समय यज्ञ करने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी और वैदिक संसार के जनवरी अंक पृष्ठ १५ पर संकल्प व्यक्त किया गया था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २००वें जन्मदिवस से बड़वानी आश्रम पर दोनों समय यज्ञ और प्रतिमास प्रथम शनिवार सायंकालीन सत्र व प्रथम रविवार प्रातःकालीन सत्र किसी अन्यत्र स्थान से पधारे आर्य महानुभाव के आतिथ्य एवं बड़वानी नगर के किसी गणमान्य महानुभाव के मुख्य यजमानत्व में **'मासिक अतिथि यज्ञ'** आयोजित किया जावेगा। मेरे इस संकल्प पूर्ति में सहायक बने वें बालक-बालिका जो परीक्षा, स्वास्थ्य आदि कारणों से टंकारा नहीं जा पाए थे। प्रभु कृपा से बड़वानी आश्रम पर दोनों समय का यज्ञ प्रारम्भ होकर आश्रम निवासरत बालक-बालिकाएँ निष्ठापूर्वक अनवरत यज्ञ-संध्योपासना कर रहे हैं। यह भी प्रभु की असीम तथा महती कृपा है कि ५५ सदस्य यात्रा दल की लगभग १५०० किलोमीटर की यात्रा निर्विघ्न सकुशल सम्पन्न हुई। सम्पूर्ण यात्रा व्यय **'इदं न मम'** की भावना के साथ मेरे द्वारा वहन किया गया।

मासिक अतिथि यज्ञ भी प्रारम्भ

वैदिक संसार पत्रिका के जनवरी मास के अंक के पृष्ठ १५ पर व्यक्त संकल्पानुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम बड़वानी पर ईश्वर कृपा से दोनों समय देवयज्ञ महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस १२ फरवरी से हमारी अनुपस्थिति में आश्रम के बालक-बालिकाओं द्वारा प्रारम्भ कर दिया गया था तथा प्रथम मासिक अतिथि यज्ञ मार्च मास के प्रथम शनिवार २ मार्च व प्रथम रविवार ३ मार्च को आर्य समाज संयोगितागंज (छावनी), इन्दौर के धर्माचार्य प्रणवीर जी शास्त्री के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमती संगीता मुकाती (अध्यापिका), बड़वानी के मुख्य यजमानत्व में प्रारम्भ किया गया। मासिक अतिथि यज्ञ के साथ सुपौत्र देवप्रज्ञ का अन्नप्राशन संस्कार भी सम्पन्न किया गया। समस्त उपस्थित श्रद्धालुजनों की दोनो समय भोजन व्यवस्था आश्रम की ओर से की गई। संयोगवश मैं प्रान्तीय सभा की बैठक भोपाल में गया होने से इस मासिक अतिथि यज्ञ में भी अनुपस्थित रहा। **(चित्र देखें पृष्ठ १९ व २१ पर)**

जांगिड ब्राह्मण समाज समिति गाँधीधाम द्वारा वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को 'जांगिड गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया

अथर्ववेद के उपवेद अर्थवेद (शिल्पशास्त्र) के प्रणेता, जांगिड समाज के आराध्य देव भगवान् श्री विश्वकर्माजी का जयन्ती महोत्सव माघ सुदी त्रयोदशी तदनुसार दिनांक २२ फरवरी २०२४ को अत्यन्त हर्षोल्लास व समारोहपूर्वक मनाया गया। जयन्ती की पूर्व संध्या पर भजन संध्या आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रतिवर्ष की भाँति संसार के श्रेष्ठतम कर्म देवयज्ञ के द्वारा प्रातःकाल वैदिक मन्त्रों के साथ इन्द्रजीत शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री सुखदेव जी शर्मा व अन्य स्थानीय यजमानों ने सपत्निक आहुतियाँ प्रदान की।

भगवान् श्री विश्वकर्मा की पूजा अर्चन गुणानुवाद के पश्चात् १०:३० बजे वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि के करकमलों के द्वारा ध्वजारोहण से किया गया। प्रदेशसभा गुजरात के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल जांगिड की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथियों में मुख्य अतिथि श्री सुखदेव जी शर्मा, प्रकाशक : वैदिक संसार (मासिक पत्रिका) इन्दौर एवं संचालक : महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम-बड़वानी, विशिष्ट अतिथि श्री वाचोनिधि आर्य (प्रधान : आर्यसमाज गांधीधाम एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डीएवी पब्लिक स्कूल), डॉ. रमेश जांगिड (डीएमओ रेलवे अस्पताल कच्छ), विशेष अतिथि श्री विजयराज जांगिड (ज़िलाध्यक्ष कच्छ), श्री खीमचन्द जांगिड (पूर्व ज़िलाध्यक्ष) एवं परामर्शदाता श्री इन्द्राराम जांगिड, श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, श्री नारायण लुंजा, श्री दुर्गाराम कुलरिया आदि महानुभावों का ट्रस्ट अध्यक्ष श्री गुरुदत्त जांगिड एवं कार्यकारिणी द्वारा स्वागत-सम्मान किया गया। महिला मण्डल अग्रणी श्रीमती विमलादेवी शर्मा व स्व. नेमीचन्द की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष देवी, पं. सुखदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा देवी जी जो उनके द्वारा किए जा रहे सेवा कार्य में सहभागी रहती है एवं आपके साथ पधारी आपकी भानजी श्रीमती निर्मला शर्मा व जयेष्ठ सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा का सम्मान महिला कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। जयन्ती उत्सव में महाप्रसाद के लाभार्थी श्री रौनक़ नेमीचन्द जी को साफ़ा पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुखदेवजी शर्मा के साथ खरगोन (म.प्र.) से पधारे आनन्दीलालजी राजोतिया भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

अध्यक्ष श्री गुरुदत्त शर्मा ने स्वागत उद्बोधन व संस्था का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसमें महिला मण्डल, युवा मण्डल सहित संस्था द्वारा आयोजित वर्षभर किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने **'जांगिड समाज भवन'** के भूतल के निर्माण व उसमें उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी, जिसमें भवन निर्माण में योगदान देने वाले सभी दानदाताओं का धन्यवाद भी किया। साथ ही समाज भवन के प्रथम तल पर हॉल निर्माण की आवश्यकता बताते हुए समाज बन्धुओं से सहयोग की अपील की।

बाल वक्ता कु. संध्या आर्य (गढवी) का प्रवचन आध्यात्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर दिए गए ओजस्वी उद्बोधन ने उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया, जिसकी सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। गांधीधाम समाज ट्रस्ट की ओर से स्व. भगवानदत्त जी जांगिड की स्मृति में वर्ष २००२ से दिया जाने वाला २१वॉं **'जांगिड गौरव पुरस्कार'** समाज के जाने-माने वरिष्ठ समाजसेवी, बड़वानी (म.प्र.) निवासी व पिछले १२ वर्षों से मासिक पत्रिका **'वैदिक संसार'** का इन्दौर से सफल प्रकाशन करने वाले श्री सुखदेव जी शर्मा को सादर भेंट किया गया। बहुत ही गरिमामय वातावरण में माला, साफ़ा, शॉल, रजत मण्डित **'जांगिड गौरव'** प्रतीक चिह्न व सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। सभा मण्डप में उपस्थितजनों ने खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट से आदर सहित शुभकामनाएँ व्यक्त की।

इस अवसर पर अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए श्री सुखदेव जी ने कहा कि मैंने सेवा कार्य करते हुए कभी सम्मान की चाह नहीं रखी है। भव्य समारोह की सराहना करते हुए कहा कि आपने आज मेरा सम्मान **'जांगिड गौरव पुरस्कार'** से करके जो मान सम्मान दिया है उसके लिए में संस्था का हृदयपूर्वक धन्यवाद करता हूँ।

विशिष्ट अतिथि श्री आचार्य वाचोनिधि ने पं. सुंखदेव शर्मा द्वारा निःस्वार्थ भाव से जांगिड समाज और आर्यसमाज के क्षेत्र में की जा रही उत्कृष्ट समाज सेवा की प्रशंसा करते हुए उनके विषय में विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही उन्होंने जांगिड समाज गांधीधाम द्वारा निर्मित भव्य समाज भवन और कार्यकर्ताओं के संगठन भाव की सराहना की। **संस्था द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'श्रेष्ठ कार्यकर्ता' पुरस्कार इस बार युवा कार्यकर्ता 'श्री मुकेश हस्तीमल जांगिड' को प्रदान किया गया।**

कार्यक्रम अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड ने सभा को सम्बोधित करते हुए पं. सुखदेव जी शर्मा, आचार्य वाचोनिधि आर्य एवं अध्यक्ष गुरुदत्त शर्मा के त्याग और समर्पित सेवाभाव के विषय पर अपनी बात कही। समाजसेवा व संगठन से जुड़े विषय पर बोलते हुए आपने कहा कि साथ मिलकर काम करने का ही परिणाम है कि हम सब गांधीधाम समाज में अच्छे कार्यक्रमों के साथ-साथ एक भव्य भवन निर्माण करने में सफल रहे हैं। संगठन, सहयोग और समर्पण भाव इसी तरह बना रहना चाहिए। आगामी वर्ष की विश्वकर्मा जयन्ती हमारे गांधीधाम समाज का स्वर्ण जयन्ती समारोह होगा, उसको अति भव्य बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरु करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम को सफल बनाने में गांधीधाम युवा मण्डल अध्यक्ष श्री जबराराम सहित पूरी टीम एवं महिला मण्डल कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सामूहिक भोजन प्रसाद के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम बहुत ही सफलतापूर्वक अविस्मरणीय सम्पन्न हुआ।

हरीराम शर्मा
मंत्री : जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट, गांधीधाम गुजरात

(चित्र देखें रंगीन पृष्ठ ३९ पर)

आर्य समाज रावतभाटा द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित

आर्य समाज रावतभाटा ने संस्कृत प्रवेशिका बालिका विद्यालय झालरबावड़ी में १२ फरवरी २०२४ को महर्षि दयानन्द के जीवन पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें माध्यमिक कक्षाओं के १६ विद्यार्थियों ने भाग लिया। उसका परिणाम इस प्रकार रहा- कोमल मेघवाल प्रथम, अंकुश भील द्वितीय, हिमेश तृतीय। तानिया मेघवाल, आरती मेहतर, छोटूराम भील, गुनगुन मेहतर, प्रिया अहीर, सलोनी पांचाल, प्रिया पांचाल, हुसैनी, खुशी गुजरिया, विशाल भील, विशाखा गेंगट, नंदिनी गैंधर, तनीषा पांचाल सांत्वना पुरस्कार के लिए चुने गये। कोमल मेघवाल को गोल्ड मेडल, अंकुश भील को सिल्वर मेडल, हिमेश को ब्रांज मेडल से सम्मानित किया गया। शेष सभी विजेताओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। पुरस्कार पाकर विद्यार्थियों के खुशी का ठिकाना नहीं रहा। महर्षि दयानंद सरस्वती के २०० वें जन्मोत्सव व आर्य समाज के १५०वें स्थापना वर्ष पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रमों की श्रृंखला में रावतभाटा में राजकीय बालिका प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय में छात्र/छात्राओं की निबन्ध प्रतियोगिता कराई गई थी। आर्य समाज रावतभाटा के मंत्री तथा कार्यक्रम के संयोजक ओमप्रकाश आर्य ने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन, समाज सुधार, कृतित्व, योगदान, बहुआयामी व्यक्तित्व, सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य आदि विविध विषयों पर बच्चों ने निबन्ध लिखे। पुरस्कार वितरण आर्य समाज रावतभाटा के प्रधान विनोद कुमार त्यागी व कोषाध्यक्ष जीपी शर्मा जी ने किये। आर्य समाज रावतभाटा के प्रधान विनोद कुमार त्यागी ने मैडल पहनाए व सभी विजेताओं को उपहार भेंट किए। इस अवसर पर विद्यालय के कमलेश राठौर, जितेन्द्र मीना, ललिता गोयर, अंतिम कुमार सुथार, कन्हैया लाल सेन उपस्थित रहे। प्रधानाचार्या बरजी अहीर ने आर्य समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। ✍ **ओमप्रकाश आर्य**

वैदिक विद्वान् श्री नेतराम शास्त्री आर्य सत्यार्थी की पुण्यतिथि पर देवयज्ञ सत्संग का आयोजन सम्पन्न

आर्य जगत् के प्रख्यात् वैदिक विद्वान् पूर्व प्रधान श्री नेतराम शास्त्री आर्य समाज होडल दानरुद पलवल (हरियाणा) की पुण्यतिथि पर दिनांक १७ जनवरी सन् २०२४ बुधवार को देवयज्ञ (हवन) एवं सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात:काल ९ बजे देवयज्ञ श्री सोहन शास्त्री होडल (पलवल) ने सम्पन्न कराया तथा यजमान की भूमिका श्री हेमदत्त शास्त्री तथा श्रीमती किरणदेवी आर्या ने निभाई। इस समय श्री नेतराम शास्त्रीजी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी आर्या व अन्य परिजनों तथा उपस्थित व्यक्तियों ने यज्ञ में श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन महिला आर्य समाज की यशस्वी प्रधान श्रीमती शशि चौहान आर्या की अध्यक्षता में किया गया। इस समारोह को सर्वप्रथम आर्य जगत् के प्रकाण्ड वैदिक विद्वान्, ओजस्वी कवि, कुशल वक्ता, भजनोपदेशक पण्डित नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य बहीन (पलवल) हरियाणा ने सम्बोधित करते हुए कहा-

''जो मानव संसार में करते अच्छे काम।
वे कर जाते हैं अमर, अपना नाम।।
भला इसी में सज्जनों, जपो ओ३म् का नाम।
वेदों के पथ पर चल करो धर्म का काम।।''

अर्थात् यह मानव चोला हमें परमात्मा ने बड़े शुभ कर्मों से दिया है। ईश्वर ने हमें संसार में भलाई करने के लिए भेजा है, इसलिए हमें परोपकारी, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा बनकर भले काम करने चाहिए तथा अपना सुरदुर्लभ जीवन सफल करना चाहिए। श्रीयुत आचार्य पण्डित नन्दलाल निर्भय ने बताया कि श्री नेतराम शास्त्रीजी ख्याति प्राप्त विद्वान्, समाजसेवी, धर्मात्मा, ईश्वरभक्त, देशभक्त, परोपकारी थे। वे एक निरभिमानी गुरुभक्त तथा गरीबों के मददगार थे। ईश्वर की व्यवस्थानुसार उन्हें किसी धर्मात्मा परिवार में मनुष्य का जन्म मिला होगा। उनकी धर्मपत्नी शान्तिदेवी व उनका पूरा परिवार निरन्तर वेदपथ पर चलता रहे और यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करता रहे, मेरी परमात्मा से यही प्रार्थना है। प्रभु इस परिवार पर पूरी कृपाकर कल्याण करें।

श्री भद्रसेन सचदेव प्रधान आर्य समाज होडल, श्री नरेन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज होडल ने भी विचार रखे। श्रीमती शशि चौहान ने श्री नेतराम शास्त्री को एक सच्चा आर्य बताते हुए कहा कि उनकी धर्मपत्नी शान्ति देवी व उनका पूरा परिवार आर्य समाज का दीवाना है। परमात्मा ऐसे परिवार लाखों में पैदा करे, जिससे संसार का कल्याण हो। श्री हेमदत्त आर्य ने पण्डित नन्दलाल निर्भय से समय-समय पर होडल आने की प्रार्थना की तथा सदैव वेदमार्ग पर चलने का वचन दिया। शान्तिपाठ के पश्चात् समारोह सम्पन्न हुआ।

✍ **गोपाल आर्य**
कोषाध्यक्ष आर्य समाज होडल, जनपद पलवल (हरियाणा)

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को 'जांगिड गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३७ पर

आचार्य इन्द्रजीत जी के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ में आहुति प्रदान करते दैनिक अग्निहोत्री सुखदेव शर्मा व अन्य यजमानगण।

ओ३म् ध्वजत्तोलन करते वैदिक संसार प्रकाशक सुखदेव शर्मा एवं उपस्थित समाजजन।

मंचस्थ सर्वश्री मोहन जी, सुखदेव शर्मा, आचार्य वाचोनिधि जी, डॉ. रमेश जी इन्द्राराम जी, विजयराज जी, खीमचंद जी एवं बालिका सन्ध्या गढ़वी

जांगिड गौरव पुरस्कार प्रदान करते जांगिड ब्राह्मण समाज समिति गाँधीधाम के अध्यक्ष गुरुदत्त जी, जिला अध्यक्ष विजयराज जी, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष मोहन जी एवं वरिष्ठ समाजजन।

आयोजन में वृहद संख्या में उपस्थित जांगिड ब्राह्मण समाज महिला मण्डल गाँधीधाम की सदस्याएँ।

जांगिड ब्राह्मण समाज युवा मण्डल गाँधीधाम के सदस्य सुखदेव शर्मा के सम्मान में अपनी भागीदारी प्रदान करते हुए।

इस अवसर पर उपस्थित सुखदेव शर्मा की धर्मपत्नी, सुपुत्री तथा भानजी का सम्मान जांगिड ब्राह्मण समाज गाँधीधाम की मातृशक्ति द्वारा किया गया।

सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता के रूप में सम्मानित युवा कार्यकर्ता मुकेश हस्तीमलजी जांगिड

बालिका सन्ध्या गढ़वी का ओजस्वी उद्बोधन

भुज से पधारे कान्तिभाई आर्य का सम्मान करते पूर्व जिलाध्यक्ष खीमचन्द जी

आचार्य वाचोनिधि जी उद्बोधन प्रदान करते हुए।

समाज समिति अध्यक्ष गुरुदत्त जी शर्मा संस्था का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए।

आभार प्रकट करते हुए सुखदेव शर्मा।

अध्यक्षीय उद्बोधन प्रदान करते मोहन जी जांगिड।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ ● सम्पादक : ओमप्रकाश आर्य ● डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

रचनाकार बन्धुओं! स्व. माणिकराव जी भोसले स्मृति-विशेषांक के लिए सामग्री भेजिए

आर्यसमाज रामनगर, लातूर (महाराष्ट्र)-४१३५३१ के संस्थापक, कोषाध्यक्ष, वैदिक साहित्य के विक्रेता, गांधी टोपियों के प्रसिद्ध व्यापारी, अन्तर्जातीय विवाह मण्डल रेणापुर, जिला-लातूर के संस्थापक-सचिव श्री माणिकराव जी भोसले का गत वर्ष ५ मई २०२३ को ९६ वर्ष की आयु में वृद्धावस्था के कारण निधन हुआ।

ऐसे सेवाभावी समाजसेवी व्यक्तित्व की स्मृतियाँ स्थाई रूप में विद्यमान रहने के लिए महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा का मुखपत्र 'वैदिक गर्जना' का मई, २०२४ का अंक 'स्व. माणिकराव भोसले गौरव स्मृति-विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत विशेषांक के लिए उनके जीवन-कार्य को प्रकाशित करने वाले लेख, स्मृतियाँ, विशेष प्रसंग इत्यादि प्रकार की सामग्री अपेक्षित है। अतः उनके सम्पर्क में आए संन्यासी, विद्वान्, सामान्य व्यक्ति, आर्ष साहित्य प्रकाशक, वैदिक सामग्री के विक्रेता, मित्रादि से विनम्र निवेदन है कि वे अपने लेख, घटना-प्रसंग की स्मृतियाँ आदि प्रकार का साहित्य भेजकर इस विशेषांक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें।

लेखों के अपेक्षित विषय

१. उनका जन्म शिरसी, ता. लातूर में १९२८ में हुआ। पिता का असमय निधन होने के कारण परिवार की पूरी जिम्मेदारियाँ निभानी पडीं। पूरा जीवन कष्टप्रद रहा।
२. उनके द्वारा लातूर के कापड गली में विविध दुकानों में की गई नौकरियाँ।
३. नौकरी छोड़कर अपने दोनों पुत्रों को साथ लेकर गाँधी टोपियों का स्वतन्त्र व्यवसाय शुरू किया।
४. साळे गली, लातूर में स्थित कातपुरे मास्टर जी की प्रेरणा से आर्यसमाज के सम्पर्क में।
५. रेणापुर में स्व. रामस्वरूप जी लोखण्डे तथा स्व. सांबाप्पा जी राऊत के सहयोग से अन्तर्जातीय विवाह मण्डल की स्थापना की। इस मण्डल के द्वारा लगभग ४०० विवाह जाति तोड़कर किए और करवाएँ गए।
६. आर्यसमाज रामनगर की स्थापना में सहभाग।
७. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रतिष्ठित सदस्य के रूप में कार्य।
८. वैदिक साहित्य के विक्रय द्वारा आर्यसमाज का प्रचार कार्य।
९. विविध विषयों से सम्बन्धित भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख आदि लगभग ३००० से अधिक कतरनों का संग्रह।
१०. विविध माध्यमों द्वारा किया गया सामाजिक कार्य।
११. २०१२ में दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर अन्तर्जातीय विवाह मण्डल द्वारा प्रचलित जन्मना जातिवाद निर्मूलन के कार्य के लिए सम्मान-पत्र देकर किया गया विशेष सत्कार।

इसके अतिरिक्त आपकी जानकारी के अनुसार कुछ विशेष घटना, प्रसंग, फोटो आदि जो आपके पास हो आप भेज सकते हैं। उपर्युक्त प्रकाशन ३० अप्रैल, २०२४ तक भेजकर सहयोग करें।

साहित्य भेजने के लिए डाक के पते

सम्पादक, वैदिक गर्जना
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज परळी (वैजनाथ),
जिला-बीड़ (महाराष्ट्र)-४३१५१५

ज्ञानकुमार आर्य,
प्रमोद गैस एजेन्सी के पास, सीताराम नगर,
लातूर (महाराष्ट्र)-४१३५३१, मो. ९६२३८४२२४०

ई-मेल : anyanabharya1970@gmail.com, lokhandemultirerviber@gmail.com ● व्हाट्स एप : ९४२०३३०१७८

सूचना : यदि आप संगणक से लेख भेज रहे हैं तो मैटर युनिकोड फॉन्ट में होना चाहिए।

निवेदक : **योगमुनी** (प्रधान- महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा), **राजेंद्र दिवे** (मन्त्री) ९८२२३६५२७२

डॉ. नयनकुमार आचार्य
सम्पादक, वैदिक गर्जना

ज्ञानकुमार आर्य
सह सम्पादक, वैदिक गर्जना

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित